मासिक शिविरा पत्रिका

वर्ष : 63 | अंक : 06 | दिसम्बर, 2022 | पृष्ठ : 56 | मूल्य : ₹20

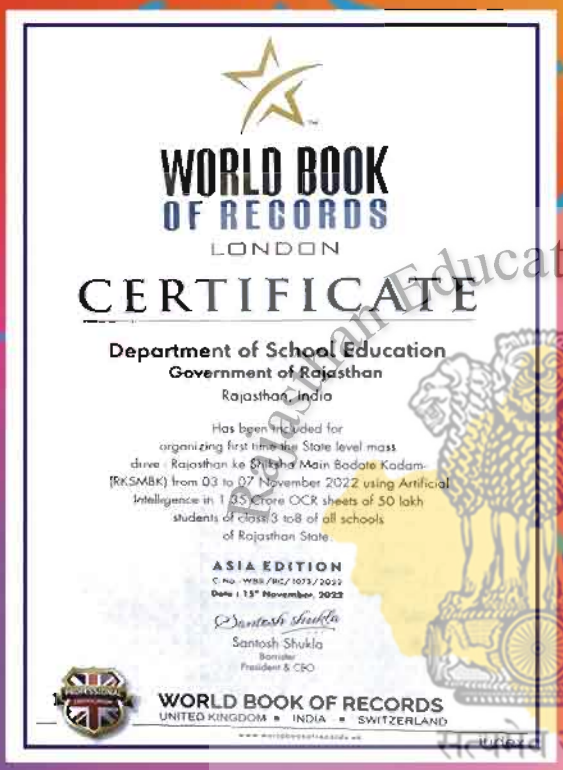

चित्र वीथिका : दिसम्बर, 2022

माननीय शिक्षा मंत्री डॉ.बी.डी कल्ला MGGS मालवीय नगर जयपुर में शतरंज प्रतियोगिता का अवलोकन करते हुए।

श्री पी.के. गोयल अति. मुख्य सचिव (स्कूल शिक्षा), MGGS बर, पाली में RKSMBK का अवलोकन एवं संबलन देते हुए।

श्री पी.के. गोयल अति. मुख्य सचिव (स्कूल शिक्षा) द्वारा प्लास्टिक मुक्त सिक्किम राज्य के उच्च प्राथमिक विद्यालय की विजिट।

श्री पी.के. गोयल अति. मुख्य सचिव (स्कूल शिक्षा) द्वारा शाला क्रीड़ा संगम जोधपुर का अवलोकन।

श्री गौरव अग्रवाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान द्वारा राष्ट्रीय जम्बूरी स्थल पाली का अवलोकन एवं कार्यक्रम की जानकारी लेते हुए।

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा), संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, (पंचायती राज के अधीनस्थ), कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

गीता : कर्म का आधार

श्रीमद्भगवदगीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि कर्म करने में ही तेरा अधिकार है इसमें तू बंधन रहित है फल में तेरा किंचित मात्र भी दावा नहीं है। अतः तू कर्मफल का हेतु मत बन तेरी अकर्म में भी आसक्ति न हो। महात्मा गांधी जी द्वारा कहे गये शब्द Work is worship 'कर्म ही पूजा है' और कर्मशील व्यक्ति ही जीवन में उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर पदारूढ़ होता है, को पंडित जवाहरलाल नेहरु जी भी अनुसरण किया करते थे एवं अपने उद्‌बोधन में भी इस कथन का उपयोग बार-बार किया करते थे।

गीता का संदेश मात्र अर्जुन के लिए नहीं है अपितु मनुष्य जाति के लिए है। हम भी प्रायः मोहजाल में उलझे रहते हैं, सच्चाई के लिए विघ्न बाधाओं का सामना भी हम करते हैं। अक्सर हमारे जीवन में अन्तर्द्वन्द भी चलते रहते हैं। गीता को पढ़ने से हमें सद्‌मार्ग मिलता है, जीवन की समस्याओं का सटीक हल भी मिलता है। यदि गीता की ये बातें जीवन संग्राम में सुनने और समझने का प्रयास करेंगे तो परम आनन्द प्राप्त होगा।

यदि सोच समझ कर कार्य करते हैं तो श्रेष्ठता अपने आप ही मिल जाएगी। जब आप अपना सर्वश्रेष्ठ कर रहे हैं तो निश्चित है, आप पर लोगो का ध्यान जाएगा ही। सफल होने के लिए जरूरी है सही समय पर काम को अंजाम दिया जाए। अनुशासन न होने की स्थिति में हम अपने मार्ग में स्वयं बाधा बन जाते हैं, जीवन में आत्म अनुशासन का अभाव हमारा शत्रु है। अनुशासनहीन व्यक्ति मेहनत एवं मुश्किल काम नही कर सकता। यदि आप आलसी है और आपके जीवन में नियमितता एवं निरंतरता नहीं है तो आपको किसी शत्रु की आवश्यकता नहीं है, आप स्वयं ही अपने दुश्मन है। सफलता प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है कि जीवन में कुछ संकल्प लेकर, नियम बनाकर पालन कर आगे बढ़ें, सफलता और शोहरत आपके पीछे चली आएगी।

शीत ऋतु के साथ ही एक बार फिर परीक्षाओं का दौर शुरू होने जा रहा है। टेक्नोलॉजी के विकास के साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी बदलाव आया है लेकिन नियमित कक्षाओं का अपना ही महत्त्व है। शिक्षकों को अपना शिक्षण विशेष तैयारी के साथ प्रभावशाली बनाना होगा। अक्सर विद्यार्थी कक्षा में प्रश्न पूछने पर उत्तर देने से कतराते हैं, लेकिन इस परिपाटी में परिवर्तन करते हुए विद्यार्थियों को अधिक से अधिक प्रश्न पूछने का मौका देवें। इससे उनकी अवधारणा स्पष्ट होगी। कक्षा में विद्यार्थियों के समूह बनाएँ, प्रत्येक समूह को एक अध्ययन बिन्दु आवंटित करें, समूह वह बिन्दु/प्रकरण पढ़कर, समझकर आएगा। कक्षा के अन्य विद्यार्थी उसे सुनेंगे, इससे अध्याय बच्चों को याद हो जाएगा, इन प्रयासों से विद्यार्थियों में सामूहिकता की भावना भी विकसित होगी।

कक्षा को दो समूहों में बाँट कर एक समूह को प्रश्न-कर्ता तथा दूसरे समूह को उत्तरदाता की भूमिका दी जा सकती है। किस छात्र को प्रश्न पूछना है तथा किसे उत्तर देना है इसकी पर्ची तात्कालिक तर्ज पर वितरित की जाए। इस extempore व्यवस्था से प्रत्येक छात्र पाठ्यवस्तु के निर्धारण अंश की पूरी तैयारी के साथ उक्त विषय संगोष्ठी (Seminar) में शामिल हो सकेगा। इससे पाठ्य-वस्तु की पुनरावृत्ति हो सकेगी। साथ ही छात्रों की वाग्मिता (eloquence) व आत्म-विश्वास को मजबूती मिलेगी।

प्रत्येक व्यक्ति में विशेष योग्यता होती है। यह जन्मजात भी हो सकती है या विशेष प्रयासों से भी प्राप्त हो सकती है। विद्यार्थियों से मैं कहना चाहूँगा कि अपनी इस मानसिक शक्ति को पहचाने, अपना विश्लेषण स्वयं करें। आराम से न बैठे। निरंतर आगे बढ़ने के लिए मेहनत करे। सफलता के लिए अदम्य जिजीविषा आपके भीतर होनी चाहिए। ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक एवं मानसिक क्षमताएँ दी है। आपको इन्हें और प्रखर करना होगा। व्यक्ति की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह अन्तर्निहित शक्तियों का कितना सदुपयोग करता है।

विद्यार्थियों से मेरा विशेष आग्रह है कि पाठ्यपुस्तकें पढ़ने के साथ-साथ अन्य अच्छी साहित्यिक पुस्तकें भी पढ़े। रेडियो पर अंग्रेजी एवं हिन्दी के समाचार सुनें, समाचार पत्र भी पढ़ें। इससे आपका शब्द व भाषा ज्ञान समृद्ध होगा। प्रतिदिन 2-3 पृष्ठ लिखने से आपके लेख के साथ भाषा का भी सुधार होगा। शब्दों को बेहतर तरीके से उपयोग में लेकर ही आप प्रभावशाली लेखन कार्य कर सकते हैं।

बुलाकी दास कल्ला

(डॉ. बुलाकी दास कल्ला)

> **"शिक्षकों को अपना शिक्षण विशेष तैयारी के साथ प्रभावशाली बनाना होगा। अक्सर विद्यार्थी कक्षा में प्रश्न पूछने पर उत्तर देने से कतराते हैं, लेकिन इस परिपाटी में परिवर्तन करते हुए विद्यार्थियों को अधिक से अधिक प्रश्न पूछने का मौका देवें। इससे उनकी अवधारणा स्पष्ट होगी।"**

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

जाहिदा खान
राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार
शिक्षा (प्राथमिक और माध्यमिक),
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (स्वतंत्र प्रभार)
मुद्रण एवं लेखन सामग्री (स्वतंत्र प्रभार)
कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को समर्पित...

यह शिक्षा विभाग का परम सौभाग्य है कि हमारे साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को समर्पित-दृढ़संकल्पित शिक्षकों, अधिकारियों और कर्मचारियों की ऊर्जावान टीम है जिसका अनुकरणीय उदाहरण गत माह सम्पन्न आरकेएसएमबीके आकलन-I में देखने को मिला। शिक्षा परिवार ने टीमवर्क की बेमिसाल नजीर पेश करते हुए ओसीआर तकनीक के माध्यम से प्रदेश के राजकीय विद्यालयों में कक्षा-3 से कक्षा-8 तक में अध्ययनरत विद्यार्थियों का ऐतिहासिक आकलन सम्पादित किया तथा विद्यार्थियों की ओसीआर की कॉमन चेकिंग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक इस्तेमाल कर दुनियाभर में अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया जो 'वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' में दर्ज हुआ। यह स्कूल शिक्षा विभाग राजस्थान के लिए गौरव की बात है और हमारे लिए बड़ी उपलब्धि है, जो आप सभी के समग्र प्रयासों से ही फलीभूत हुई है। इसके लिए आप सभी का साधुवाद।

वर्तमान शैक्षिक सत्र अपने उत्कर्ष पर है और दिसम्बर माह इस दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि इस माह अर्द्धवार्षिक परीक्षा होनी है। अर्द्धवार्षिक परीक्षा के साथ ही औपचारिक परीक्षाओं का दौर प्रारंभ हो जाता है। परीक्षा एक माध्यम है मूल्यांकन का और मूल्यांकन एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है। हम सब का सदैव यह प्रयास रहे कि हमारे विद्यालयों का शैक्षिक वातावरण इतना आनंदमय हो कि प्रत्येक विद्यार्थी बिना किसी भय और तनाव के न केवल विद्याध्ययन करें अपितु परीक्षाओं में भी अपनी पूर्ण क्षमता के साथ उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सके। इस हेतु आप सभी गुरुजन शिक्षण अधिगम की सुनियोजित कार्ययोजना बनाकर उसे समयबद्ध फलीभूत करें।

गुरुजन शीतकालीन अवकाश में भी विद्यार्थियों को नियोजित तरीके से अध्ययन हेतु प्रेरित करते हुए उचित मार्गदर्शन प्रदान करें जिससे विद्यार्थी अध्ययन से सतत रूप से जुड़े रहें क्योंकि निरन्तर अभ्यास और अध्ययन से ही आत्मविश्वास बढ़ता है एवं नई ऊर्जा मिलती है।

शीतकालीन अवकाश में ही राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) +2 स्तर के विशेष शिविरों का आयोजन होता है, जिनमें विद्यार्थी ''मैं नहीं आप'' के आदर्श को अपनाते हुए शिक्षा के साथ-साथ सेवा के संस्कारों को भी आत्मसात करता है। इन शिविरों में सेवाकार्य करके विद्यार्थी समुदाय के सन्निकट आते हैं एवं सुनागरिक बनकर राष्ट्र सेवा की ओर अग्रसर होते हैं।

दिसम्बर माह में तीर्थंकर पार्श्वनाथ, ईसा मसीह और गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती है। महापुरुषों का जीवन चरित हमें कर्त्तव्य पथ पर निरन्तर अविचल अग्रसर होने की प्रेरणा देता है।

शुभकामनाओं के साथ....

Zahida
(जाहिदा खान)

"हम सब का सदैव यह प्रयास रहे कि हमारे विद्यालयों का शैक्षिक वातावरण इतना आनंदमय हो कि प्रत्येक विद्यार्थी बिना किसी भय और तनाव के न केवल विद्याध्ययन करें अपितु परीक्षाओं में भी अपनी पूर्ण क्षमता के साथ उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सके। इस हेतु आप सभी गुरुजन शिक्षण अधिगम की सुनियोजित कार्ययोजना बनाकर उसे समयबद्ध फलीभूत करें।"

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

गौरव अग्रवाल
आइ.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

वसुधैव कुटुम्बकम्

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

भारत की संसद के मुख्य द्वार पर उत्कीर्ण महा उपनिषद् का संस्कृत वाक्य 'वसुधैव कुटुम्बकम्' आज वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित है। उदारवादी विचारधारा के धारक सभी अपने हैं कोई पराया नहीं है की भावना के आधार पर सम्पूर्ण पृथ्वी को ही एक परिवार मानते हैं। इसी का मूर्त रूप है विश्व एकता दिवस ! सम्पूर्ण पृथ्वी को अपना परिवार मानने की अधुनातन भावना की हमारी अर्वाचीन सनातनी परम्परा के विस्तार रूप में समस्त विश्व द्वारा 01 दिसम्बर को विश्व एकता दिवस के रूप में मनाए जाने पर बधाई !!

विभाग में (RKSMBK) एप के प्रयोग से प्रदेश के कक्षा 3 से 8 तक के लगभग 50 लाख विद्यार्थियों का अंग्रेजी, हिन्दी एवं गणित विषय में दक्षता आधारित मूल्यांकन किया गया। उक्त दक्षता आधारित मूल्यांकन के प्रथम आकलन में करीब 1.5 करोड़ उत्तर पत्रक (OCR Sheets) को शिक्षकों द्वारा एप में अपलोड किया गया। इन उत्तर पत्रकों आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) एप द्वारा जाँच कार्य में वर्ल्ड रिकॉर्ड स्थापित किया है।

माननीय शिक्षा मंत्री को वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डस लंदन के प्रतिनिधि अदिति टाक एवं प्रथम भल्ला द्वारा इस वर्ल्ड रिकॉर्ड का सर्टिफिकेट अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्कूल शिक्षा श्री पी. के. गोयल एवं स्वयं मेरी उपस्थिति में प्रदान करना एक सुखद अनुभूति का विषय है। जिसके लिए सम्पूर्ण शिक्षक समाज को बधाई। शैक्षिक लक्ष्य प्राप्ति के हमारे संकल्प की पूर्ति के लिए द्वितीय चरण का आकलन अब 17 से 20 दिसम्बर तक किया जाएगा। अतः सभी शिक्षक इस कार्य को पूर्व की भाँति निष्ठा के साथ करेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

आपका अपना

(गौरव अग्रवाल)

"इसी का मूर्त रूप है विश्व एकता दिवस ! सम्पूर्ण पृथ्वी को अपना परिवार मानने की अधुनातन भावना की हमारी अर्वाचीन सनातनी परम्परा के विस्तार रूप में समस्त विश्व द्वारा 01 दिसम्बर को विश्व एकता दिवस के रूप में मनाए जाने पर बधाई !!"

Rajasthan Education Department

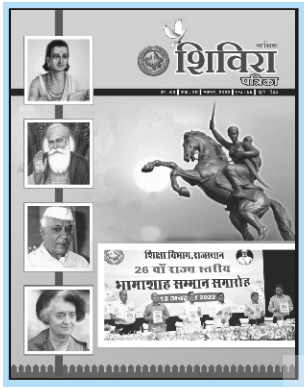

▼ चिन्तन

गौरवं गुरुषु स्नेहं लघुषु प्रेम बन्धुषु।
दर्शयन् विनयी धर्मी सर्वप्रीतिकरो भवेत्।।

-एक विनम्र और सदाचारी व्यक्ति जो अपने से बड़ों के प्रति आदर भाव, छोटों के प्रति स्नेह और अपने परिजनों के प्रति प्रेम भाव रखता है, वह सभी को प्रिय होता है। इसलिए व्यक्ति का व्यवहार सभी के साथ विनम्रता पूर्वक समाज संगत रखना ख्याति व प्रसिद्धि को बढ़ाने वाला होता है।

पाठकों की बात

- नवम्बर-2022 के श्रेष्ठ अंक के लिए समस्त संपादक मण्डल को बधाई। शिविरा पत्रिका में 'बाल शिविरा' पृष्ठ संलग्न करना एक सराहनीय कदम है क्योंकि आज की संतति साहित्य लेखन से दूर होती जा रही है। इस प्रयास से उनकी साहित्य लेखन के प्रति रुचि बढ़ेगी। मेरा अनुरोध है कि इसी भाँति शिक्षक रचनाकारों के लिए भी कुछ पृष्ठ शिविरा पत्रिका के प्रत्येक अंक में नियत किए जाए जिससे शिक्षक रचनाकारों को भी अपनी रचनाओं को अपने विभाग की पत्रिका में प्रकाशित होने का अवसर मिल सकें।

व्यग्र पाण्डे, गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर

- शिविरा नवंबर 2022 आद्योपांत पढ़ा। अर्द्धसदी से शिविरा का नियमित पाठक हूँ। पूर्व काल डाक का इंतजार करते, ना मिलने पर शिविरा के लिए यत्र-तत्र संपर्क कर शिविरा प्राप्त करता व पढ़ता था। आजकल डिजिटल क्रांति ने सब कुछ सहज ही उपलब्ध करवा दिया है। शिविरा के स्थाई स्तंभ- अपनों से अपनी बात, दिशाकल्प, मेरा संदेश, प्रेरक बन पड़े हैं। डॉ. बालोदा ने अपने लेख में महिला हिंसा उत्पीड़न पर वैधानिक जानकारी दी है जो महिला जगत के लिए मार्गदर्शक बन पड़ी है। गौरव अग्रवाल साहब ने शिक्षा में विभिन्न प्रसंगों पर जानकारी देकर मार्गदर्शन किया है। बाल-शिविरा आकर्षक व बालमन के लिए मोहक है। देख रहा हूँ, उत्तरोत्तर अपनी यात्रा में शिविरा हर वर्ष नवाचार कर रहा है। उसके लिए संपादक मंडल को साधुवाद। मैंने पूर्व में भी व पुनः आग्रह कर रहा हूँ कि विभिन्न शिक्षकों की समस्याओं के लिए एक पृष्ठ प्रारंभ किया जाए, निदेशक से या सरकार से सीधी बातचीत जिसमें शिक्षकों की अबूझ समस्याएँ प्रकट हो व उन्हें नई राह मिले। उत्कृष्ट संपादन के लिए शिविरा परिवार को कोटिशः बधाइयाँ।

मोहन राम बिश्नोई भारथानी जैसलमेर

- पत्रिका का माह नवम्बर 22 का अंक ऑनलाइन प्रस्तुत किया गया। अंक में माननीय निदेशक महोदय माध्यमिक शिक्षा का आलेख शिक्षा जीवन की अनवरत प्रक्रिया सुभद्रा व अभिमन्यु का प्रसंग प्रेरणादायी रहा। अध्ययन प्रक्रिया केवल बन्द कमरों तक सीमित नही है! साथ ही यत्र याति शकुन्तला, इला पारीक का आलेख चतुर्थ अंक में शकुन्तला की विदाई के समय ऋषि कण्व का द्रवित होना व पुत्री को ससुराल में बड़ों की सेवा सुश्रुषा का आदेश भारतीय सांस्कृतिक व पारिवारिक संस्कारों को परिलक्षित करता हैं! गुरुनानक देव के प्रकाशपर्व पर अमृतपाल सिंह का धार्मिक आलेख जीवन मे तन को खेत में को हाली बनाकर परिश्रम का पानी लगाकर कृषि करना ईश्वर रूपी बीज बोना सार्थक रहा! एकता की द्योतक इन्दिरा गाँधी पर आलेख हिमांशु सोगानी का लेख गुट निरपेक्ष आंदोलन में महती भूमिका भारतीय नेतृत्व क्षमता को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर परिलक्षित करती हैं! सफलता की कहानी शिक्षक की जुबानी अरुणा बैंस नामांकन अभिवृद्धि खारी चारणान सकारात्मक प्रयास बहुत ही प्रेणादायी रहा। बस्ता मुक्त दिवस डॉ. आजाद सिंह सृजनात्मक कौशल विकास वैज्ञानिक सोच अभिवृद्धि अभिरुचि गतिविधि पूर्ण विविधता पूर्ण मनोरंजन के साथ शिक्षण अधिगम आदि आलेख सार्थक रहे! बाल शिविरा में प्रकाशित निखिल शर्मा जंगल में सभा मानवीकरण का श्रेष्ठ उदाहरण व अन्य संदेश परक महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय केकड़ी अजमेर के बच्चों के संदेश परक चित्र वीथी बहुत अनुकरणीय थी।

गोविन्द नारायण शर्मा, केकड़ी, अजमेर

- शिविरा पत्रिका नवंबर माह 2022 प्राप्त हुई। आवरण पृष्ठ का आकर्षण देखते ही बनता है। माननीय शिक्षा मंत्री जी की अपनों से बात वर्तमान समय ही श्रेष्ठ है, समय की महता और मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। निदेशक महोदय का वैश्विक परिदृश्य में शैक्षिक नवाचार चिंतन की ओर ले जाने वाला है। विभिन्न रचनाकारों के आलेख व विविध रचनाएँ पठनीय थी। अमृतपाल सिंह का आलेख समता, धर्म और नीति के दृष्टांत श्री गुरुनानक देव' भी विशेष था। सभी स्थायी स्तंभ, पठनीय व मनन करने योग्य थे। बाल शिविरा में प्रकाशित सभी रचनाकारों ने छाप छोड़ी है। बालकों की लेखनी व कौशल विकास की दृष्टि से उनको प्रोत्साहित करने में शिविरा पत्रिका सराहनीय है। विभिन्न योजनाओं व विभागीय जानकारियाँ उपलब्ध करवाने के लिए संपादक मंडल का हार्दिक आभार। शिविरा पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति करती रहे ऐसी शुभकामनाएँ।

योगेश कुमार सैन, नागौर

Rajasthan Education Department

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 63 | अंक : 06 | मार्गशीर्ष–पौष २०७९ | दिसम्बर, 2022

प्रधान सम्पादक
गौरव अग्रवाल

वरिष्ठ सम्पादक
सुनीता चावला

सम्पादक
डॉ. संगीता पुरोहित

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
सुचित्रा चौधरी
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक सदस्यता राशि व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चेक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **–वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

अपनों से अपनी बात
- गीता : कर्म का आधार 3

मेरा संदेश
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को समर्पित... 4

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- वसुधैव कुटुम्बकम 5

रपट
- राष्ट्रीय सेवा योजना–2022 9
  डॉ. संगीता पुरोहित
- भुजबल से बुद्धिबल तक....शतरंज 13
  डॉ. संगीता पुरोहित

आलेख
- गुरु गोविन्द सिंह 8
  सुनीता चावला
- उड़ान 14
  शिवशंकर व्यास
- मानव अधिकार 15
  योगेश चन्द्र पारीक
- प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा सीखने के प्रतिफल 16
  डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता
- एड्स : एक विस्फोटक रहस्य 18
  पुरुषोत्तम लाल स्वामी
- ऊर्जा बचाएँ : देश को आगे बढ़ाएँ 19
  विजय लक्ष्मी
- दक्षता आधारित आकलन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग 20
  डॉ. तमन्ना तलरेजा
- समावेशी शिक्षा 22
  मुकेश पालीवाल
- समन्वित शाला दर्पण 34
  पूनमचंद जाखड़
- नोबेल पुरस्कार विजेता भारतीय 36
  सुभाष जोशी
- सफलता की कहानी : शिक्षक की जुबानी 38
  दुर्गाराम मुवाल
- Language Communication at the End of a Lesson 41
  Dr. Ram Gopal Sharma
- A Saga Of Success 43
  Vijay Laxmi Yadav
- केबीसी से शिक्षक तक और शिक्षक से हॉट सीट तक 44
  शोभा कँवर
- विद्यालय विकास के संबंध में 52
  सैयद इनायत अली

स्तम्भ
- पाठकों की बात 6
- आदेश–परिपत्र : दिसम्बर, 2022 23–33
- शिविरा पञ्चाङ्ग : दिसम्बर, 2022 33
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 33
- Telecast Schedule of pm e-vidya 33
- बाल शिविरा 45–46
- शाला प्रांगण से 48
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 50
  डॉ. अनिता आर्य
- हमारे भामाशाह 51

पुस्तक समीक्षा 47
- प्रवाह
  लेखक : देवेन्द्र पण्ड्या
  समीक्षक : पुरुषोत्तम देव पाण्डिया

मुख्य आवरण : **शिव रतन रंगा**

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

गुरु गोविन्द सिंह

❒ सुनीता चावला

देह सिवा बर मोहि इहै
सुम करमन से कबहुं न टरौ।
न हरो अरिसौं जब लाई लरौ
निसचे कर अपनी जीत करौ।।
अरू सिख हो आपने ही मन को
इह लालच हउ गुन वउ उचरौ।
जन आन की अउध निदान बने
अति ही रन में जब जूझ मरौ।।

हे शिवा मैं शुभ कर्मों से विरत न होऊं शत्रु से कभी न डरूँ, जब उससे लड़ूँ तो निश्चय ही स्वयं की जीत करूँ। अपने मन को सदैव शिक्षा देता रहूँ और जब आयु की अवधि समाप्त होने को आए तो धर्म युद्ध में वीरगति को प्राप्त करूँ।

महान शूरवीर तत्वज्ञानी कवि और लेखक सिक्ख समुदाय के दसवें एवं अंतिम गुरु गोविन्द सिंह थे। ये तेग बहादुर एवं माता गुजरी के पुत्र थे। इनका जन्म उन परिस्थितियों में हुआ था जब अकबर द्वारा स्थापित शांति, न्याय, समता पूर्णतया समाप्त हो गयी थी। उनके जीवन पर अध्यात्म, राजनीतिक वातावरण का भी प्रभाव था। अल्पायु में ही उन्होंने अपने पिता गुरु तेग बहादुर को शहीद होते हुए देखा था। बाल्यावस्था में ही उन्हें राजसिंहासन पर आरूढ़ कर गुरुत्तर दायित्व प्रदान किया। मुगलों के अत्याचारों से समाज भयभीत एवं अशांत था। ईश्वर एवं खुदा की निर्मल भावना के स्थान पर पंडित एवं मौलवियों ने आडम्बर से धर्म का मूल स्वरूप ही बदल दिया। जात-पांत, ऊँच-नीच के भेदभाव से समाज का माहौल दूषित था।

लेकिन इस काल में भी सिक्खों की रीति व्यवस्था प्रभावशाली एवं अनुशासित थी। सिक्ख गुरुओं का प्रभाव चहुँ ओर व्याप्त था। उनके अनुयायी हर स्थान पर सक्रियता और ईमानदारी से काम कर रहे थे। गुरु गोविन्द सिंह का विचार था कि जो व्यक्ति जीवन में सत्य के साथ है, ईश्वर से प्रेम करता है, संयमित एवं दयावान है, ऐसा व्यक्ति ही खालसा है। उन्होंने समाज को समझाया कि इंसान ईश्वर की संतान है। अच्छे और नेक कार्यों के लिए ही उसका जन्म हुआ है। वे मानते थे कि व्यक्ति को यह विश्वास हो जाए कि वह ईश्वर का प्रतिनिधि है तो यह आस्था व्यक्ति को नेक शख्सियत बनाने का अटूट आश्वासन है। गुरु जी ने यह सम्बलन अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक शख्स एवं संगत को दिया। उनकी इस भावना का आम लोगों ने स्वागत किया लेकिन कुछ वर्ग विशेष के लोगों ने इसका प्रतिरोध भी किया।

गुरु गोविन्द सिंह जी के जन्म के साथ आरंभ दीक्षा संस्कार खालसा की स्थापना के साथ आरंभ हुआ। यह ईमानदार एवं स्वच्छ जीवन जीने का वादा है, जो कि दीक्षित व्यक्ति स्वयं को वाहे गुरु यानि सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रति समर्पित होता है। बैसाखी के ऐतिहासिक दिन गुरु ने केसगढ़ साहिब में जनसमुदाय को संबोधित किया और कहा कि जो समाज के लिए अपना बलिदान देने के लिए तैयार है वो आगे आए। यह ललकार परीक्षा थी इसमें लौहार के दयाराम, द्वारका का मोहकमचंद, जगन्नाथ पुरी का हिम्मतराय, नीदर के साहबचंद, हस्तिनापुर के धर्मराज सफल हुए। इन्हें गुरु जी ने पंज प्यारे कहकर सम्मानित कर उन्हें दीक्षित किया साथ ही उनसे विनम्र आग्रह किया कि वे भी उन्हें दीक्षित करें।

गुरु गोविन्द सिंह ने सभी को मजहब, जाति का भेदभाव मिटाने का उपदेश देकर राष्ट्र प्रेम की भावना से भर दिया। उन्होंने अपने आध्यात्मिक विचारों को काव्यात्मक लहजे में व्यक्त किया। गुरु जी की काव्य रचनाओं का संग्रह 'दशम ग्रन्थ' में समाहित है।

सिक्ख सम्प्रदाय के प्रथम 9 गुरु निर्गुण निराकार ईश्वर के उपासक है। उन्होंने ईश्वर के किसी भी अवतार को नहीं माना है। यही धारणा, विचार अद्वैतवाद सिद्धान्त है। जिसमें परमात्मा और जीवात्मा को एक ब्रह्म ही अंतिम सत्य कहा है। जीव ब्रह्म का ही रूप है। ब्रह्म और ईश्वर एक है।

गुरु गोविन्द सिंह ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए युद्ध चित्रण में व्यजंना शब्द शक्ति का उपयोग किया है। गुरु गोविन्द सिंह की मातृभाषा पंजाबी थी। उनके शिष्य संभवतः पंजाबी भाषी ही होंगे। उन्हें फारसी भाषा का भी बहुत अच्छा ज्ञान था। उस युग में समस्त राजकार्य फारसी भाषा में होते थे। उन्होंने अनेक कविताओं की रचना बृज भाषा में की।

गुरु गोविन्द अपने पंथ की आध्यात्मिक परम्परा के दसवें उत्तराधिकारी थे। अलग-अलग श्रद्धालु आकर सिक्ख गुरुओं के आध्यात्म ज्ञान का लाभ लिया करते थे। उनके समय में सिक्ख पंथ राजनीतिक रूप में आ चुका था, लेकिन परिवर्तन का यह प्रवाह आकस्मिक नहीं था। जैसे-जैसे देश की जनता पर मुगलों का अन्याय बढ़ता गया वैसे-वैसे सिक्ख पंथ का स्वरूप भी बदलता गया। छठें गुरु हरगोविन्द सिंह ने शाहजहां की सेना से युद्ध किया। यहाँ गीता के चौथे अध्याय के सातवें श्लोक को स्मरण करना भी समीचीन होगा।

यदा यदा ही धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युथानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जब-जब इस पृथ्वी पर धर्म की हानि होती है, अधर्म बढ़ जाता है, तब-तब मैं इस पृथ्वी पर जन्म लेता रहूँ। गुरु गोविन्द सिंह का जन्म इस श्लोक को प्रमाणित करता है। मुगलों के समय सनातन धर्म के जीवन मूल्य एवं मानवता का ह्रास हो रहा था, भारतीय संस्कृति का हरण हो रहा था। ऐसे समय में धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के लिए गुरु जी का अवतरण हुआ। वे आध्यात्मिक एवं धार्मिक संत थे एवं इसके साथ-साथ वे कुशल योद्धा भी थे। जब उन्होंने मुगलों की दमन नीति से मासूम निरीह जनता पर अत्याचार होते देखा तो इस मार्मिक परिदृश्य से उद्वेलित हो गए। उनके गुरु पिता गुरु तेग बहादुर भी मुगलों का प्रतिरोध करते हुए शहीद हो गए थे। वो स्वयं भी देश धर्म की रक्षा के लिए इस राह पर बढ़ते गए।

गुरु गोविन्द सिंह ने अपने जीवन में पहाड़ी राजाओं एवं मुगलों से 14 युद्ध किए। यह युद्ध किसी स्वार्थ या लालच के लिए नहीं वरन् अन्याय एवं अत्याचार के विरूद्ध थे। अपने पिता, चार पुत्रों एवं स्वयं का बलिदान देकर देश में धर्म एवं मानवता की रक्षा की। आज भी गुरु गोविन्द सिंह के उपदेश, वाणी हमारे जीवन में ज्ञान की रोशनी से मार्ग प्रशस्त कर रही है। हमारे भीतर आत्मविश्वास एवं शक्ति का संचार कर रही है।

वरिष्ठ संपादक 'शिविरा'
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

रपट

राष्ट्रीय सेवा योजना-2022

❒ डॉ. संगीता पुरोहित

वर्तमान में भारत ही नहीं वैश्विक परिप्रेक्ष्य में नैतिक और सामाजिक मूल्यों से सम्पृक्त ऐसी युवा पीढ़ी की आवश्यकता है जो समाज में व्याप्त वैषम्य को समाप्त कर वसुधैव कुटुम्बकम की भावना का विस्तार करते हुए साम्य स्थापित कर सके। इसी भाव की पुष्टि स्वरूप भारत में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जन्म शताब्दी वर्ष 1969 में सत्य, अहिंसा आधृत उनकी विचारधारा को पोषित करने वाली संस्था राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) का गठन किया गया। इस संस्था का उद्देश्य है कि जाति, धर्म, वर्ग, संप्रदाय के भेद से ऊपर उठकर मानवीयता के गुणों को सर्वोपरि रखते हुए मानव मात्र 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' का भाव रखे।

राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) संगठन की मूल चेतना स्वयं से पहले समुदाय को महत्त्व देती है। 'नॉट मी बट यू' इस एक वाक्य में संगठन की आत्मा की झलक मिलती है कि व्यक्ति अपने स्वार्थ से उपर उठकर समाज हित में सोचें। उपर्युक्त आदर्श वाक्य लक्ष्य और उद्देश्य को सार्थक करते हुए एक ऐसे सशक्त सेवा भावी राष्ट्र प्रेम से ओत प्रोत युवा पीढ़ी को तैयार करता है जिनके साहसिक, सामाजिक एवं रचनात्मक कार्य आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा पुंज का कार्य करें। आरम्भिक दौर में यह योजना केवल महाविद्यालय में ही लागू थी। वर्तमान में राष्ट्रीय सेवा योजना को 1990 से उच्च माध्यमिक विद्यालयों में प्रारम्भ किया गया था, जिसका फैलाव आज 903 विद्यालयों के लगभग 73500 स्वयं सेवकों के माध्यम से पूरे राजस्थान में है। प्रसन्नता की बात है कि 34200 छात्राएँ इस कार्यक्रम के माध्यम से सामाजिक सहयोग में अपना योगदान दे रही हैं।

शिक्षा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति स्वयं सेवक सम्मान समारोह का आयोजन 09 नवम्बर 2022 को रवीन्द्र रंगमंच बीकानेर में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला शिक्षा विभाग (प्राथमिक एवं माध्यमिक) संस्कृत शिक्षा, कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व पंचायती राज के अधीनस्थ प्राथमिक शिक्षा विभाग (स्वतंत्र प्रभार) राजस्थान सरकार थे। समारोह में संभागीय आयुक्त बीकानेर श्री नीरज के. पवन, जिलाधीश बीकानेर श्री भगवती प्रसाद कलाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री गौरव अग्रवाल, अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा

श्रीमती रचना भाटिया, श्री एस. पी. भटनागर

क्षैत्रीय निदेशक भारत सरकार युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, क्षेत्रीय निदेशालय राष्ट्रीय सेवा योजना जयपुर, राजस्थान, श्री धर्मेन्द्र सिंह राज्य संपर्क अधिकारी राजस्थान सरकार श्री योगेश चन्द्र शर्मा, उपनिदेशक (प्रशासन) माध्यमिक शिक्षा उपस्थित थे।

कार्यक्रम का आरंभ महारानी राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय बीकानेर की बालिकाओं द्वारा अतिथियों के सम्मान में मुख्य द्वार से कार्यक्रम स्थल तक सुन्दर रंगोली बनाकर किया गया। तत्पश्चात् मुख्य द्वार पर आगन्तुकों का कुंकुम अक्षत से तिलक कर परम्परागत रूप से स्वागत किया गया। समस्त मंचासीन अतिथियों ने माँ सरस्वती की आराधना करते हुए दीप प्रज्वलन किया।

निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री गौरव अग्रवाल ने स्वागत करते हुए एन.एस.एस. के समाज हित में किए जाने वाले कार्यों का उल्लेख किया। श्री गौरव अग्रवाल ने कहा कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्व विद्यालय अनुदान आयोग ने शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य समन्वय विकसित करने और सकारात्मक सोच के उद्देश्य की पूर्ति हेतु राष्ट्रीय सेवा योजना की स्थापना की। अत: ''मैं नहीं आप'' की मूल भावना के अनुसार समस्त प्रभारी अध्यापक अपने स्वयं सेवकों को

स्वावलम्बी बनाते हुए 07 दिवसीय प्रशिक्षण के माध्यम से किए जाने वाले श्रम दान को समाज के विभिन्न वर्गों के सहयोगार्थ उपयोग में लेने की भावना को विकसित करते हुए आगे बढ़े।

इस वर्ष विभाग द्वारा सत्र 2021-22 के 206 स्वयं सेवकों को जिनमें अतिरिक्त जि.शि.अ.-07, कार्यक्रम अधिकारी-48, प्रधानाचार्य-41, स्वयंसेवक-100 है जिन्हें राज्य स्तरीय स्वयं सेवक सम्मान समारोह में सम्मानित किया गया। व्यक्ति का हित समग्र रूप से समाज के हित पर निर्भर रहता है। अत: दैनिक जीवनचर्या में स्वयं से पहले समाज को स्थान दिया जाना चाहिए। इसी परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय सेवा योजना विवरणिका का विमोचन किया गया। तत्पश्चात् सम्मानित मंच द्वारा पोस्टर विमोचन किया गया।

कार्यक्रम में उपस्थित संभागीय आयुक्त बीकानेर श्री नीरज के. पवन ने स्वयं सेवकों का मनोबल बढ़ाते हुए कहा कि सामाजिक सहयोग एवं सेवा कार्यों की राह आसान नहीं है। इस कार्य के सम्पादन में आपके मार्ग में अनेक प्रकार की बाधाएँ आएँगी पर आप दिग्भ्रमित न होकर लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित कर आगे बढ़ते रहें। आपको भीतर से बाहर की ओर विकसित होना है यदि आप इसे स्वीकार कर लेगें तो सच मानिए! आपका व्यक्तित्व तो खिलेगा ही साथ ही साथ मन की शान्ति भी महसूस करेंगे। कार्यक्रम में श्री एस. पी. भटनागर ने निस्वार्थ भाव से अपने साथ साथ परिवार और समाज को आगे बढ़ाने की प्रेरणा स्वयं सेवकों को दी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला ने स्वयं का उदाहरण देते हुए कहा कि वे स्वयं एन.एस.एस. विद्यार्थी के रूप में कॉलेज समय में कार्य कर चुके हैं। माननीय शिक्षा मंत्री ने बताया कि एक एन.एस.एस. विद्यार्थी द्वारा 120 घंटे श्रमदान

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

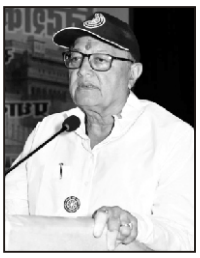

अपेक्षित है। यह श्रमदान समाज के उस वर्ग के लिए भी आवश्यक है जो मूलधारा से छूटे हुए हैं। श्रमदान विद्यालय स्तर पर सफाई, पानी, पेड़ पौधे अन्य संसाधनों की पूर्ति एवं प्राप्ति के माध्यम से किया जा सकता है। माननीय ने कहा कि ''अपने लिए जिए तो क्या जिए, तू जी ए दिल जमाने के लिए''। माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने विवेकानन्द के आदर्श वाक्य का प्रयोग करते हुए कहा कि ''उठो जागो और तब तक मत रूको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए'' राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों को जाति, धर्म, वर्ग, संप्रदाय से आगे बढ़ते हुए देश की एकता के लिए कार्य करना है। राष्ट्र धर्म का पालन करते हुए अनेकता में एकता के बीज स्थापित करना है। भारतीय संस्कृति की आत्मा में व्याप्त मूल मंत्र–

अष्टादश पुराणेषु, व्यासस्य वचनम् द्वय,
परोपकाराय पुण्याय, पापाय परपीड़नम्

को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक आश्रित/निराश्रित का ध्यान रखना है क्योंकि संसार में परोपकार से बड़ा पुण्य नहीं है और दूसरे को कष्ट देने से बड़ा पाप नहीं है। तभी तो महाकवि तुलसी ने कहा था–

परहित सरिस धर्म नहीं भाई,
परपीड़ा सम नहीं अधमाई

माननीय शिक्षा मंत्री ने स्वयं सेवकों को प्रेरित करते हुए कहा कि वे मन्दिर–मस्जिद गुरुद्वारों से आगे बढ़कर मानव मात्र के लिए कार्य करते हुए मानव धर्म का पालन करें। हमारे देश की जनसंख्या को देखते हुए हमें उत्पादन, खेल, तकनीक, स्वास्थ्य के क्षेत्र में श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए आगे बढ़ना है। मेरी कामना है कि भारत विश्व पटल पर अपने प्रत्येक कार्य में प्रथम स्थान पर रहे।

तत्पश्चात् स्वयं सेवकों को सम्मानित मंच द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया जिनमें–

सम्मानित किए गए अति. जिला शिक्षा अधिकारी गण

1. श.फ.ब. अंजुम, कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) मा.शि., बाँसवाड़ा
2. जेतमाल सिंह राठौड, कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) मा.शि., बाड़मेर
3. डॉ. मनीषा शर्मा, कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) मा.शि., दौसा
4. श्री सतेन्द्र प्रकाश राजपुरोहित, कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) मा.शि., पाली
5. श्री एजाज अली, कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) मा.शि., सवाईमाधोपुर
6. श्रीमती सीमा चौधरी, कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) मा.शि., सीकर
7. श्री चौथमल चौधरी, कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) मा.शि., टोंक

सम्मानित किए गए प्रधानाचार्य गण

1. श्रीमती बीनू मेहरा, रा.बा.उ.मा.वि. सावित्री, अजमेर
2. श्री जयवर्द्धन सिंह, रा.उ.मा.वि. खरवा अजमेर
3. श्रीमती मंजू बैरवा, रा.उ.मा.वि. नीमला, राजगढ़, अलवर
4. श्रीमती मधुबाला, रा.उ.मा.वि. भजेडा, रैणी, अलवर
5. श्री कौशल किशोर पंवार, करणी रा.उ.मा.वि. देशनोक, बीकानेर
6. श्रीमती नाजिमा अजीज, शहीद मेजर जेम्स थॉमस रा.उ.मा.वि., बीकानेर
7. श्रीमती माया सेमसन, प्रधानाचार्य, महात्मा गाँधी रा.वि., खांदू कॉलोनी, बाँसवाड़ा
8. श्रीमती चन्द्रिका शर्मा, रा.बा.उ.मा.वि. चन्द्रपोल गेट, बाँसवाड़ा
9. श्री गिरीशचन्द्र जोशी, रा.उ.मा.वि. करजी, बाँसवाड़ा
10. श्री कैलाश कुमार जाटोल, रा.उ.मा.वि. बालोतरा बाड़मेर
11. श्री कमल सिंह राणीगाँव, मु.छा.रा.उ.मा.वि. गाँधी चौक, बाड़मेर
12. डॉ. श्यामलाल खटीक, रा.उ.मा.वि. राजेन्द्र मार्ग, भीलवाड़ा
13. श्रीमती निरूपमा शर्मा, रा.उ.मा.वि. अरनेठा, बूँदी
14. श्री मोहम्मद अशफाक गौरी, रा.उ.मा.वि. बरूँधन, बून्दी
15. मोहन कुमार सोनी, रा.उ.मा.वि. जानवा, चूरू
16. श्री पूर्णाराम माहिच, रा.उ.मा.वि. जोड़ी, चूरू
17. श्री मदनलाल शर्मा, रा.उ.मा.वि. कालाखोह, दौसा
18. श्री विश्वजीत सिंह, रा.उ.मा.वि. रामसिंहपुर, श्रीगंगानगर
19. श्रीमती अनिता शर्मा, सेठ राधा किशन बिहाणी, रा.बा.उ.मा.वि. हनुमानगढ़ टाउन, हनुमानगढ़
20. श्रीमती स्नेहलता गाबा, ग्रामोत्थान विद्यापीठ बालिका उ.मा.वि., संगरिया हनुमानगढ़
21. श्रीमती सीमा झाम्ब, रा.बा.उ.मा.वि., पीलीबंगा, हनुमानगढ़
22. श्री जयप्रकाश राघव, श.मे.दि.सु. रा.उ.मा.वि. खातीपुरा, जयपुर
23. श्री पवन कुमार जाट, रा.बा.उ.मा.वि. शाहपुरा, जयपुर
24. अजय कुमार गुप्ता, श्री माहेश्वरी सी.सै. स्कूल, तिलकनगर, जयपुर
25. कालाराम दादालियन, रा.उ.मा.वि. पाउली जालोर
26. श्रीमती संजीदा परवेज, रा.उ.मा.वि. भिलवाड़ी, झालावाड़
27. श्री गिरिराज किशोर मीणा, रा.उ.मा.वि. सिलेहगढ़ भरतपुर
28. श्रीमती वीणा पुरोहित, श्री रामस्वरूप गणेशीदेवी चिल्का, रा.बा.उ.मा.वि., शास्त्रीनगर, जोधपुर
29. श्रीमती प्रतिभा शर्मा, महात्मा गाँधी रा.वि. जालौरी गेट, जोधपुर
30. श्रीमती सीमा जादौन, रा.बा.उ.मा.वि. मोहन नगर, करौली
31. श्रीमती वन्दना जैन, रा.बा.उ.मा.वि. दादाबाड़ी, कोटा
32. श्री बसन्त कुमार परिहार, श्री बागड़ रा.उ.मा.वि., पाली
33. श्री श्रवण कुमार, रा.उ.मा.वि. चण्डावल नगर, पाली
34. श्री प्रभुदास वैष्णव, रा.उ.मा.वि. अवलेश्वर, प्रतापगढ़
35. श्रीमती ओमप्रभा आर्य, महात्मा गाँधी रा.वि., साहूनगर, सवाईमाधोपुर
36. श्री राजेश कुमार अंकुर, रा.उ.मा.वि. श्रीमाधोपुर सीकर
37. श्रीमती अल्का, रा.उ.मा.वि. दातारामगढ़ सीकर
38. श्री ईश्वरलाल पुरोहित, महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, जावाल, सिरोही
39. श्री भंवर लाल कुम्हार, रा.उ.मा.वि. दुनी, टोंक
40. श्री राकेश कुमार अजमेरा, रा.उ.मा.वि. लाम्बाहरिसिंह, मालपुरा, टोंक
41. श्रीमती प्रीति शर्मा, रा.बा.उ.मा.वि. भूपालपुरा, उदयपुर

सम्मानित किए गए कार्यक्रम अधिकारी गण

1. श्रीमती सीमा शर्मा, रा.बा.उ.मा.वि. सावित्री, अजमेर
2. श्रीमती कीर्ति जैन, रा.उ.मा.वि., हाथीखेड़ा, अजमेर
3. श्री माधव बिहारी दास गुप्ता, रा.उ.मा.वि. किशनगढ़बास, अलवर

Rajasthan Education Department

4. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मीना, रा.उ.मा.वि. ततारपुर अलवर
5. श्रीमती कीर्ति श्रीमाल, रा.बा.उ.मा.वि. चन्द्रपोल गेट, बाँसवाड़ा
6. श्री राकेश चन्द्र शर्मा, रा.उ.मा.वि., छीपाबडौद, बारां
7. श्री बींजाराम सुथार, रा.उ.मा.वि. भीमथल, धोरीमन्ना बाड़मेर
8. श्री बंशीलाल, रा.उ.मा.वि. बालोतरा बाड़मेर
9. श्रीमती वेणु पाठक, रा.बा.एस.बी.के. उ.मा.वि., भरतपुर
10. श्री नन्द किशोर जोशी, रा.उ.मा.वि. प्रतापनगर, भीलवाड़ा
11. श्री मुरलीधर मेघवाल, करणी रा.उ.मा.वि. देशनोक, बीकानेर
12. श्रीमती इन्द्रा शर्मा, गीता देवी बागड़ी रा.बा.उ.मा.वि., नापासर, बीकानेर
13. श्री शिवांगी दाधीच, रा.उ.मा.वि. पेच की बावड़ी बूँदी
14. श्रीमती मीना कुमारी मीणा, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. अरनेठा बूँदी
15. श्री सुभाष चन्द्र, रा.उ.मा.वि. साहवा, तारानगर चूरू
16. श्री कुलदीप सिंह, राउ.मा.वि. घणाउ, राजगढ़, चूरू
17. श्री पुष्पेन्द्र कुमार मीणा, रा.उ.मा.वि. कालाखोह दौसा
18. श्रीमती धर्मेश्वरी देवी, रा.बा.उ.मा.वि. अनूपगढ़, श्रीगंगानगर
19. श्रीमती तरूणा स्वामी, सेठ राधा किशन बिहाणी रा.बा.उ.मा.वि. हनुमानगढ़ टाऊन, हनुमानगढ़
20. श्रीमती पुष्पा वर्मा, श्रीमती जानकी देवी पेड़ीवाल रा.बा.उ.मा.वि., नोहर, हनुमानगढ़
21. श्रीमती नीलम रानी, रा.बा.उ.मा.वि. पीलीबंगा हनुमानगढ़
22. श्री सन्तरा रोलानिया, रा.बा.उ.मा.वि. शाहपुरा, जयपुर
23. श्री राजेश कुमार गोयल, रा.उ.मा.वि. आमेर, जयपुर
24. श्री नेतराम शर्मा, श्री माहेश्वरी सी.सै. स्कूल, तिलकनगर, जयपुर
25. श्री आसिफ इकबाल, रा.उ.मा.वि. पावली, जालोर
26. श्री भोलाराम पाटीदार, रा.उ.मा.वि. झुमकी, झालावाड़
27. श्री सोमेश कुमार सुयन, रा.उ.मा.वि. झालरापाटन, झालावाड़
28. श्रीमती चन्द्रा नायक, श्री रामस्वरूप गणेशीदेवी चिल्का, रा.बा.उ.मा.वि., शास्त्रीनगर, जोधपुर
29. श्री गजेन्द्र पंवार, महात्मा गाँधी रा.वि., जालौरी गेट, जोधपुर
30. श्री विजय सिंह मीना, रा.उ.मा.वि. सूरौठ करौली
31. श्री रामरूप, रा.उ.मा.वि. सपोटरा, करौली
32. श्री महावीर प्रसाद नागर, महात्मा गाँधी रा.वि., मल्टीपर्पज, गुमानपुरा, कोटा
33. श्री शंकर लाल जांगिड़, रा.उ.मा.वि. दीगोद, सुल्तानपुर, कोटा
34. श्री भंवर सिंह, रा.उ.मा.वि. परबतसर, नागौर
35. श्री भंवरलाल, जवाहर रा.उ.मा.वि. कुचामन सिटी, नागौर
36. श्री हरीश व्यास, आ.सु.च. रा.बा.उ.मा.वि. खौड, पाली
37. श्रीमती ममता कुंवर राठौड़, रा.बा.उ.मा.वि. प्रतापगढ़, प्रतापगढ़
38. श्रीमती रमा शर्मा, बाल कृष्ण रा.उ.मा.वि. कांकरोली, राजसमंद
39. श्री रामेश्वरदयाल मीना, रा.उ.मा.वि. बहरावण्डा खुर्द, सवाईमाधोपुर
40. श्रीमती सदरून्निसा, रा.बा.उ.मा.वि., सवाईमाधोपुर
41. श्री सुभाषचन्द्र स्वामी, रा.उ.मा.वि. अजीतगढ़, सीकर
42. श्रीमती संतोष कस्वां, जी.डी. रूईया रा.उ.मा.वि. रामगढ़, शेखावाटी सीकर
43. श्री डासुराम मेघवाल, रा.बा.उ.मा.वि. रोहिड़ा, सिरोही
44. श्रीमती कुसुम सुथार, रा.बा.उ.मा.वि. शिवगंज, सिरोही
45. श्री रसपाल गुर्जर, रा.उ.मा.वि. कोठीनातमाम, टोंक
46. श्री शब्बीर मसूद, रा.उ.मा.वि. मेहन्दवास, टोंक
47. श्री समीर चतुर्वेदी, राजकीय फतह रा.उ.मा.वि. उदयपुर
48. श्रीमती अभिलाषा टाक, व्याख्याता, रा.बा.उ.मा.वि. भूपालपुरा, उदयपुर

सम्मानित किए गए स्वयंसेवक गण

1. दीक्षा जैलिया, राजकीय सावित्री बा.उ.मा.वि., अजमेर
2. वर्षा पंडायत, राजकीय सावित्री बा.उ.मा.वि., अजमेर
3. सुनैना वैष्णव, रा.उ.मा.वि. खरवा, अजमेर
4. वन्दना नौगिया, रा.उ.मा.वि. खरवा, अजमेर
5. ज्योति, श्री रामगोपाल खन्ना रा.बा.उ.मा.वि. स्कीम नं. 02, अलवर
6. आँचल, श्री रामगोपाल खन्ना रा.बा.उ.मा.वि. स्कीम नं. 02, अलवर
7. लखन सिंह, रा.उ.मा.वि. नवीन, अलवर
8. मानव सैनी, रा.उ.मा.वि. नवीन, अलवर
9. दिव्या चौधरी, रा.बा.उ.मा.वि. चन्द्रपोल गेट, बाँसवाड़ा
10. रोहिणी पण्डया, रा.बा.उ.मा.वि. चन्द्रपोल गेट, बाँसवाड़ा
11. सुरेन्द्र कुशवाह, रा.उ.मा.वि. छीपाबड़ौद, बारां
12. रोहित कुशवाह, रा.उ.मा.वि. छीपाबड़ौद, बारां
13. रक्षा, रा.बा.उ.मा.वि., मालगोदाम रोड, बाड़मेर
14. सुरेश कुमार, रा.उ.मा.वि. बालोतरा, बाड़मेर
15. मोहनी चौधरी, रा.उ.मा.वि. भीमथल, बाड़मेर
16. किशनाराम, रा.उ.मा.वि. भीमथल, बाड़मेर
17. अंजली, राजकीय बालिका एस.बी.के. उ.मा.वि., भरतपुर
18. श्रुति शर्मा, रा.बा.एस.बी.के.उ.मा.वि., भरतपुर
19. लवराज तेली, रा.उ.मा.वि. प्रतापनगर, भीलवाड़ा
20. तोली ज्याणी, श्रीमती गीता देवी बागड़ी, रा.बा.उ.मा.वि., नापासर बीकानेर
21. अंशुमान भार्गव, करणी रा.उ.मा.वि. देशनोक, बीकानेर
22. मोहम्मद इब्राहीम, करणी रा.उ.मा.वि. देशनोक, बीकानेर
23. आईना, श्रीमती गीता देवी बागड़ी, रा.बा.उ.मा.वि., नापासर बीकानेर
24. कोमल मीणा, रा.उ.मा.वि. अरनेठा, बूँदी
25. पायल मालव, रा.उ.मा.वि. अरनेठा, बूँदी
26. भावना मीणा, रा.उ.मा.वि. पेच की बावड़ी, बूँदी
27. धर्मराज मीणा, रा.उ.मा.वि. पेच की बावड़ी, बूँदी
28. मनोज चौधरी, रा.उ.मा.वि. साहवा, तारानगर, चूरू
29. कविता रैगर, राजकीय कनोई बा.उ.मा.वि., सुजानगढ़, चूरू
30. मनीषा कस्वां, रा.उ.मा.वि. जोड़ी, चूरू
31. जयदेव जोशी, रा.उ.मा.वि. साहवा, तारानगर, चूरू
32. करिश्मा कुम्हार, रा.उ.मा.वि. महेश्वरा खुर्द, दौसा
33. ज्योति रानी, रा.बा.उ.मा.वि. अनूपगढ़, श्रीगंगानगर
34. मीनू, रा.बा.उ.मा.वि. पीलीबंगा, हनुमानगढ़
35. रूबी जिन्दल, रा.बा.उ.मा.वि. पीलीबंगा, हनुमानगढ़
36. रिचा बंसल, श्रीमती जानकी देवी पेडीवाल रा.बा.उ.मा.वि. नोहर, हनुमानगढ़

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

37. नेहा रानी, श्रीमती जानकी देवी पेडीवाल रा.बा.उ.मा.वि. नोहर, हनुमानगढ़
38. गुंजन, सेठ राधाकिशन बिहाणी, रा.बा.उ.मा.वि., हनुमानगढ़ टाउन, हनुमानगढ़
39. गुरनूर कौर, सेठ राधाकिशन बिहाणी, रा.बा.उ.मा.वि., हनुमानगढ़ टाउन, हनुमानगढ़
40. सुनील कुमार, रा.उ.मा.वि. आमेर, जयपुर
41. राहुल सैनी, रा.उ.मा.वि. आमेर, जयपुर
42. साक्षी नेनावत, रा.बा.उ.मा.वि. शाहपुरा, जयपुर
43. आशा कुम्हार, रा.बा.उ.मा.वि. शाहपुरा, जयपुर
44. मोहित त्यागी, श्री माहेश्वरी सी.सै. स्कूल, तिलकनगर, जयपुर
45. विद्यानन्द महतो, श्री माहेश्वरी सी.सै. स्कूल, तिलकनगर, जयपुर
46. महेन्द्र कुमार, रा.उ.मा.वि. पावली, जालोर
47. सुगन बाई, रा.उ.मा.वि., भिलवाड़ी, झालावाड़
48. सुनील बैरागी, रा.उ.मा.वि., भिलवाड़ी, झालावाड़
49. अंजली मीना, रा.उ.मा.वि. अकलेरा, झालावाड़
50. अनिल भील, रा.उ.मा.वि. अकलेरा, झालावाड़
51. रोहित कुमार, महात्मा गाँधी रा.वि., जालोरी गेट, जोधपुर
52. दिव्यांशी अरोड़ा, रा.बा.उ.मा.वि., राजमहल, जोधपुर
53. गायत्री मेघवाल, श्री रामस्वरूप गणेशीदेवी चिल्का, रा.बा.उ.मा.वि., शास्त्रीनगर, जोधपुर
54. गुड्डी, श्री रामस्वरूप गणेशीदेवी चिल्का, रा.बा.उ.मा.वि., शास्त्रीनगर, जोधपुर
55. मनीष सैन, रा.उ.मा.वि. सपोटरा, करौली
56. अशोक कुमार माली, रा.उ.मा.वि. सपोटरा, करौली
57. सोनू सोनी, रा.उ.मा.वि. सूरौठ, करौली
58. सलौनी कुमारी, रा.उ.मा.वि. सूरौठ, करौली
59. रिद्धम शर्मा, महात्मा गाँधी रा.वि., मल्टीपर्पज, गुमानपुरा, कोटा
60. सोनू मीणा, महात्मा गाँधी रा.वि., मल्टीपर्पज, गुमानपुरा, कोटा
61. सागर मेघवाल, रा.उ.मा.वि. दीगोद, कोटा
62. प्रदीप मेघवाल, रा.उ.मा.वि. दीगोद, कोटा
63. ओमप्रकाश चौधरी, रा.उ.मा.वि. परबतसर, नागौर
64. प्रियंका, श्री ज.गी.दे.बे. रा.उ.मा.वि., पांचला सिद्धा, नागौर
65. महेन्द्र घोसलिया, सेठ किशनलाल कांकरिया रा.उ.मा.वि., नागौर
66. राम अवतार, सेठ किशनलाल कांकरिया रा.उ.मा.वि., नागौर
67. साक्षी परिहार, आ.सु.च. रा.बा.उ.मा.वि. खौड, पाली
68. रोशनी पुच्छल, आ.सु.च. रा.बा.उ.मा.वि. खौड, पाली
69. सुरेन्द्र राठौड़, श्री बागड़ रा.उ.मा.वि., पाली
70. जोगाराम, श्री बागड़ रा.उ.मा.वि., पाली
71. हर्षिता धोबी, रा.बा.उ.मा.वि., प्रतापगढ़
72. रजनी कुमावत, रा.बा.उ.मा.वि., प्रतापगढ़
73. जुली सेन, बाल कृष्ण रा.उ.मा.वि. कांकरोली, राजसमंद
74. सुमित्रा गायरी, बाल कृष्ण रा.उ.मा.वि. कांकरोली, राजसमंद
75. कृष्णा चौधरी, रा.उ.मा.वि. बहरावण्डा खुर्द, सवाईमाधोपुर
76. विंध्याचल जोशी, रा.उ.मा.वि. बहरावण्डा खुर्द, सवाईमाधोपुर
77. सानिया परवीन, रा.बा.उ.मा.वि., सवाईमाधोपुर
78. रूखसार, रा.बा.उ.मा.वि., सवाईमाधोपुर
79. लक्ष्मी सोनी, सावित्री रा.बा.उ.मा.वि. लक्ष्मणगढ़, सीकर
80. गरिमा, ग्रा.शि.सं. शिवसिंहपुरा, सीकर
81. अनिल, रा.उ.मा.वि. श्रीमाधोपुर, सीकर
82. राहुल बरसीवाल, रा.उ.मा.वि. अजीतगढ़, सीकर
83. परमार हिमानी, रा.बा.उ.मा.वि. शिवगंज, सिरोही
84. शोभा कुमारी, रा.बा.उ.मा.वि. शिवगंज, सिरोही
85. तोषिका गौतम, राजकीय महात्मा गाँधी विद्यालय, देवली, टोंक
86. तनिषा जैन, राजकीय महात्मा गाँधी विद्यालय, देवली, टोंक
87. जितेन्द्र रेगर, रा.उ.मा.वि. लाम्बा, हरिसिंह, टोंक
88. आशीष शर्मा, राजकीय फतह रा.उ.मा.वि., उदयपुर
89. प्रतीक निनामा, राजकीय फतह रा.उ.मा.वि., उदयपुर
90. हर्षिता सुथार, रा.बा.उ.मा.वि. भूपालपुरा, उदयपुर
91. नम्रता डाँगी, रा.बा.उ.मा.वि. भूपालपुरा, उदयपुर
92. कविता कुमारी, रा.उ.मा.वि. पावली, जालोर
93. अनुराधा मालव, महात्मा गाँधी रा.वि., छीपाबड़ौद, बारां
94. प्रीति गुजर, महात्मा गाँधी रा.वि., छीपाबड़ौद, बारां
95. रूपनारायण बैरवा, रा.उ.मा.वि. कालाखोह, दौसा
96. अर्चना कुमारी मीना, रा.उ.मा.वि. कालाखोह, दौसा
97. सोनिया पाटीदार, रा.उ.मा.वि. करजी, बाँसवाड़ा
98. पूजा पाटीदार, रा.उ.मा.वि. करजी, बाँसवाड़ा
99. वंदना कविया, रा.उ.मा.वि. लाम्बा हरिसिंह, टोंक
100. कृष्णा धाकड़, रा.उ.मा.वि. प्रतापनगर, भीलवाड़ा

कार्यक्रम के अन्त में श्रीमती रचना भाटिया, अतिरिक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ने समारोह में पधारे अतिथि, शिक्षा मंत्री, अधिकारीगण, सम्मानित स्वयं सेवकों, कर्मचारियों, आयोजकों व अन्य सभी शिक्षकों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने राष्ट्रीय सेवा योजना के ध्येय वाक्य नॉट मी बट यू की भावना को आत्मसात् करते हुए गोद ली गई बस्तियों के निवासियों के साथ सम्पर्क स्थापित कर समाज की आवश्यकता, समस्याओं और उपलब्ध संसाधनों की जानकारी प्राप्त कर निश्चित योजना बनाकर अपनी योग्यता अनुरूप कार्य करने के लिए स्वयं सेवकों को प्रेरित किया। उन्होंने यह भी कहा कि मिलजुल कर कार्य करने की भावना से ही मानवीय गुणों का विकास संभव है।

मंच संचालन श्री दिलीप पड़िहार, श्रीमती प्रीति जयलापिया, सहायक निदेशक एवं श्री मदन मोदी, सहायक प्रशासनिक अधिकारी माध्यमिक शिक्षा, निदेशालय, बीकानेर ने किया। कार्यक्रम की रूपरेखा के निर्धारण में प्रभारी अधिकारी श्री आशीष रामावत का सहयोग रहा।

सहायक निदेशक
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

रपट

भुजबल से बुद्धिबल तक....शतरंज

❐ डॉ. संगीता पुरोहित

राजस्थान के इतिहास में शिक्षा विभाग का एक और स्वर्णिम दिवस! नवम्बर 2022 में माह का तीसरा शनिवार माध्यमिक और प्राथमिक विद्यालयों में 'नो बेग डे' के स्थान पर 'चेस डे' के रूप में मनाया गया। शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला के नेतृत्व में शिक्षा विभाग शतरंज संघ के सम्मिलित प्रयासों से मात्र एक दिन में राजस्थान के 36 लाख 13 हजार 169 विद्यार्थियों ने 54977 विद्यालयों में शतरंज के बक्सों में बन्द पड़े शतरंज के प्यादों को चाले चलने का आदेश दिया।

10 नवम्बर 2022 को माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, संभागीय आयुक्त नीरज के पवन, महेश शर्मा अध्यक्ष, स्थायी लोक अदालत, बीकानेर, श्री शंकर लाल हर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आरबीटर, अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा, रचना भाटिया, सुरेन्द्र सिंह भाटी, जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर ने सरस्वती प्रतिमा के समक्ष माल्यार्पण कर मशाल प्रज्वलित कर राज्य में होने वाली शतरंज प्रतियोगिता का आरम्भ

किया। अतिरिक्त निदेशक श्रीमती रचना भाटिया ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम का संक्षिप्त परिचय दिया।

पौराणिक काल से ही पासों (चाल चलने का उपकरण) का खेल मे महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। महाभारत काल में शकुनि के पासे महाभारत के युद्ध की पृष्ठभूमि का प्रमुख आधार थे। इस काल में पासे भाग्य पर निर्भर थे। महाभारत काल की चतुरंगिनी सेना के व्यूह रचना के आधार पर इस खेल का नाम चतुरंग अथवा चौसर पड़ा। किन्तु छठी शताब्दी तक आते आते यह खेल अष्टपद में बदल गया। जिसका मूल कारण था गुप्त साम्राज्य के शासकों की महत्ती अभिलाषा.....।

गुप्त वंश के शासक एक ऐसे खेल का निर्माण करना चाहते थे जिसमें शारीरिक की अपेक्षा मानसिक शक्ति का अधिक प्रयोग हो। गुप्त शासक चाहते थे कि ये खेल न बल पर और न ही भाग्य पर निर्भर हो, वरन् पूरी तरह मानसिक शक्ति पर आधारित हो। ऐसा खेल जिसे शारीरिक रूप से कमजोर खिलाड़ी भी मस्तिष्क की ताकत से जीत सके जिसका प्रमाण हमें सातवीं शताब्दी के सुबन्धु रचित संस्कृत ग्रन्थ वासवदत्ता एवं बाणभट्ट रचित हर्षचरित में मिलता है। नौवीं शताब्दी में यह खेल भारत से बाहर खेला जाने लगा और दसवीं शताब्दी के अन्त तक पूरे यूरोप में फैल गया। आठवीं से बारहवीं शताब्दी तक कुछ परिवर्तन के साथ इसे अष्टपद के नाम से ही खेला जाता था किन्तु तेरहवीं शताब्दी में अपने वर्तमान नाम शतरंज से अभिहित यह खेल पन्द्रहवीं शताब्दी तक सम्पूर्ण विश्व में लोकप्रिय हो गया था। इस प्रकार पूर्णरूपेण शुद्ध भारतीय खेल के पासे बदलते स्वरूप में प्यादों की सूरत में शतरंज की बिसात पर बिछ गए।

शास्त्रों में वर्णित समुद्र मंथन के पौराणिक प्रसंग की भांति राजस्थान सरकार ने भी 19 नवम्बर 2022 को 'नो बेग डे' को चेस डे के रूप में बदल कर एक दिवसीय शतरंज आयोजन द्वारा सम्पूर्ण राज्य में फैली प्रतिभाओं को खोजने का सफल प्रयास किया है। इस मंथन के पश्चात् राजस्थान के रेतीले धोरों से दुर्गम पहाड़ी इलाकों तक फैले विभिन्न खिलाड़ी रत्नों की प्राप्ति में सहायता मिलेगी।

विद्यालय स्तर पर शतरंज के माध्यम से राज्य की तार्किक क्षमता से युक्त प्रतिभा उसी प्रकार से उद्भुत होगी जैसे समुद्र मंथन से दिव्य रत्नों का प्राकट्य हुआ था। शह और मात का यह खेल पूरी तरह बालकों का ध्यान केन्द्रित करते हुए, योजना बनाकर, सोच समझ कर निर्णय लेने की क्षमता का विकास करता है। इस खेल के माध्यम से बालक में धैर्य, दत्तचित्तता, स्थिर और शान्त दिमाग से विपरीत परिस्थिति में दिमागी सन्तुलन बनाते हुए कार्य करने के नैसर्गिक गुणों का विकास करता है।

पाँच हजार नौ सौ उनचास चालों वाले दो खिलाड़ियों में प्रत्येक के हल्के और गहरे रंग में विभक्त एक राजा, एक वजीर, दो घोड़े, दो ऊँट, दो हाथी, आठ सैनिकों की एक बार की प्रथम चार चालों को तीन सौ अठारह अरब सित्यानवें करोड़ पिचानवें लाख चौंसठ हजार तरीकों से खेले जाने वाले बौद्धिक खेल में खिलाड़ी बिना उपर्युक्त गुणों के हड़बड़ी व उतावलेपन के साथ मैदान में नहीं टिक सकता। इस दिमागी खेल में प्रत्येक विद्यालय में शतरंज के बोर्ड पर महज दो नहीं बल्कि कई बच्चों ने बारी-बारी अपने मोहरे चलाए।

स्वयं माननीय शिक्षा मंत्री के शब्दों में.....यह खेल विद्यार्थियों में शिक्षा के साथ साथ अनुशासन, तार्किक चिंतन शक्ति, अपने मोहरों की रक्षा करते हुए आगे बढ़ने का रण कौशल विकसित करता है। माननीय शिक्षा मंत्री ने कहा कि इस आयोजन को स्कूलों ने आन्दोलन की तरह लिया है। 36 लाख से अधिक विद्यार्थियों का रूझान इस खेल में देखकर मैं आश्चर्य चकित हूँ। यह खेल विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अनुकूल सिद्ध होगा। उन्होंने कहा कि आज शिक्षा विभाग ने अपने उद्देश्य प्राप्ति के मिशन आओ स्कूल चलें, पढ़ाई करें, शतरंज खेलें की प्राप्ति के लिए पहला कदम बढ़ाकर विद्यार्थियों को शतरंज की बिसात पर लाकर 'चेस इन स्कूल' कार्यक्रम की शुरूआत की है। 10 नवम्बर 2022 को रवीन्द्र रंगमंच, बीकानेर से इस कार्यक्रम का आरम्भ कर

Rajasthan Education Department

19 नवम्बर 2022 को जयपुर स्थित राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, मालवीय नगर, जयपुर से शतरंज शुरूआत की।

माननीय संभागीय आयुक्त नीरज के पवन ने कहा कि शतरंज के माध्यम से विद्यार्थी वर्ग में कलेक्टिव मेधा शक्ति का विकास होगा। इससे पूरे देश की मेधा में कलेक्टिव वृद्धि होगी।

माननीय श्री महेश शर्मा अध्यक्ष, स्थायी लोक अदालत, बीकानेर ने शिक्षा विभाग, राजस्थान के बुद्धि बल परीक्षण कार्यक्रम के विभागीय आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की।

अरविन्द व्यास उप निदेशक (स्पोर्ट्स) निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान ने कहा कि शाला दर्पण पर अपलोड जानकारी के अनुसार छत्तीस लाख, तेरह हजार, एक सौ उनहत्तर विद्यार्थियों ने शह और मात के खेल में अपनी प्रतिभागिता निभाई। इवेंट की व्यवस्था में लगे शिक्षा विभाग, शतरंज संघ और खुद शिक्षा मंत्री के लिए यह आँकड़ा चौंकाने वाला साबित हुआ है। निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर श्री गौरव अग्रवाल ने कहा कि शतरंज खेल याद्दाश्त, एकाग्रता, पूर्वानुमान एवं नियंत्रण शक्ति को बढ़ाने वाला खेल है। इस अद्भुत आयोजन के लिए उन्होने पूरे शिक्षा विभाग को बधाई दी। सुरेन्द्र सिंह भाटी, जिला शिक्षा अधिकारी, मुख्यालय, माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर ने समस्त सम्मानित मंच का आभार व्यक्त किया।

डॉ. संजय कपूर, अध्यक्ष अखिल भारतीय शतरंज संघ ने इस अद्भुत आयोजन के लिए पूरे राजस्थान को बधाई देते हुए कहा कि मैं चाहता हूँ इस तरह देश का प्रत्येक बच्चा शतरंज अवश्य खेले। वीडियो गेम्स खेल रही पीढ़ी मानसिक रूप से कुंद होती जा रही है, शतरंज का खेल उन्हें विश्लेषण करने योग्य बुद्धि देगा और विद्यार्थी फिर से प्रश्न करने लगेंगे।

माननीय श्री शंकर लाल हर्ष, अन्तर्राष्ट्रीय आरबीटर, ने कहा कि शह और मात के इस खेल के विद्यालय में आयोजन से छात्रों का शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ेगा।

कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन श्री विक्रम सिंह, सहायक निदेशक, स्पोर्ट्स एवं श्री संदीप जैन, सहायक निदेशक, (कार्मिक) द्वारा किया गया।

सहायक निदेशक
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

उड़ान : एक कदम मंजिल की ओर..

❐ शिवशंकर व्यास

शैक्षिक नवाचार, विद्यार्थी नामांकन अभिवृद्धि, निजी विद्यालयों से संघर्षमय माहौल में राजकीय विद्यालय की गरिमा बनाए रखने के मूल भाव के साथ सेठ किशनलाल कांकरिया राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नागौर गत 9 वर्षों से 'उड़ान' विद्यालय पत्रिका मय प्रवेश विवरणिका का प्रकाशन करवा रहा है।

उड़ान: एक कदम मंज़िल की ओर.... भाव को सार्थक करने का प्रयास विद्यालय परिवार करता आ रहा है, जिसकी झलकियाँ विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा परीक्षा परिणाम को बताया गया है। उड़ान में विद्यालय परिवार की वर्षभर की सम्पूर्ण गतिविधियाँ, SDMC की सार्थक बैठकें, विद्यालय पृष्ठभूमि, विद्यालय भवन निर्माता दानवीर सेठ किशनलाल कांकरिया का जीवन परिचय को प्रारंभ भाव के साथ बताने का प्रयास किया गया है। विद्यालय में समस्त गतिविधियाँ होती है। उड़ान में नए प्रवेशित बच्चों, उनके अभिभावकों के लिए प्रवेश नियम, शुल्क, समस्त सरकारी सुविधाओं, अनुशासन, विद्यालय में उपलब्ध सुविधाओ पर ध्यानाकर्षण किया गया है। शायद राजस्थान का यह पहला विद्यालय होगा जहाँ इंदिरा प्रियदर्शनी छात्रा संसद का गठन किया गया जिसका लोकतांत्रिक तरीके से चुनाव द्वारा गठन होता है। उच्च कक्षा में प्रवेश पूर्व विषय चयन सभी संकाय में किसी विषय का चयन करके किस तरह लाभ मिले दिशाहीनता, असमंजस की दुविधापूर्ण हालात से बचने के लिए मार्गदर्शन को समाहित किया गया है। विद्यार्थियों, पूर्व विद्यार्थियों, शिक्षकों, विकास समिति सदस्यों की चयनित रचनाओं को स्थान दिया गया है। सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों, प्रधान सम्पादक के अपने विचार अलग-अलग लिए गए जो हैं। विद्यालय प्रभारियों, NCC, NSS, RSOS परीक्षा की जानकारी समस्त शिक्षकों, कार्यालय, जिला प्रशासन के सम्पर्क सूत्र सहायता के लिए उपयोगी साबित होते रहे हैं।

गतवर्ष के विभिन्न गतिविधियों के श्रेष्ठतम कर्मवीर विद्यार्थियों, खिलाड़ियों, माँ सरस्वती के मंदिर का गौरव बढ़ाने वाले कर्मशील, श्रमशील शिक्षकों को सचित्र नामांकित किया गया है, जो दूसरों के लिए प्रेरणाप्रद होंगे। पूर्व विद्यार्थियों को स्कूल से जुड़ाव के लिए प्रधानाचार्य श्री शंकरलाल शर्मा, व्याख्याता और SDMC सचिव शिवशंकर व्यास की रूपरेखा से पूर्व विद्यार्थी स्नेह मिलन कर जोड़ा गया, जिनकी झलकियाँ ली गई, यादगार पल के लिए, साथ ही ऐसे पूर्व विद्यार्थी जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी उपलब्धि हासिल की, नागौर आने पर स्कूल दर्शनार्थ आए, अपनी भावनाएँ इजहार के सुनहरे पलों को भी सचित्र लिया गया है। 2011-12 से वार्षिक उत्सव मनाने की गतिविधियों को लिया गया। भौतिक विकास, सहशैक्षणिक गतिविधियों के सुचारू संचालन के लिए समस्त भामाशाहों को नामांकित किया गया, इससे अन्य लोग प्रेरक बन कर भी अंशदान कर सकते हैं। सबसे बड़ी उपलब्धि प्रधानाचार्य और SDMC के सपनों को साकार किया है विद्यालय पूर्व विद्यार्थी मंच समिति ने, का गठन कर रिटायर्ड जिला सेशन जज श्री उमेश शर्मा ने इनके नेतृत्व में मंच का पंजीयन हुआ। 80G की छूट की सुविधा के साथ, CSR फण्ड से राशि लेने का पत्र दिल्ली से जारी करवाकर लगभग 8-10 करोड़ की लागत से अंतरराष्ट्रीय स्तर का इंडोर हाल, जिम का कार्य प्रथम चरण में निर्माणाधीन है। वहीं दूसरे चरण में मल्टीपरपज ऑडिटोरियम, e-लाईब्रेरी, सुसज्जित ICU एम्बुलेंस, रेस्ट रूम, ये कार्य केवल पूर्व विद्यार्थियों, भामाशाहों के सहयोग से प्रस्तावित है। इन सभी की विस्तृत जानकारी, प्रक्रिया को विशिष्ट स्थान दिया गया है।

व्याख्याता (हिन्दी)
सेठ किशनलाल कांकरिया
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नागौर (राज.)
मो: 9414474811

Rajshri Education Department

मानवाधिकार दिवस विशेष

मानव अधिकार

❒ योगेश चन्द्र पारीक

मानव होने के नाते जो अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को जन्म से ही प्राप्त होते है वो मानवाधिकार कहलाते हैं। ये अधिकार प्रत्येक नागरिक को धर्म, जाति-लिंग से परे मानवता का दर्जा प्रदान करते हैं। जिससे वो सम्मान, गरिमा व स्वतंत्रता से अपने जीवन के हर कौशल को विकसित कर अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर सके।

पाकर मानव अधिकार ही,
जीता मनुज शान से,
स्वराष्ट्र निर्मित कर पाता है,
आन-मान सम्मान से।'

ये अधिकार प्रत्येक नागरिक तब ही अर्जित कर पाता है जब उसमें समुचित ज्ञान हो, शिक्षा हो मानव अधिकार व शिक्षा एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हैं-जागरूकता व चेतना के लिए 'शिक्षा' ही उपयुक्त साधन है। इस दृष्टि से शिक्षा के अधिकार के अन्तर्गत मानवाधिकारों की शिक्षा भी शामिल है- जिसकी परिधि में बौद्धिक, मानसिक, नैतिक और शारीरिक विकास समाहित है, ऐसी शिक्षा ही समाज में शोषण और उत्पीड़न पर रोक लगाने में कारगर सिद्ध हो सकती है- इसी से संवेदना, सहिष्णुता और शांति का मार्ग प्रशस्त होगा।

आज की नौजवान पीढ़ी में सैद्धांतिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षा में मानवीय मूल्यों का विकास हो इसके लिए मानव अधिकार पूर्ण शिक्षा होगी तब ही युवा पीढ़ी गरीबी, शोषण और भेदभाव की मानसिकता से मुक्त होगी।

शिक्षा हो ऐसी जिसमें
हो मानव मूल्यों का अधिकार।
स्नेहासिक्त जीवन बने,
शोषण, भेदभाव का हो प्रतिकार।।

शिक्षा है मानव अधिकार का अनिवार्य अंग- मानव अधिकारों की शिक्षा का मूल भाव यह है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल प्रशिक्षित और व्यावसायिक कामगार विद्यार्थी ही तैयार न हो अपितु वो नागरिक तैयार हो जो

समाज को साथ लेकर सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए जुड़ सके।

महात्मा गाँधी ने कहा था कि यदि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात मूल्यों पर आधारित शिक्षा नहीं दी गई तो ये स्वराज सिर्फ हमें खुशी देगा। मानवीय सभ्यता इस पर कायम नहीं होगी।

शिक्षा में मानव अधिकार का उद्देश्य- सुख-शांति पूर्ण परिवार व राष्ट्र की गरिमा होना- शिक्षा का मानवीय अधिकार जन्म से पूर्व ही शुरू हो जाता है। जो बच्चा गर्भ में है वो जन्म लेने का अधिकार रखे। तत्पश्चात उसे नाम, राष्ट्रीयता व जीवन जीने का हक प्राप्त हो। जीवन के सर्वांगीण विकास हेतु उसे मानवाधिकार पूर्ण शिक्षा प्राप्त हो।

आधुनिक मानवाधिकार का जन्म सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में हुआ। वहाँ के शासक मैग्नाकार्टा ने तीन शिलाखण्डों पर मानव अधिकार लिपिबद्ध करवाए। जिसमें मनुष्य स्वतंत्र रूप से अपना यथोचित रोजगार प्राप्त कर अत्याचार से विमुख जीवन जी सके।

तत्पश्चात फ्रांस की क्रांति ने सम्पूर्ण विश्व को नई दृष्टि प्रदान की। फ्रांस ने मानवाधिकारों को प्रत्येक नागरिक तक पहुँचाया। 10 दिसम्बर 1948 को संयुक्त राष्ट्र संघ ने मानवाधिकारों की घोषणा की तभी से विश्व के प्रत्येक देश में प्रत्येक नागरिक को मानव अधिकारों की शिक्षा देने-इसके अधिकारों का संरक्षण करने हेतु अनेक सरकारी व निजी संस्थाएँ स्थापित हुई।

हमारी सरकार ने भी RTE के अन्तर्गत 6-14 वर्ष के बालक को निःशुल्क शिक्षा का अधिकार प्रदान किया है- जिसके तहत गरीब बच्चा भी शिक्षा के शुल्क से मुक्त रहकर अपनी शिक्षा पूर्ण कर सके। परिवार राष्ट्र की सुख शांति यही है कि युवा पीढ़ी चरित्रवान, विद्वान, दृढ़ प्रतिज्ञ व सशक्त हो तभी संपूर्ण जगत समृद्धि एवं वैभवयुक्त होगा।

मानवाधिकार आयोग ने सरकार से भी आग्रह किया है कि मानव अधिकार पूर्ण शिक्षा ही शिक्षा की नींव बने। इसके लिए समुचित प्रयास हो, शैक्षिक योजनाओं व नवाचारों का विकास हो-जेण्डर संवेदनशीलता का प्रसार हो, विद्यालय स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से मानव अधिकार के विषयों जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, दलितों, जनजातियों, किसानों, महिलाओं, बच्चों के बारे में प्रोजेक्ट तैयार करवाए जाए।

इसी विषय वस्तु में, मैं दार्शनिक पुट रखते हुए यह बात कहकर अपने लेखन को विराम देना चाहूँगा कि प्रत्येक मनुष्य जन्म से निष्कपट, ईमानदार, अनुरागी और उदात्त होता है। जीवन की कठोर वास्तविकताएँ उसे मूल चरित्र से भटका देती है। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि इस समय विद्यालय, कॉलेज और विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को संस्कारों व मानव मूल्यों की प्रकृति से जुड़े रहने की प्रेरणा प्रदान करें।

उन्हें वो साहस व विश्वास प्रदान करें कि जीवन में उनकी अपनी खुशी ही परिवार व राष्ट्र की खुशी है और यही मानव अधिकारों की आधारशिला भी।

न हो किसी आँख में आँसू
सुखद जीवन हो राष्ट्र के हर परिवेश का
मानव बन मानव से पुरुषोत्तम बन सके,
यही संदेश है इस 'योगेश' का।

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
भीलवाड़ा (राज.)
मो: 9413149158

Rajasthan Education Department

प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा सीखने के प्रतिफल

❐ डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता

बच्चे अपने साथ बहुत कुछ लेकर विद्यालय आते हैं। अपनी भाषा, अपने अनुभव और दुनिया को देखने का अपना नजरिया आदि। बच्चे घर-परिवार एवं परिवेश से जिन अनुभवों को लेकर विद्यालय आते हैं, वे बहुत समृद्ध होते हैं। उनकी इस भाषायी पूँजी का इस्तेमाल भाषा सीखने-सिखाने के लिए किया जाना चाहिए। पहली बार विद्यालय में आने वाला बच्चा अनेक शब्दों के अर्थ और उनके प्रभाव से परिचित होता है। लिपिबद्ध चिह्न और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ बच्चों के लिए अमूर्त होती हैं, इसलिए पढ़ने का प्रारंभ अर्थपूर्ण सामग्री से ही होना चाहिए और किसी उद्देश्य के लिए होना चाहिए। यह उद्देश्य कहानी सुनकर-पढ़कर आनंद लेना भी हो सकता है। धीरे-धीरे बच्चों में भाषा की लिपि से परिचित होने के बाद अपने परिवेश में उपलब्ध लिखित भाषा को पढ़ने-समझने की जिज्ञासा उत्पन्न होने लगती है। भाषा सीखने-सिखाने की इस प्रक्रिया के मूल में बच्चों के बारे में यह अवधारणा है कि बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ और ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। यह निर्माण किसी के सिखाए जाने या जोर-जबरदस्ती से नहीं बल्कि बच्चों के स्वयं के अनुभवों और आवश्यकताओं से होता है। इसलिए बच्चों को ऐसा वातावरण मिलना जरूरी है जहाँ वे बिना रोक-टोक के अपनी उत्सुकता के अनुसार अपने परिवेश की खोज-बीन कर सकें। यही अवधारणा बच्चों की भाषायी क्षमताओं पर भी लागू होती है। विद्यालय में आने पर बच्चे प्रायः स्वयं को बेझिझक अभिव्यक्त करने में असमर्थ पाते हैं, क्योंकि जिस भाषा में वे सहज रूप से अपनी राय, अनुभव, भावनाएँ आदि व्यक्त करना चाहते हैं, वह विद्यालय में प्रायः स्वीकृत नहीं होती। भाषा शिक्षण को बहुभाषी संदर्भ में रखकर देखने की आवश्यकता है। कक्षा में बच्चे अलग-अलग भाषायी, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते हैं। कक्षा में इनकी भाषाओं का स्वागत किया जाना चाहिए, क्योंकि बच्चों की भाषा को नकारने का अर्थ है-उनकी अस्मिता को नकारना। प्राथमिक

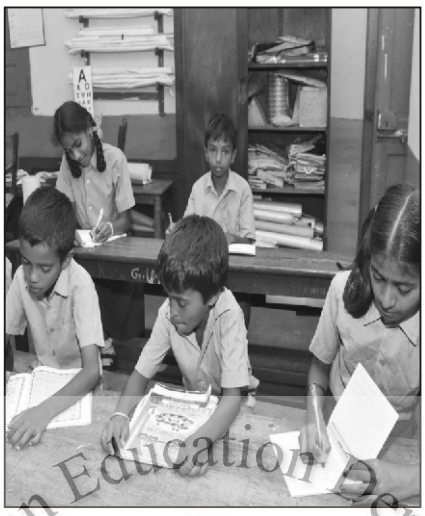

स्तर पर भाषा सीखने-सिखाने के संबंध में यह एक जरूरी बात है कि बच्चे विभिन्न प्रकार के परिचित और अपरिचित संदर्भों के अनुसार भाषा का सही प्रयोग कर सकें। वे सहज, कल्पनाशील, प्रभावशाली और व्यवस्थित ढंग से किस्म-किस्म का लेखन कर सकें। वे भाषा को प्रभावी बनाने के लिए सही शब्दों का प्रयोग कर सकें। यह भी जरूरी है कि पढ़ना, सुनना, लिखना, बोलना-इन चारों प्रक्रियाओं में बच्चे अपने पूर्व ज्ञान की सहायता से अर्थ की रचना कर पाएँ और कही गई बात के निहितार्थ को भी पकड़ पाएँ। भाषा-संप्राप्ति में पढ़ने को लेकर जिस बात पर बल दिया गया है उसके अनुसार 'पढ़ना' मात्र किताबी कौशल न होकर एक तहजीब और तरकीब है। पढ़ना, पढ़कर समझने और उस पर प्रतिक्रिया करने की एक प्रक्रिया है। दूसरे शब्दों में, हम यह कह सकते हैं कि पढ़ना बुनियादी तौर से एक अर्थवान गतिविधि है। हम ऐसा भी कह सकते हैं कि मुद्रित अथवा लिखित सामग्री से कुछ संदर्भों व अनुमान के आधार पर अर्थ पकड़ने की कोशिश 'पढ़ना' है। ऐसी स्थिति में हम अनेक बार किसी पाठ्य-वस्तु को पढ़ने के दौरान किसी बिन्दु पर जरूरत महसूस होने पर उसी को आगे के संदर्भ में समझने के लिए लौटकर फिर पढ़ते हैं। पढ़ने का यह दोहराव 'अर्थ की खोज' का प्रमाण बन जाता है। पढ़ने के दौरान अर्थ निर्माण के लिए इस बात की भी समझ होनी चाहिए कि अर्थ केवल शब्दों और प्रयुक्त वाक्यों में ही निहित है, बल्कि वह पाठ की समग्रता में भी मौजूद होता है और कई बार उसमें जो साफ तौर पर नहीं कहा गया होता है, उसे भी समझ पाने की जरूरत होती है। यह समझना उसमें जो साफ तौर पर नहीं कहा गया होता है, उसे भी समझ पाने की जरूरत होती है। यह समझना भी जरूरी है कि पठन सामग्री की अपनी एक अनूठी संरचना होती है और उस संरचना की समझ रखना अर्थ निर्माण में सहायक होता है।

लिखना एक सार्थक गतिविधि तभी बन पाएगी जब बच्चों को अपनी भाषा, अपनी कल्पना, अपनी दृष्टि से लिखने की आजादी मिले। बच्चों को ऐसे अवसर मिले कि वे अपनी भाषा और शैली विकसित कर सकें न कि ब्लैकबोर्ड, किताबों या फिर शिक्षक के लिखे हुए कि नकल करते रहें। पढ़ना-लिखना सीखने का एकमात्र उद्देश्य यह नहीं है कि बच्चे अपनी पाठ्यपुस्तक को पढ़ना सीख जाएँ और अपनी पाठ्यपुस्तक में आए विभिन्न पाठों के अंत में दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिख सकें बल्कि इसका उद्देश्य यह है कि वे अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में पढ़ने-लिखने का इस्तेमाल कर सकें। वे विभिन्न उद्देश्यों के लिए समझ के साथ पढ़ और लिख सकें। पढ़ना-लिखना-सीखने की प्रक्रिया में यह बात भी शामिल हो जाए कि विभिन्न उद्देश्यों के लिए पढ़ने और लिखने के तरीकों में अंतर होता है। हमारे पढ़ने का तरीका इस बात पर भी निर्भर करता है कि हमारे पढ़ने का उद्देश्य क्या है। एक विज्ञापन को पढ़ना और एक सूचना को पढ़ने के तरीकों में फर्क होता है। लेखन के संदर्भ में भी यह बात महत्त्वपूर्ण है कि हमारा 'पाठक' कौन है। यानी हम किसके लिए लिख रहे हैं। अगर हमें विद्यालय के खेलकूद समारोह की सूचना लिखकर लगानी है तो इसके 'पाठक' विद्यालय के बच्चे, शिक्षक और अन्य कर्मचारीगण है। लेकिन अगर यही सूचना समुदाय और अभिभावकों को देनी है तो इसके पाठकों में

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

अभिभावक और समुदाय के व्यक्ति भी शामिल हो जाएंगे। दोनों स्थितियों में हमारे लिखने के तरीके और भाषा में बदलाव आना स्वाभाविक है। इसी तरह से तरह-तरह की सामग्री को पढ़ने का उद्देश्य पढ़ने के तरीके को निर्धारित करता है। अगर आप स्कूल के नोटिस बोर्ड पर विद्यालय वार्षिकोत्सव की सूचना पढ़ना चाहते हैं तो इसमें आपका ध्यान किन्हीं खास बिन्दुओं की ओर जाएगा, जैसे- समारोह कौन सी तारीख को है, समारोह कहाँ आयोजित किया जाएगा, समय क्या है? आदि आदि। यदि कोई कहानी पढ़ते हैं तो उसके पात्रों और घटनाक्रम के बारे में गहराई से सोचते हैं कि यदि ऐसा हुआ तो क्यों हुआ, कहानी में ऐसा क्या है, जो अगर नहीं होता तो कहानी का रूख क्या होता? आदि आदि। हमारे पढ़ने-लिखने के अनेक आयाम हैं, अनेक पड़ाव हैं और हर पड़ाव अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। इन्हें कक्षा में समुचित स्थान मिलना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर भी बच्चों से यह अपेक्षा रहती है कि वे कही या लिखी गई बात पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकें और प्रश्न पूछ सकें। बच्चों की भाषा इस बात का प्रमाण है कि वे अपनी भाषा का व्याकरण अच्छी तरह जानते हैं पर व्याकरण की सचेत समझ बनाने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को उसके विभिन्न पहलुओं की पहचान विविध पाठों के संदर्भ में और आस-पास के परिवेश से जोड़कर कराई जाए। भाषा के अलग-अलग तरह के प्रयोगों की ओर उनका ध्यान दिलाया जाए ताकि वे भाषा की बारीकियों को पकड़ सकें और अपनी भाषा में उनका उचित रूप से प्रयोग कर सकें। भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया और माहौल के संदर्भ में यह बात ध्यान में रखना जरूरी है कि एक स्तर पर की जाने वाली प्रक्रियाओं को अगले स्तर की कक्षाओं के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। कक्षावार या स्तरानुसार रोचक विषय सामग्री का चयन किया जाना चाहिए जिससे बच्चों को हिन्दी भाषा की विभिन्न शैलियों और रंगतों से परिचित होने और उनका प्रभावी प्रयोग करने के अवसर मिल सकें। रोचक और विविधतापूर्ण बाल साहित्य का इस संदर्भ में विशेष महत्त्व है। भाषा संबंधी सभी क्षमताएँ, जैसे-सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना एक-दूसरे से जुड़ी हुई होती हैं और एक-दूसरे के विकास में सहायक होती है। अतः इन्हें अलग-अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए। यहाँ यह समझना भी जरूरी होगा कि हिन्दी भाषा संबंधी जो भाषा संप्राप्ति के बिन्दु दिए गए है उनमें परस्पर जुड़ाव है और एक से अधिक भाषायी क्षमताओं की झलक उनमें मिलती है। किसी रचना को सुनकर अथवा पढ़कर उस पर गहन चर्चा करना, अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना, प्रश्न पूछना पढ़ने की क्षमता से भी जुड़ा है और सुनने-बोलने की क्षमता से भी। प्रतिक्रिया, प्रश्न और टिप्पणी को लिखकर भी अभिव्यक्त किया जा सकता है। इस तरह से भी भाषा की कक्षा में एक साथ सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना जुड़ा है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए यहाँ पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाएँ, सीखने-सिखाने की प्रक्रिया तथा सीखने संबंधी संप्राप्ति को दर्शाने वाले बिन्दु दिए गए हैं। पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं को पूरा करने में सीखने संबंधी प्रक्रियाओं की बड़ी भूमिका होगी। सीखने की उपयुक्त प्रक्रियाओं के बिना सीखने संबंधी अपेक्षित संप्राप्ति नहीं की जा सकेगी।

पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाएँ-

पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं को पूरे देश के बच्चों को ध्यान में रखकर (प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ने वाले और द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ने वाले, दोनों) तैयार किया गया है। कक्षा एक से पाँच तक-

- दूसरों की बातों को रुचि के साथ और ध्यान से सुनना। अपने अनुभव-संसार और कल्पना-संसार को बेझिझक और सहज ढंग से अभिव्यक्त करना। अलग-अलग संदर्भों में अपनी बात कहने की कोशिश करना (बोलकर/इशारों से/'साइन लैंग्वेज' द्वारा/चित्र बनाकर)
- स्तरानुसार कहानी, कविता आदि को सुनने में रुचि लेना और उन्हें मजे से सुनना और सुनाना। देखी, सुनी और पढ़ी गई बातों को अपनी भाषा में कहना, उसके बारे में विचार करना और अपनी प्रतिक्रिया/टिप्पणी (मौखिक और लिखित रूप से) व्यक्त करना।
- सुनी और पढ़ी कहानियों और कविताओं को समझकर उन्हें अपने अनुभवों से जोड़ पाना तथा उन्हें अपने शब्दों में कहना और लिखना। स्तरानुसार कहानी, कविता या अनुभव के स्तर पर किसी स्थिति का निष्कर्ष या उपाय निकालना।
- लिपि-चिह्नों को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर और समझकर उनमें सहसंबंध बनाते हुए लिखने का प्रयास करना। चित्र और संदर्भ के आधार पर अनुमान लगाते हुए पढ़ना।
- पढ़ने की प्रक्रिया को दैनिक जीवन की (स्कूल और बाहर की) जरूरतों से जोड़ना, जैसे-कक्षा और स्कूल में अपना नाम, पाठ्यपुस्तक का नाम और अपनी मनपसंद पाठ्यसामग्री पढ़ना।
- सुनी और पढ़ी गई बातों को समझकर अपने शब्दों में कहना और लिखना। चित्रों को स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना।
- पुस्तकालय और विभिन्न स्रोतों (रीडिंग कॉर्नर, पोस्टर, तरह-तरह की चीजों के रैपर, बाल पत्रिकाएँ, साइन लैंग्वेज, ब्रेल लिपि आदि) से अपनी पसंद की किताबें/सामग्री ढूँढ़कर पढ़ना। अलग-अलग विषयों पर और अलग-अलग उद्देश्यों के लिए लिखना। अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि लिखना।
- मुख्य बिन्दु/विचार को ढूँढ़ने के लिए विषय सामग्री की बारीकी से जाँच करना। विषय सामग्री के माध्यम से संदर्भ के अनुसार नए शब्दों का अर्थ जानना।
- मनपसंद विषय का चुनाव करके लिखना। विभिन्न विराम चिह्नों का समझ के साथ प्रयोग करना।
- संदर्भ और लिखने के उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त भाषा (शब्दों, वाक्यों आदि) का चयन और प्रयोग करना। नए शब्दों को चित्र-शब्दकोश/शब्दकोश में देखना।
- भाषा की लय और तुक की समझ होना तथा उसका प्रयोग करना। घर और विद्यालय की भाषा के बीच संबंध बनाना।

प्रवक्ता
अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर (राज.)
मो: 9462607259

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

एड्स : एक विस्फोटक रहस्य

❐ पुरुषोत्तम लाल स्वामी

लाईलाज महामारी के रूप में मुँह फैलाए खड़ी यह व्याधी एड्स एक वाइरस जनित रोग है, जो घातक ही नहीं बल्कि बहुत ही खतरनाक रोग है जो विश्वभर में फैला है। एड्स (AIDS) का पूरा नाम एक्वार्यड इम्यूनो डेफिसिएंसी सिन्ड्रोम है। इसे हिन्दी में उपार्जित प्रतिरक्षी अपूर्णता सहलक्षण कहा जाता है। यह दुनिया की सबसे जानलेवा बीमारियों में से एक है। यह रोग HIV नाम के वायरस से फैलता है। इसका पूरा नाम ह्यूमन इम्यूनो डेफिसिएंसी वायरस है। HIV एड्स का पेथोजन है। विकीपीडिया के डाटा के मुताबिक प्रतिदिन 14000 लोग दुनियाभर में HIV विषाणु की चपेट में आ रहे हैं।

रिसर्च करने वाले वैज्ञानिकों की माने तो ये वायरस साउथ अफ्रीका में एक खास प्रजाति के बंदरों में मिला था, जो बंदरों से इंसानों तक पहुँचकर पूरी दुनिया में इसका संक्रमण फैला रहा है। भारत और दुनिया भर में 01 दिसम्बर को एड्स दिवस के रूप में मनाया जाता है ताकि विश्व का प्रत्येक नागरिक इससे जागरूक हो सके तथा अपने आपको इससे बचा सके। इस दिन एड्स से संबंधित नाना प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन होता है तथा आमजन को इसके इतिहास के बारे में बताया जाता है।

1987 में WHO में एड्स और वैश्विक कार्यक्रम जिनेवा, स्विट्जरलैण्ड में हुआ था। इस कार्यक्रम के दौरान जेम्स डब्ल्यू बुन और थॉमस नेहर ने विश्व एड्स दिवस की कल्पना की थी।

भारत में एड्स– भारत में एड्स का पहला मामला 1986 में चेन्नई में दर्ज हुआ था। विदेशी टूरिस्ट के सम्पर्क में आने से और सही सुरक्षा नहीं बरतने की वजह से महिला को एड्स का रोग हुआ था। वहीं इस मामले के एक साल के अंदर भारत में एड्स से संबंधित 135 से अधिक मामले प्रकाश में आए। आज तो यह बहुत ही विस्फोटक स्थिति है। आज 55 लाख लोग इसकी चपेट में है। हर दिन 100 से अधिक लोग इस रोग की चपेट में आ रहे है। पूरी दुनिया की बात करें तो हर दिन 900 नए बच्चे एड्स जैसी गंभीर बीमारी की गिरफ्त में आ रहे है।

एड्स रोग के आम लक्षण व प्रभाव– एड्स रोग की चपेट में आने वाले व्यक्ति के तुरंत लक्षण प्रकट नहीं होते लेकिन 2 से 6 माह बाद इसके लक्षण प्रकट होने लगते है। यह वायरस रिट्रो ग्रुप का है जो बहुरुपिया होता है। यह HIV विषाणु कमरे के 25 डिग्री सेल्सियस पर सूखे खून में 10 से 15 दिन तक जिंदा रहने की क्षमता रखते है। जिनमें इस्तेमाल किए हुए टीके या फिर सुई में। यह विषाणु 60 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान पर मारे जाते है। व्यक्ति के बुखार आना, टेस्टिकल्स में दर्द महसूस होना, प्रोस्टेट ग्लैंड में सूजन होना, मलाशय और अंडकोश की थैली में दर्द होना, अचानक से वजन घटना और गले में खराश तथा शरीर में चकते पड़ना आम लक्षण है। जब कोई व्यक्ति इस रोग से ग्रसित हो जाता है तो उसकी इम्यूनिटी पावर कमजोर हो जाती है तथा अन्य दूसरे रोग भी उस पर हमला कर देते हैं, फलस्वरूप वह कई रोगों से एक साथ ग्रसित होने के कारण असहाय हो जाता है। यह व्यक्ति के शरीर में टी–कोशिकाओं को खत्म करने लगता है और व्यक्ति के कोई दवा असर नहीं करती। फलस्वरूप वह धीरे–धीरे मृत्यु की ओर अग्रसर होता है।

एड्स रोग कैसे फैलता है ? : यह रोग हाथ मिलाने, रोगी के साथ उठने–बैठने या उसके साथ खाना खाने अथवा बातचीत करने से नहीं फैलता है। किसी एड्स रोगी के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए ताकि उसके मन में हीन भावना का विकास न हो।

यह रोग निम्न कारणों से फैलता है–

1. असुरक्षित यौन सम्बन्ध करने से।
2. रक्त संचरण से (रोगी का रक्त दूसरे को दिया जाना)
3. रोगी की सूई को दूसरे व्यक्ति ने यदि उपयोग में ले लिया हो तो उससे।
4. रोगग्रसित महिला के प्रसव से बच्चे में।
5. जो लोग इंजेक्शन के जरिए नशा करते है, वे रोगी की सूई को इस्तेमाल करके नशा लेने की लत से।
6. दाड़ी बनाने से यदि रोगी का अंग कट जाए तो उस ब्लेड का इस्तेमाल दूसरा कर ले तो उससे।

उक्त कारणों से यदि व्यक्ति दूरी बनाकर सावधान हो जाए तो इस रोग से बचा जा सकता है, वरना इसकी कोई कारगर दवाई नहीं बनी है जो इस रोग से मुक्ति दे दे। बचाव ही उपचार है।

WHO के वैज्ञानिकों का मानना है कि विश्व में में अब तक 30 करोड़ लोगों की जान इस रोग से जा चुकी है और 4 करोड़ 20 लाख लोग आज भी इस बीमारी से जूझ रहे हैं। NACO ने एक RTI के जवाब में भारत देश में 17 लाख 8 हजार 797 लोग इस रोग से ग्रसित बताए गए हैं।

HIV टेस्ट रोगी की जाँच– वैसे तो एड्स रोग के परीक्षण के लिए कई टेस्टों का इस्तेमाल किया जाता है लेकिन आजकल रैपिड किट परीक्षणों को ज्यादा काम में लिया जाता है। इसके अलावा एलिसा और वैस्टर्न ब्लॉट परीक्षणों को भी काम में लिया जाता है। डॉक्टर इसके अलावा HIV वायरल लोड टेस्ट और सीडीपी सेल काउंट भी करते है।

रेपिड किट टेस्ट– यह सबसे अधिक प्रयोग में लिया जाता है। यह 15–20 मिनट में नतीजा दे देता है। इसमें खास मशीन की आवश्यकता नहीं होती। बस हल्का सा रक्त का सैंपल लेने में दर्द महसूस होता है। नाको के अनुसार ज्यादातर रैपिड किट परीक्षण बेहद संवेदनशील होते हैं और सटीक नतीजे देते है। अगर नतीजा सकारात्मक होता है तो परीक्षण के दूसरे तरीके से इसकी पुष्टि की जाती है।

एलिसा या एंजाइम–लिंक्ड इम्यूनो सॉरबेंट एसे– जब रैपिड किट टेस्ट से व्यक्ति पॉजिटिव मिल जाता है तो इसे दूसरे टेस्ट से जाँचा जाता है जिसे एलिसा टेस्ट कहा जाता है। इसके परिणाम आने में 2–3 घण्टे लगते हैं। अगर HIV के प्रति एंटीबॉडी मौजूद है तो निदान के लिए परीक्षण को दोहराया जाता है। इसका इस्तेमाल एक खास तरह के कागज से जुड़ा होता है जिसे नाइट्रेन सेल्यूलोज पेपर कहा जाता है।

वेस्टर्न ब्लॉट– यह एक और पुष्टिकरण जाँच है। वेस्टर्न ब्लॉट में कई HIV विशिष्ट प्रतिजन नाइट्रो सेल्यूलोज पेपर पर अवशोषित हो जाते हैं। मौजूद एंटीबॉडी स्ट्रिप पर मौजूद एंटीजन से जुड़ जाती है और एंटीजन एंटीबॉडी कॉम्प्लेक्स का पता लगाया जाता है।

HIV वायरल लोड टेस्ट– यह रक्त में

Rajasthan Education Department

HIV की मात्रा को मापता है। इसका उपयोग प्रारंभिक HIV संक्रमण का पता लगाने और उपचार की प्रगति की निगरानी के लिए किया जाता है। तीन प्रौद्योगिक इकाईयां HIV वायरल लोड को मापती है- (1) RT-PCR (2) BDNA (3) NASBA

सीडी 4 सेल काउंट- वायरल लोड के साथ-साथ सीडी 4 सेल काउंट करना जरूरी है जो मरीज की इम्युनिटी को मापता है। अगर सीडी 4 की संख्या 500 से कम है तो रोगी में संक्रमण विकसित होने की संभावना होती है। सीडी 4 जितना ज्यादा होगा, रोगी उतना ही स्वस्थ होगा। नाको के अनुसारी सीडी 4 की संख्या कितनी भी क्यों न हो, पुष्टि होते ही इलाज शुरू कर देना चाहिए।

HIV परीक्षण की लागत- भारत सरकार HIV/AIDS परीक्षण और उपचार पूरी तरह से निःशुल्क प्रदान करती है। डॉ. गुथा के अनुसार हर साल 90 प्रतिशत से ज्यादा HIV परीक्षण सरकारी अस्पतालों, स्वास्थ्य केन्द्रों और ICTC में किए जाते हैं। निजी अस्पतालों में एलिसा परीक्षण की लागत 1200 से 1500 रुपये है। अन्य परीक्षणों की कीमत भी 3000 से 5000 तक होती है। अतः व्यक्ति को सिरदर्द, डायरिया, उल्टी, थकान, गले में सूजन या सूखना, मसल्स में दर्द, सूजन, छाती पर लाल रैशेज और बुखार, बुखार के साथ ठंड लगना, पसीना आना, प्रोस्टेट ग्लैंड में सूजन आदि के लक्षण प्रकट होते ही डॉक्टर की सलाह से HIV/AIDS परीक्षण करवाना चाहिए। ताकि समय रहते थोड़ा बहुत इलाज हो सके। दवाइयों से पूर्ण रूप से तो इलाज संभव नहीं है। हाँ, पर थोड़ी उम्र को बढ़ाया जा सकता है लेकिन अंततः उसे मौत के मुँह में तो जल्दी जाना ही पड़ेगा। इसीलिए सबसे सरल उपाय है-बचाव ही उपचार है।

विश्व एड्स दिवस पर विश्व के प्रत्येक व्यक्ति को एड्स के प्रति जागरूक करना मेरा कर्त्तव्य है और आप सभी लोगों का भी यह पुनीत कर्त्तव्य है कि आप भी आमजन को इसके प्रति जागरूक अवश्य करे। ताकि इस महा बीमारी से जनमानव को बचाया जा सके।

व्याख्याता (जीव विज्ञान)
श्री कल्याण राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
सीकर (राज.) **मो: 9461537157**

ऊर्जा बचाएँ : देश को आगे बढ़ाएँ

❒ **विजय लक्ष्मी**

जनसंख्या में वृद्धि के साथ, ऊर्जा की आवश्यकता भी लगातार बढ़ रही है। इसलिए ऊर्जा संरक्षण और ऊर्जा दक्षता के महत्त्व के बारे में आम जनता में जागरूकता बढ़ाने के लिए हर साल 14 दिसंबर को 'ऊर्जा संरक्षण दिवस' मनाया जाता है। ऊर्जा संरक्षण ऊर्जा की खपत को कम करने और कम से कम ऊर्जा का उपयोग करने के लिए किया गया प्रयास है ताकि ऊर्जा के स्रोतों को भविष्य में उपयोग के लिए बचाया जा सके। हालांकि ऊर्जा संरक्षण या तो ऊर्जा का उपयोग कुशलता से करके या उपयोग की मात्रा को कम करके प्राप्त किया जा सकता है। हमारे दैनिक जीवन में उपयोग किए जाने वाले अधिकांश ऊर्जा स्रोत गैर-नवीनीकरणीय हैं, जिनका पुनः उपयोग और नवीनीकरण नहीं किया जा सकता है। जीवाश्म ईंधन, कच्चे तेल, कोयला, प्राकृतिक गैस आदि दैनिक जीवन में उपयोग के लिए पर्याप्त ऊर्जा उत्पन्न करते हैं। लेकिन दिनों-दिन इनकी बढ़ती माँग प्राकृतिक संसाधनों के कम होने का भय पैदा करता है। ऐसे में ऊर्जा संरक्षण ही केवल एक ऐसा रास्ता है जो ऊर्जा के गैर नवीनीकृत साधनों के स्थान पर नवीनीकृत साधनों को प्रतिस्थापित करता है।

हम हर रोज बहुत सारे कार्यों में ऊर्जा का प्रयोग करते हैं। वाहन चलाने के लिए पैट्रोल की जरूरत होती है, बिजली भी कोयले से उत्पन्न होती है और हम सब बिजली का प्रयोग भी बहुत ज्यादा करते हैं। ऐसे में ऊर्जा के स्रोत हमारे लिए बहुत जरूरी है। आज के समय में यह आमबात हो गयी है कि हम विद्युत ऊर्जा का दुरुपयोग करते हैं जैसे की मोबाइल फ़ोन चार्जिंग पर लगा कर भूल जाते हैं, पानी का उपयोग करते समय पानी बहुत फैलाते हैं। पेट्रोल एवं कोयले आदि जैसे ऊर्जा के स्रोतों को सरंक्षित करने के लिए हमें पंखे, लाइट आदि को बिना उपयोग के खुला नहीं छोड़ना चाहिए। हमें एलईडी बल्ब का प्रयोग करना चाहिए जिससे बिजली की खपत कम हो और कोयले को बचाया जा सके। निजी वाहनों का प्रयोग छोड़कर सार्वजनिक वाहनों का प्रयोग करना चाहिए। थोड़ी दूर जाने के लिए साइकिल का प्रयोग और हो सके तो थोड़ा पैदल चलने में भी कोई बुराई नहीं है।

अगर हम चाहते हैं कि हम भविष्य में भी ऊर्जा प्राप्त कर सके और ऊर्जा के स्रोतों का लाभ उठा सके तो हमें इनका सोच समझकर प्रयोग करना होगा और साथ ही ऊर्जा के ऐसे स्रोत ढूँढ़ने होंगे जिनका हमारे पास भंडार हो और वह कभी खत्म न होने वाले हो। जैसे कि सौर ऊर्जा सूर्य की गर्मी से प्राप्त होती है और पवन ऊर्जा जो कि तेज हवा से प्राप्त होती हैं।

ऊर्जा उपयोगकर्ताओं को ऊर्जा की कम खपत करने के साथ ही कुशल ऊर्जा संरक्षण के लिए जागरूक करने के उद्देश्य से विभिन्न देशों की सरकारों ने ऊर्जा और कार्बन के उपयोग पर कर लगा रखा है। उच्च ऊर्जा उपभोग पर कर ऊर्जा के प्रयोग को कम करने के साथ ही उपभोक्ताओं को एक सीमा के अन्दर ही ऊर्जा का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

लोगों को इस विषय पर अधिक जागरूक होना चाहिए कि कार्यस्थलों पर तेज रोशनी विभिन्न परेशानियों या यों कहें कि बीमारियों को लाती है जैसे : तनाव, सिर दर्द, रक्तचाप, थकान और कार्यक्षमता में कमी जबकि प्राकृतिक प्रकाश कार्यकर्ताओं के उत्पादकता के स्तर को बढ़ाता है और ऊर्जा की खपत को कम करता है। अतः हमें व्यवहार में ऊर्जा संरक्षण को शामिल करना होगा और ऊर्जा संरक्षण योजना को अधिक प्रभावी बनाना होगा। इसी उद्देश्य से साल 1977 में भारत सरकार ने पेट्रोलियम संरक्षण अनुसंधान एसोसिएशन (PCRA) की स्थापना की थी। ऊर्जा संरक्षण की दिशा में यह भारत सरकार द्वारा उठाया गया बहुत बड़ा कदम है। इसके अलावा भारत सरकार ने 'ऊर्जा संरक्षण अधिनियम' द्वारा वर्ष 2001 में 'ऊर्जा दक्षता ब्यूरो' (बीईई) स्थापित किया। ऊर्जा दक्षता ब्यूरो एक संवैधानिक निकाय है, जो ऊर्जा का उपयोग कम करने के लिए नीतियों और रणनीतियों के विकास में मदद करता है।

व्याख्याता (इतिहास)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेडली सैयद,
अलवर (राज.) **मो: 8058558561**

Rajshan Education Department

आरकेएसएमबीके आकलन-1

दक्षता आधारित आकलन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग

❒ डॉ. तमन्ना तलरेजा

राजस्थान के सभी सरकारी विद्यालयों में कक्षा 3 से कक्षा 8 के लिए संचालित कार्यक्रम **''राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम''** के तहत विभाग विद्यार्थियों को उनके लर्निंग लेवल के अनुसार दक्षता आधारित शिक्षण करके उन्हें अपने कक्षा स्तर तक लाने के लिए प्रयासरत हैं। इसके लिए विभाग द्वारा चलाए गए कार्यक्रम की सुचारू रूपरेखा के अनुसार 11 जुलाई 2022 को कार्यक्रम के आरंभ उपरांत अक्टूबर 2022 तक लगातार चार माह निर्धारित चार कालांशों में वर्क बुक्स के माध्यम से उपचारात्मक शिक्षण करवाया गया।

उक्त शिक्षण के उपरांत यह जाँचना अत्यंत आवश्यक था कि-

- इस पूरे शिक्षण के पश्चात कौनसा विद्यार्थी किस स्तर पर है?
- क्या विद्यार्थी के शिक्षण में कुछ सुधार आया? अथवा अभी और मेहनत की जानी है।

आकलन से ही हम यह जान पाते हैं कि पूर्व निर्धारित दक्षताओं को विद्यार्थी किस सीमा तक प्राप्त कर पाए हैं, उनके अधिगम अनुभव किस सीमा तक प्रभावशाली रहे हैं। अत: अब तक वर्क बुक्स के माध्यम से करवाए गए उपचारात्मक शिक्षण का आकलन करने के लिए 'आरकेएसएमबीके आकलन-1' करवाया जाना निर्धारित किया गया। अब समस्या यह थी कि आकलन संपूर्ण राज्य में किस प्रकार से किया जाए ताकि हम यह जान सके कि राज्य भर में एकीकृत रूप से चलाए गए दक्षता आधारित शिक्षण से संपूर्ण राज्य के कक्षा 3 से 8 के विद्यार्थियों के शिक्षण स्तर में कितना परिवर्तन आया है? इसके लिए दो विकल्प थे-

1. पारंपरिक तरीके से दक्षता आधारित आकलन करवा लिया जाए अथवा
2. नव तकनीक के किसी अन्य बेहतर विकल्प को अपनाया जाए।

यदि आकलन के परंपरागत तरीके को अपनाया जाता तो-

- सभी शिक्षक वर्कबुक आधारित आकलन पत्र स्वयं बनाते उदाहरण के लिए 65000 विद्यालयों में कक्षा 5, गणित के 65000 विविध प्रकार के आकलन प्रपत्र बनते, फिर शिक्षक स्वयं इन उत्तर पत्रक की जाँच कर विद्यार्थियों को अंक या ग्रेड देते तथा शाला दर्पण पर प्रविष्टि करते।
- शाला दर्पण पर सीखने के परिणाम की प्रविष्टि से यदि आकलन कार्य किया जाता तो सभी विद्यालयों में अलग- अलग प्रश्न पत्र होने से, उक्त कार्य के मानकीकरण की समस्या रहती
- इसका परिणाम भी अन्य सर्वे की बातें कुछ ट्रेनिंग्स व लेक्चर्स तक ही सीमित रह जाता।
- इसका नुकसान यह होता कि राज्य में दक्षता आधारित आकलन का कोई समान मानदंड नहीं बन पाता कि, राज्य के किस विद्यार्थी के शिक्षण स्तर में कितना सुधार हुआ है? अथवा सरल शब्दों में कहें तो यह नहीं जान पाएँगे कि विद्यार्थी को शिक्षण के उपरांत अब कितना आता है?

इसलिए इस कार्यक्रम में यह आवश्यकता महसूस की गई कि-

- राज्य स्तर पर संपूर्ण विद्यार्थियों के परिणामों व निर्धारित दक्षताओं में परफॉर्मेंस को जानने के लिए राज्य स्तर से ही सभी विद्यालयों के लिए मानकीकृत आधुनिक सोच पर दक्षता आधारित प्रश्नपत्र बनाया जाए और फिर उनकी कॉमन चेकिंग हो सके।

यह सब संभव था- मात्र नव तकनीक के उपयोग से। इसके लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रयोग का सहारा लिया गया-

- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रयोग में भी हमारे पास ऑप्शन था कि ओएमआर (OMR) तकनीक जो कि अधिकांश प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रयोग में लाई जाती है का प्रयोग किया जा सकता था। परंतु कक्षा 3 से 8 के छोटे बच्चे बच्चियों ओएमआर शीट में गोले को पूरी तरह से नहीं भर पाते इसलिए हमने एक अन्य तकनीक ओसीआर (OCR)-ऑप्टिकल कैरक्टर रिकॉग्निशन तकनीक का इस्तेमाल किया।
- विभाग द्वारा प्रत्येक सरकारी विद्यालय में कक्षा 3 से 8 तक पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों (लगभग 65000 विद्यालय के 45 लाख विद्यार्थियों) का 3 से 5 नवंबर 2022 तक दक्षता आधारित आरकेएसएमबीके आकलन-1 लिया गया।
- इसके लिए सबसे पहले राज्य के विद्यार्थियों के लर्निंग लेवल को जाँचने के लिए असेसमेंट सैल, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर द्वारा राज्यस्तरीय प्रश्नपत्र व ओसीआर बनाए गए। प्रत्येक विषय का आकलन पत्रक पाँच दक्षताओं पर आधारित था।
- पंजीयक, शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ द्वारा आंकलन पत्रक का मुद्रण एवं विद्यालयों तक वितरण का कार्य किया गया।
- उनकी राज्यस्तरीय कॉमन चेकिंग के लिए विभाग ने अत्याधुनिक तकनीक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल किया।
- विभाग द्वारा शिक्षकों की मदद के लिए आरकेएसएमबीके एप का निर्माण किया गया है। इसके P1 फेज को आकलन से पूर्व आरंभ किया गया तथा इस ऐप के माध्यम से विभाग के शिक्षकों ने कक्षा 3 से 8 के लगभग 45 लाख विद्यार्थियों की हिंदी, अंग्रेजी तथा गणित विषयों की लगभग 1.3 करोड़ ओसीआर स्कैन की तथा ऐप पर आगामी विश्लेषण हेतु अपलोड की गई।

3 से 5 नवम्बर को ऐतिहासिक आकलन हुआ जिसमें 1.3 करोड़ ओ.सी.आर. अपलोड हुई।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

S. No.	District Name	Expected OCR upload (based on attendance)	# of OCR upload	% age OCR upload
1	AJMER	5,05,528	5,14,934	102%
2	ALWAR	6,24,511	6,31,124	101%
3	BANSWARA	5,63,030	5,83,379	104%
4	BARAN	2,50,690	2,41,094	96%
5	BARMER	8,67,360	8,58,585	99%
6	BHARATPUR	4,16,536	4,47,971	108%
7	BHILWARA	5,66,225	5,88,772	104%
8	BIKANER	4,51,182	4,38,274	97%
9	BUNDI	2,46,137	2,60,167	106%
10	CHITTAURGARH	3,10,171	3,21,019	103%
11	CHURU	3,42,341	3,32,959	97%
12	DAUSA	2,78,394	2,71,818	98%
13	DHAULPUR	3,25,334	3,32,498	102%
14	DUNGARPUR	4,23,048	4,45,324	105%
15	GANGANAGAR	3,02,898	3,08,400	102%
16	HANUMANGARH	2,52,727	2,47,313	98%
17	JAIPUR	6,62,372	6,39,335	97%
18	JAISALMER	1,91,249	1,91,722	100%
19	JALOR	4,31,289	4,38,107	102%
20	JHALAWAR	3,03,263	3,18,947	105%
21	JHUNJHUNUN	2,06,576	2,00,830	97%
22	JODHPUR	6,08,632	5,99,186	98%
23	KARAULI	2,97,766	2,95,861	99%
24	KOTA	2,34,085	2,31,254	99%
25	NAGAUR	5,50,891	5,44,536	99%
26	PALI	3,82,042	3,89,686	102%
27	PRATAPGARH	2,65,733	2,72,337	102%
28	RAJSAMAND	2,96,915	3,00,952	101%
29	S.MADHOPUR	2,33,766	2,27,714	97%
30	SIKAR	3,33,021	3,24,409	97%
31	SIROHI	2,51,123	2,58,542	103%
32	TONK	2,29,285	2,37,182	103%
33	UDAIPUR	7,92,611	8,11,500	102%
	Total	**1,29,96,728**	**1,31,05,731**	**101%**

- ओसीआर अपलोड में भरतपुर जिला रैंक-1 पर रहा। साथ ही प्रत्येक जिले ने 90% से भी अधिक ओसीआर अपलोड का लक्ष्य पूरा किया गया।
- यह राजस्थान शिक्षा विभाग, द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में एआई के उपयोग का दुनिया का सबसे बड़ा प्रयोग है। इसके लिए स्कूल शिक्षा विभाग, राजस्थान को 'वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' का प्रमाण पत्र वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स लंदन के प्रतिनिधि सुश्री अदिति टाक व श्री प्रथम भल्ला द्वारा प्रदान किया गया।
- 18 नवंबर 2022 को आरकेएसएमबीके आकलन-1 का एआई आधारित परिणाम घोषित किया गया। एआई आधारित रिजल्ट का रिपोर्ट कार्ड (हॉलिस्टिक रिपोर्ट कार्ड), शिक्षक ऐप से डाउनलोड किया जा सकेगा। शिक्षकों के माध्यम से विद्यार्थियों को यह रिपोर्ट कार्ड उपलब्ध हो सकेगा।
- आकलन में प्रत्येक विषय के प्रश्न पत्र हिंदी, अंग्रेजी तथा गणित में 5 दक्षताएँ निर्धारित थी। प्रश्न पत्र में प्रति दक्षता तीन प्रश्न थे, यदि विद्यार्थी इन तीनों प्रश्नों को सही हल कर अंकित करता है तो विद्यार्थी को दक्षता में 3 स्टार, दो प्रश्न सही होने पर 2 स्टार तथा एक प्रश्न सही होने पर 1 स्टार मिलेगा।
- प्रथम बार संपूर्ण राज्य के लिए समग्र दृष्टिकोण भी उपलब्ध हो सकेगा कि, संपूर्ण राज्य के कक्षा 3 से 8 के 45 लाख विद्यार्थियों में से कितने विद्यार्थियों को किस दक्षता में समस्या है।, अथवा किस दक्षता में राज्य के कितने विद्यार्थियों ने अच्छा निष्पादन किया है।
- उदाहरण के लिए- राज्य के कक्षा 4 के लगभग 1 लाख विद्यार्थियों में से 65 हजार विद्यार्थी अनुनासिक और अनुस्वार की पहचान व प्रयोग अच्छी तरह से कर पा रहे हैं (क्योंकि इतने विद्यार्थियों के तीन स्टार हैं) जबकि 25 हजार विद्यार्थियों को अभी सुधार की आवश्यकता है (क्योंकि इनके दो स्टार हैं), 10 हजार विद्यार्थियों को अनुस्वार तथा अनुनासिक की पहचान व प्रयोग में संघर्ष कर रहे हैं (क्योंकि इतने विद्यार्थियों के एक स्टार हैं), अत: उन्हें यह दक्षता पुन: पढ़ाई जानी हैं।

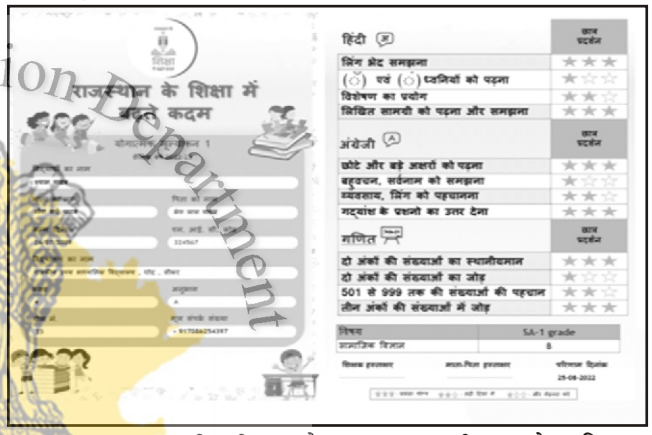

AI आधारित रिजल्ट के बाद यह पहली बार होगा कि हम अधिगम स्तर के डाटा का इस्तेमाल राज्य स्तर पर कर पाएंगे तथा एप के माध्यम से शिक्षकों को प्रेरित कर पाएंगे कि उनकी क्लास में बच्चे इस दक्षता में संघर्ष कर रहे हैं या फिर इस दक्षता में ये बच्चे थोड़ा कमज़ोर हैं तथा इन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

मेरे सामने कई बार यह प्रश्न आया कि, सरकारी स्कूलों में जहाँ शिक्षकों की बहुत कमी रहती है, बच्चे फर्श पर बैठते हैं और कई बार खुले में, उनके अभिभावक इतने पढ़े लिखे नहीं हैं। ऐसे में AI का प्रयोग करना कितना व्यवहारिक है अथवा कितना सार्थक हैं? इस संबंध में मेरा मानना है कि तकनीक का तो काम ही है अंतिम उपयोगकर्ता (एण्ड यूजर) को मुख्यधारा से जोड़ना क्योंकि बिना तकनीक के भी तो अभी तक के सिस्टम में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर को हम कहाँ सुधार पा रहे थे, पिछड़े अधिगम स्तर के आँकड़ों से कहाँ उबर पा रहे थे। तकनीक से ही विद्यार्थियों को यह लाभ दिया जा सकता है जिससे आज तक वे वंचित रहे है। बस आवश्यकता है तकनीक को इस तरह से उपयोग करने की कि वो उपयोग में के काम आ सके।

अनुसंधान अधिकारी
गुणवत्ता एवं प्रशिक्षण अनुभाग
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर
मो: 8094370519

Rajasthan Education Department

समावेशी शिक्षा

❐ मुकेश पालीवाल

संदर्भ कक्ष : विशेष आवश्वकता वाले बालक-बालिकाओं (CWSN) हेतु शिक्षण, प्रशिक्षण एवं थेरेपेटिक सुविधाओं हेतु प्रत्येक ब्लॉक में एक संदर्भ कक्ष विकसित किया गया है जहाँ पर ब्लॉक के सभी CWSN बच्चों को उनके स्तर एवं दिव्यांगता के आधार पर शिक्षण, प्रशिक्षण और थेरेपी प्रदान की जाती है।

ब्लॉक बड़गाँव का संदर्भ कक्ष राउमावि. बड़ी में स्थित है जहाँ दो विशेष व्यक्ति अध्यापक नियुक्ति हैं जिनके द्वारा ब्लॉक के सभी CWSN बच्चों को प्रशिक्षण दिया जाता है।

संदर्भ कक्ष पर उपलब्ध सुविधाएँ: CWSN बच्चों को संबलन एवं शिक्षण कार्य हेतु प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर संदर्भ कक्ष पर दो संदर्भ व्यक्ति (CWSN) लगाए गए हैं जिनके द्वारा सप्ताह में तीन-तीन दिवस उपस्थित रहकर ब्लॉक के CWSN बच्चों को संदर्भ कक्ष पर बुलाकर शिक्षण एवं संबलन प्रदान किया जाता है। इसके लिए आसपास के विद्यालयों से संदर्भ कक्ष पर संबंधित विद्यालय के शिक्षक अथवा अभिभावक बच्चों को संदर्भ कक्ष पर लेकर आते हैं।

थेरेपी कार्यक्रम : प्रत्येक माह में एक बार संदर्भ कक्ष फिजियोथेरेपिस्ट एवं क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट के द्वारा ब्लॉक के सीडब्ल्यूएसएन बच्चों को थेरेपी प्रदान की जाती है।

अभिभावक परामर्शदात्री कार्यक्रम: CWSN बच्चों के अभिभावक हेतु विभिन्न सुविधाओं, जानकारियों एवं बच्चों के प्रति हीन भावना नहीं हो इसके लिए वर्ष में दो बार पेरेंट्स काउंसलिंग कार्यक्रम संदर्भ कक्ष पर आयोजित करवाया जाता है।

विभिन्न प्रकार के भत्ते : राजकीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 12 तक अध्ययनरत 40% या इससे अधिक दिव्यांगता वाले बालक-बालिकाओं हेतु कुल चार प्रकार के भत्ते (परिवहन भत्ता, एस्कॉर्ट भत्ता, रीडर भत्ता एवं स्टाइपेंड भत्ता) प्रदान किए जाते हैं।

संदर्भ व्यक्ति (CWSN) की कलम से : ब्लॉक में स्थित संदर्भ कक्ष पर सभी विद्यालयों में अध्ययनरत CWSN बालक-बालिकाओं को उनके विद्यालय में जाकर संबलन प्रदान किया जाता है एवं संदर्भ कक्ष पर आने हेतु प्रेरित किया जाता है। क्योंकि संदर्भ कक्ष पर उनके दिव्यांगता के अनुसार उपकरण रहते हैं जिससे उन्हें हम उनकी श्रेणी अनुसार शैक्षिक संबलन एवं थेरेपी प्रदान कर सके। उनकी स्थिति में सुधार एवं उनके जीवन में बदलाव ला सकें और ये बच्चे भी सामान्य बच्चों की तरह अपना जीवन यापन कर सकें।

(लखन शर्मा एवं गोपाल कृष्ण त्रिपाठी
संदर्भ व्यक्ति (CWSN) बड़गाँव, उदयपुर)

अभिभावक की कलम से : मैंने मेरे बेटे किशन सिंह जो सेरेब्रल पाल्सी से ग्रसित है का संदर्भ कक्ष वाले विद्यालय राउमावि. बड़ी में 5 वर्ष पूर्व प्रथम कक्षा में प्रवेश करवाया था तब मुझे लगा था इन बच्चों के लिए राजकीय विद्यालयों में कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। वह उस समय अच्छे से बोल पाने एवं चलने की स्थिति में भी नहीं था।

मैं उसके लिए काफी चिंतित रहती थी लेकिन संदर्भ कक्ष पर वहाँ लगे हुए विशेष शिक्षकों की प्रेरणा से मैं प्रति दिवस उसे संदर्भ कक्ष पर लेकर आती एवं शिक्षकों के द्वारा मेरे बेटे एवं अन्य बच्चे जो भी वहाँ पर आते उन्हें लगातार थेरेपी एवं शिक्षण करवाया गया जिससे उन सभी में काफी सुधार आया है। अब मेरा बेटा स्वयं चलकर विद्यालय आ जाता है। अब वह बोलने का भी प्रयास करता है। मेरा ही नहीं और काफी बच्चों में भी इस प्रकार से सुधार हुआ है। इसमें उन शिक्षकों की मेहनत साफ नजर आती है।

अनीता
CWSN माता

सीबीईओ बड़गाँव की कलम से : बड़गाँव ब्लॉक में कुल 209 CWSN बालक-बालिका चिह्नित है जो कि अलग-अलग श्रेणी के हैं और सामान्य बालक-बालिकाओं के साथ विद्यालयों में अध्ययनरत हैं।

हमारा लक्ष्य है कि कोई भी दिव्यांग बच्चा शिक्षा से वंचित नहीं रहे एवं उन्हें हम संदर्भ व्यक्ति (CWSN) की मदद से उनके दिव्यांगता के अनुसार संबलन एवं शिक्षण उनके विद्यालय में और संदर्भ कक्ष पर बुलवा कर करवाने हेतु प्रयासरत हैं।

हमारे दोनों संदर्भ व्यक्ति इस कार्य में अच्छे से मेहनत कर रहे हैं और ब्लॉक के सभी बच्चों को विभिन्न योजनाओं एवं शिक्षण से लाभान्वित भी कर रहे हैं।

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
बड़गाँव, उदयपुर

Rajshan Education Department
सत्यमेव जयते

आदेश-परिपत्र : दिसम्बर, 2022

1. विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्ति हेतु सत्र 2022–23 के लिए शालादर्पण पोर्टल पर छात्रवृत्ति आवेदन अग्रेषित करने के संबंध में निर्देश।
2. शिक्षा सत्र 2022–23 में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम का 'टाइम–फ्रेम'।
3. प्रारंभिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में योजना।
4. विद्यार्थी कोष/विकास कोष के सामयिक, समुचित एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर में गुणवत्ता अभिवृद्धि हेतु प्रभावी उपयोग किए जाने बाबत्।
5. विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्ति हेतु सत्र 2022–23 के लिए शालादर्पण पोर्टल पर छात्रवृत्ति आवेदन अग्रेषित करने के संबंध में निर्देश।
6. राजस्थान राज्य कर्मचारी सामान्य प्रावधायी निधि नियम, 2021 के नियम 14 के संबंध में स्पष्टीकरण बाबत।
7. राज्य सरकार की आदर्श एवं उत्कृष्ट विद्यालय योजनान्तर्गत चयनित विद्यालयों में उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं के निरीक्षण बाबत।
8. SMC/SDMC बैंक खातों को सत्यापित कर शाला दर्पण पोर्टल पर सूचना प्रतिमाह अपडेट करने के संबंध में।
9. 2022–23 के लिए हितकारी निधि वार्षिक अंशदान बाबत।
10. हितकारी निधि के अन्तर्गत माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना–पत्र आमंत्रण : अंतिम तिथि 28.12.2022

1. विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्ति हेतु सत्र 2022–23 के लिए शालादर्पण पोर्टल पर छात्रवृत्ति आवेदन अग्रेषित करने के संबंध में निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा–माध्य/छाप्रोप/ए/शालादर्पण/2022–23/84 दिनांकः 01.11.2022 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक/प्रारंभिक–मुख्यालय ● विषय : विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्ति हेतु सत्र 2022–23 के लिए शालादर्पण पोर्टल पर छात्रवृत्ति आवेदन अग्रेषित करने के संबंध में निर्देश।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत सत्र 2022–23 में विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्ति योजनाओं (पूर्व व उत्तर मैट्रिक) हेतु प्रस्ताव शाला दर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल के माध्यम से संस्थाप्रधान द्वारा ऑनलाइन अग्रेषित किए जाने के निर्देश प्रदान किए गए थे जिसकी अंतिम तिथि निम्नानुसार संशोधित की जाती है–

क्र.सं.	विवरण	अंतिम तिथि
(अ)	संस्थाप्रधान द्वारा शालादर्पण पोर्टल पर वांछित सूचनाएँ ऑनलाइन अपडेट पश्चात सबमिट/लॉक करने की अंतिम तिथि	15.11.2022
	Auto Approved प्रस्तावों की जाँच करने की अंतिम तिथि	22.11.2022
(ब)	जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मु.) द्वारा शालादर्पण पोर्टल पर ऑनलाइन अपडेट पश्चात अनुमोदित/सत्यापित करने की अंतिम तिथि	30.11.2022
	जि.शि.अ. माध्यमिक (मुख्यालय) द्वारा Auto Process हुए प्रस्तावों की जाँच करने की अंतिम तिथि	10.12.2022

- पोर्टल पर अवलोकन करने से ज्ञात हुआ है कि विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं में योजना के वर्ग (कैटेगरी) में कुल नामांकित विद्यार्थियों की तुलना में योजना के कुल पात्र विद्यार्थी एवं विद्यालय द्वारा लॉक/अग्रेषित आवेदनों की संख्या में बहुत अधिक अंतर है जिसे शासन ने गंभीरता से लिया है। उक्त क्रम में पुनः निर्देशित किया जाता है कि उक्त अंतर को यथा संभव कम करते हुए यह सुनिश्चित करें कि योजना की पात्रता रखने वाला कोई भी विद्यार्थी योजना के लाभ से वंचित ना रहे, यदि कोई भी पात्र विद्यार्थी योजना के लाभ से वंचित रहता है तो संबंधित संस्थाप्रधान का दायित्व निर्धारित किया जाएगा।
- यदि विद्यालय छात्रवृत्ति प्रभारी ने किसी छात्र को किसी भी योजना के लिए स्वीकार व अस्वीकार भी नहीं किया तो किसी भी योजना के लिए पात्र होने पर सिस्टम उस छात्र को अंतिम तिथि 15.11.2022 समाप्त होने के बाद उस योजना हेतु स्वतः पात्र कर देगा जिसकी समस्त जिम्मेदारी संस्थाप्रधान की होगी।
- Auto Approved से पहले विद्यालय स्तर पर (छात्रवृत्ति प्रभारी प्री/पोस्ट) एवं संस्थाप्रधान द्वारा प्रस्तावों की शत प्रतिशत जाँच की जाएगी।
- Auto Process की प्रक्रिया उपरान्त Auto Approved प्रस्तावों की संबंधित विद्यालय के छात्रवृत्ति प्रभारी द्वारा शत–प्रतिशत जाँच की जाएगी एवं संस्थाप्रधान द्वारा भी जाँच उपरान्त प्रमाण–पत्र जारी करना होगा जिसके लिए संस्थाप्रधान को अंतिम तिथि उपरान्त सात दिवस का समय दिया जाएगा।
- यदि आवेदकों को स्कूल से लॉक होने के बाद दी गई समयावधि में

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक मुख्यालय द्वारा अनुमोदित/सत्यापित नहीं किया जाता है तो इन आवेदकों को सिस्टम द्वारा दिनांक 30.11.2022 के पश्चात स्वतः अनुमोदित किया जाएगा। जिसकी समस्त जिम्मेदारी आपकी रहेगी।

- जिला शिक्षा अधिकारी (माध्य.) मुख्यालय द्वारा Auto Process हुए प्रस्तावों में से 25% प्रस्ताव को पुनः Random आधार पर बिल बनाने/भुगतान प्रक्रिया से पूर्व जाँच की जाएगी। Auto Process के प्रस्तावों की पुनः जाँच हेतु अंतिम तिथि उपरान्त 10 दिवस का समय दिया जाएगा।

उपर्युक्त के संबंध में श्रीमान अतिरिक्त मुख्य महोदय द्वारा स्पष्ट निर्देश प्रदान किए गए है कि कोई भी पात्र विद्यार्थी योजना के लाभ से वंचित ना रहे। यदि कोई भी पात्र विद्यार्थी योजना के लाभ से वंचित रहता है तो संबंधित संस्थाप्रधान व संबंधित अधिकारी का उत्तरदायित्व निर्धारित किया जाएगा।

● **(गौरव अग्रवाल)** निदेशक, आइ.ए.एस., माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. शिक्षा सत्र 2022-23 में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम का 'टाइम-फ्रेम'

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/सी.एफ./3664/सीएम घोषणा/शैक्षिक भ्रमण/2019-20/74 दिनांकः 09.11.2022 ● (1) संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा (समस्त) (2) जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा (समस्त) ● विषय : शिक्षा सत्र 2022-23 में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम का 'टाइम-फ्रेम'।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक भ्रमण के संबंध में योजना एवं वित्तीय प्रावधान राज्य सरकार के पत्रांक प.1(17) 9 शिक्षा-1/प्राशि/2010 दिनांक 01.09.2011 के द्वारा स्वीकृत किया गया। इसकी पालना में सत्र 2022-23 के लिए शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम का टाइम फ्रेम जारी किया जा रहा है। योजना के अनुसार राजकीय विद्यालयों में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अंतर जिला शैक्षिक भ्रमण का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। वित्तीय वर्ष 2022-23 में अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए स्वीकृत प्रावधान के अनुसार राशि अलग से जारी की जा रही है। अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण का दायित्व जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारंभिक शिक्षा तथा सर्किल आर्गनाइजर सीओ स्काउट एवं गाइड (नोडल अधिकारी) को दिया जाता है। कार्यक्रम की क्रियान्विति निम्नानुसार की जानी है-

क्र.सं.	कार्यक्रम	तिथि/अवधि
01	जिशिअ. मुख्यालय प्रारंभिक शिक्षा कार्यालय में संस्थाप्रधान के माध्यम से छात्र-छात्राओं के आवेदन प्राप्त करना।	20.11.2022 तक
02	जिशिअ. मुख्यालय प्राशि. द्वारा प्राप्त आवेदन पत्रों में से वरीयता के आधार पर निर्धारित संख्या में छात्र-छात्राओं का चयन कर संबंधित को सूचित करना।	30.11.2022 तक
03	संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा से अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम का अनुमोदन प्राप्त करना।	10.12.2022 तक
04	पाँच दिवसीय अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण की अवधि शीतकालीन अवकाश।	26.12.2022 से 30.12.2022 तक अथवा 01.01.2023 से 05.01.2023 तक

इसी क्रम में अतिरिक्त आयुक्त, राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद्, जयपुर के पत्रांकः राप्राशिप/जय/औशि/2014-15/8519/दिनांक 20.08.14 (छाया प्रति सलंग्न) के द्वारा छात्र-छात्राओं को शैक्षिक भ्रमण पर ले जाने में बरती जानी वाली सावधानियों के क्रम में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा जारी 28 जुलाई, 2014 को जारी किए गए दिशा-निर्देशों (छाया प्रति संलग्न) भी प्रसारित किए जाने है, जिनमें संलग्न पत्र के अनुसार Standars Safety measures के बिन्दु लिखे है। उक्त दिशा-निर्देशों की पालना में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं बरती जावें। समय-समय पर कार्यक्रम की प्रगति के बारे में इस कार्यालय को अवगत करवाया जाए तथा शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम की समाप्ति के तत्काल पश्चात लाभान्वित विद्यार्थियों की संख्या आगामी कार्य दिवस में इस कार्यालय को विभाग की ई-मेल आई.डी. shakshikcelledu@gmail.com पर आवश्यक रूप से उपलब्ध करवाना सुनिश्चित कराए।

उपर्युक्तानुसार शैक्षिक भ्रमण योजना की क्रियान्विति सुनिचित कराए।

● संलग्न : उपर्युक्तानुसार

● **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.,** निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा एवं पं. राज विभाग बीकानेर।

3. प्रारंभिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में योजना।

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● विषयः प्रारंभिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में योजना।

विद्यार्थियों को शैक्षिक ज्ञान के साथ-साथ राज्य के परिवेश, भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक स्थिति, ऐतिहासिक स्थल एवं सांस्कृतिक स्थलों की व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध करवाई जानी भी उपयोगी सिद्ध हो सकती है, इस हेतु योजना निम्नानुसार है-

1. उद्देश्यः-

1. राज्य के ऐतिहासिक/सांस्कृतिक/प्राकृतिक धरोहरों से परिचित

करवाना।

2. स्थापत्य कला की जानकारी कराना।
3. विद्यार्थियों को प्राकृतिक धरा का आनंद उठाने का अवसर प्रदान करना।
4. विद्यार्थियों को सामुदायिक जीवन से ओत-प्रोत करना।
5. विद्यार्थियों में पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त अन्य ज्ञान की वृद्धि करना।

2. शैक्षिक भ्रमण:- अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण एवं विद्यार्थी योग्यता।

1. भ्रमण अवधि

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 7 व 8 के विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष दीपावली अवकाश में राज्य के अन्य जिले में 5 दिवसीय राजस्थान दर्शन कार्यक्रम अन्तर्गत शैक्षिक भ्रमण हेतु भेजा जाएगा।

2. विद्यार्थी योग्यता:-

(अ) राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 7 व 8 के विद्यार्थी जिन्होंने गत परीक्षा कक्षा 6 व 7 में न्यूनतम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हो।

(ब) राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर सांस्कृतिक/साहित्यिक/खेलकूद/स्काउट एवं गाइड प्रतियोगिता में भाग लेकर सहभागी/विजेता रहे हो।

3. विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की संख्या:-

- अंतर जिला शैक्षिक भ्रमण-प्रत्येक जिले के 24 विद्यार्थी (कक्षा 7 के 12 व कक्षा 8 के 12) एवं 02 अध्यापक।
- नोट- मूल सूची के साथ जिला स्तर पर न्यूनतम 06 विद्यार्थियों की आरक्षित सूची भी तैयार की जाए ताकि मुख्य सूची में से कोई विद्यार्थी अपरिहार्य कारण से भ्रमण पर नहीं जा सके तो आरक्षित सूची में से छात्र का चयन कर भ्रमण पर ले जाया जा सके ताकि निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।

4. अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए विद्यार्थियों का चयन पूर्णतः वस्तुनिष्ठ प्रणाली (Objective Pattern) के आधार पर निम्नानुसार किया जाएगा:-

(अ) प्रतिभावान (Scholar) के आधार पर जिले की वरीयता से प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के 6+6 छात्र कुल 12 (प्रथम एवं द्वितीय तथा तृतीय) का चयन होगा।

(ब) गतिविधियाँ (Activities) राज्य पुरस्कार/तृतीय सोपान प्राप्त स्काउट एवं गाइड प्रतियोगिताओं में सहभागिता के आधार पर 12 विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा।

नोट- कुल 24 विद्यार्थियों का दल होगा। चयन हेतु छात्र-छात्रा द्वारा गत परीक्षा में प्राप्तांक प्रतिशत के आधार पर गणना की जाएगी।

05. विद्यार्थियों से आवेदन प्राप्त करना एवं चयन प्रक्रिया:-

अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण- जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) प्रारंभिक शिक्षा द्वारा संस्थाप्रधान के माध्यम से प्रतिवर्ष विभाग द्वारा निर्धारित समय पर प्राप्त आवेदन पत्रों का अवलोकन कर निर्धारित मेरिट प्रक्रिया के द्वारा शैक्षिक भ्रमण हेतु विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। चयनित विद्यार्थियों को शीतकालीन अवकाश के समय राज्य के अन्य जिलों के लिए ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व के स्थानों पर 5 दिवस के लिए भ्रमण पर भेजा जाएगा।

06. यात्रा व्यय:- विद्यार्थियों की यात्रा का संपूर्ण व्यय राज्य सरकार वहन करेगी। इस हेतु बजट राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध करवाया जाएगा। यह बजट संबंधित नोडल अधिकारी को आवंटित किया जाएगा जो संबंधित दिशा-निर्देशों एवं वित्तीय नियमों की पालना करते हुए व्यय करेगा। अध्यापक की यात्रा का सम्पूर्ण व्यय यात्रा भत्ता नियमों के तहत राजकीय मद से व्यय होगा। यह विद्यार्थियों के व्यय में सम्मिलित नहीं होगा तथा समस्त लेखे विधिवत संधारित करते हुए व्यय विवरण सहायक लेखाधिकारी योजना एवं लेखाधिकारी बजट प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर को नियमानुसार यथा समय प्रस्तुत करेंगे।

07 नोडल अधिकारी:-

अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण- जिला शिक्षा अधिकारी (मु.) प्रारंभिक शिक्षा तथा सर्किल आर्गेनाइजर स्काउट/गाइड द्वारा भ्रमण की योजना का निर्माण किया जाएगा तथा अपने जिले में आने वाले दल के भ्रमण तथा आवास आदि की व्यवस्था की जाएगी।

08 राजस्थान दर्शन एवं सांस्कृतिक यात्रा:-

प्रारंभिक/मा.शि. विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में अनुमानित व्यय का विवरण-

(अ) विभिन्न मदों में अनुमानित व्यय हेतु विवरण प्रति विद्यार्थी प्रस्तावित व्यय (रुपयों में) किराया- 2000/-, भोजन-800/-, अल्पाहार-300/-, आवास-600/-, स्टेशनरी-200/- अन्य व्यय-233/-, कुल प्रति विद्यार्थी-4133/-

(ब) प्रतियोगिताओं में प्रथम से तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार राशि नियमानुसार देय होगी-

प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को-350/-

द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को-250/-

तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को-200/-

09 भ्रमण के दौरान ठहराव:- भ्रमण के दौरान समस्त विद्यार्थी एवं एस्कोर्ट शिक्षक जिला मुख्यालय पर स्थित स्काउट हैड क्वार्टर पर ठहरेंगे।

10 अध्यापक का चयन:- अध्यापक का चयन-स्काउट/गाइड अध्यापक को प्राथमिकता दी जाएगी।

11 यात्रा दलों की व्यवस्था एवं पर्यवेक्षण:- संभाग स्तर पर संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा तथा सहायक राज्य संगठन आयुक्त (ए-एस-ओ-सी) यात्राओं का अनुमोदन तथा उनके परिक्षेत्र में आने वाले दलों की यात्रा एवं व्यवस्था का परिवीक्षण करेंगे। व्यय का सम्पूर्ण समायोजन कर अपने कार्यालय के सहायक लेखाधिकारी के जाँच उपरांत प्रेषित करेंगे। एक जिले के दल व भ्रमण का कार्यक्रम निर्धारण संबंधित संभाग के संयुक्त निदेशक एवं सहायक राज्य संगठन आयुक्त द्वारा किया जाएगा।

12 विभिन्न प्रतियोगिताएँ:- भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों की कुछ

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

प्रतियोगिताएँ यथा-भ्रमण आलेख क्विज, सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ आदि भी आयोजित की जाए तथा प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण भी किया जाएगा।

13. **प्रतिवेदनः-** अन्तर्जिला दर्शन हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थी विधिवत यात्रा वृत्तान्त लिखेंगे, इस हेतु उन्हें एक डायरी एवं एक बॉल पैन उपलब्ध कराया जाएगा। सभी अध्यापक संभागीयों में से किसी एक को मुख्य प्रतिवेदक यात्रा के प्रबंधक नोडल अधिकारी द्वारा नामित किया जाएगा जो यात्रा उपरांत सभी यात्रा सहभागी अध्यापकों/विद्यार्थियों से उनकी रिपोर्ट प्रस्तुत कर समेकित प्रतिवेदन तैयार कर संबंधित नोडल अधिकारी को प्रस्तुत करेंगे।

• **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.,** निदेशक प्रारंभिक शिक्षा एवं पं. राज विभाग बीकानेर।

शिक्षा सत्र 2022-23 में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा हेतु छात्र/छात्रा आवेदन पत्र

(शैक्षिक सत्र 2021-22 की उपलब्धि के आधार पर)

1. छात्र/छात्रा का नाम.....
2. पिता का नाम.....
3. जन्म तिथि .....
4. कक्षा (जिसमें अध्ययनरत है).....
5. विद्यालय का नाम.....
6. विद्यालय स्कॉलर रजिस्टर क्रमांक.....
7. घर/पत्र व्यवहार का पताः.....
8. घर का फोन नम्बर.....मोबाइल नं.....
9. शैक्षिक सत्र 2021-22 में उत्तीर्ण परीक्षा का विवरण-

फोटो

कक्षा	कुल अंक	प्राप्तांक	उत्तीर्ण प्रतिशत
कक्षा 6 (कक्षा 7 में अध्ययनरत)			
कक्षा 7 (कक्षा 8 में अध्ययनरत)			

10. शैक्षिक सत्र 2021-22 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित खेलकूद गतिविधि में संभागित्व (प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करें) :-

स्तर	गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
1. राष्ट्र स्तर		
2. राज्य स्तर		

11. शैक्षिक सत्र 2021-22 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधि में संभागित्व (प्रमाण-पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करे):-

स्तर	गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
1. राष्ट्र स्तर		
2. राज्य स्तर		

आवेदन पत्र के साथ मेरे द्वारा आवश्यक प्रमाणित पत्र संलग्न कर दिए गए है। आवेदन पत्र में अंकित सभी तथ्य पूर्णतया सत्य है। मैं अंतर्जिला शैक्षिक भ्रमण हेतु जाना चाहता/चाहती हूँ।

छात्र/छात्रा के हस्ताक्षर

अभिभावक द्वारा सहमति

मैं नाम.....अपने पुत्र/पुत्री नाम..... को विभाग द्वारा आयोजित अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण पाँच दिवसीय दर्शन यात्रा पर भेजने के लिए अपनी सहमति प्रदान करता हूँ। मेरा पुत्र/पुत्री यात्रा हेतु पूर्णतया स्वस्थ है तथा किसी गंभीर रोग से ग्रसित नहीं है।

हस्ताक्षर

नाम अभिभावक

संस्थाप्रधान द्वारा प्रमाणित

आवेदन पत्र में अंकित सभी सूचनाओं एवं प्रलेखों की सत्यता की जाँच स्वयं मेरे द्वारा कर ली गई है। छात्र/छात्रा के अन्तर्जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए अनुशंसा की जाती है।

(हस्ताक्षर संस्थाप्रधान मय मोहर)

4. विद्यार्थी कोष/विकास कोष के सामयिक, समुचित एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर में गुणवत्ता अभिवृद्धि हेतु प्रभावी उपयोग किए जाने बाबत्।

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांकः शिविरा/माध्य/मा-स/SDMC/22423/2015-22/440 दिनांकः 31.10.2022 •समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा। • विषयः विद्यार्थी कोष/विकास कोष के सामयिक, समुचित एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर में गुणवत्ता अभिवृद्धि हेतु प्रभावी उपयोग किए जाने बाबत । • प्रसंगः समसंख्यक परिपत्र दिनांक : 28.02.2015, 30.09.2015 एवं 16.11.2015।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि प्रासंगिक पत्रों/परिपत्रों के माध्यम से विद्यालय को विकसित करने हेतु विद्यार्थी कोष/विकास कोष की राशि को व्यय करने की प्रक्रिया को पारदर्शी एवं सरलीकृत किया गया था। तदुपरांत प्रत्येक वर्ष के शिविरा पंचांग में सत्र के प्रथम कार्य दिवस को एसडीएमसी की बैठक आयोजित कर विद्यार्थी हित में सत्र पर्यन्त किए जाने वाले कार्यों की योजना का अनुमोदन करवाने सत्र में 15 जुलाई को उक्त प्रस्तावों हेतु आवश्यक लेखांकन पूर्ण करने तथा 16 अगस्त तक निविदा कार्यवाही पूर्ण करने हेतु निर्देशित किया जाता है।

राजकीय विद्यालयों में छात्र कोष (परिवर्तित नाम 'विद्यार्थी कोष') तथा विकास कोष के सामयिक, समुचित एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर में गुणवत्ता अभिवृद्धि के उद्देश्य से प्रभावी उपयोग किया जाना विद्यार्थी हित में अत्यंत आवश्यक है।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

यह संज्ञान में आया है कि कतिपय विद्यालयों में विद्यार्थी कोष/विकास कोष की राशि का उपयोग नहीं किया जाता है। इन कोषों में पर्याप्त धनराशि उपलब्ध होने के बावजूद विद्यालयों में आवश्यक भौतिक सुविधाओं (यथा- रंग-रोगन, शौचालय, कक्षा-कक्षों की सामान्य मरम्मत, फर्नीचर, ग्रीन बोर्ड इत्यादि) एवं शैक्षिक सुविधाओं (यथा- पुस्तकालय, शिक्षण सहायक सामग्री, खेल सामग्री, कम्प्यूटर, प्रिंटर इत्यादि) का अभाव रहता है। जिसका सीधा प्रभाव विद्यालय की अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया में पड़ता है। उक्त स्थिति संस्थाप्रधान की विद्यार्थी हित में व्यवहारिक सोच नहीं रखने एवं प्रशासनिक अक्षमता को उजागर करती है। वहीं दूसरी तरफ जिले के अधिकारियों की पर्यवेक्षणीय उदासीनता को भी प्रकट करती है।

निर्देशित किया जाता है कि अपने अधीनस्थ विद्यालयों में विद्यार्थी कोष/विकास कोष की राशि को व्यय करने संबंधित प्रासंगिक पत्रों/परिपत्रों की पालना सुनिश्चित कराएँ एवं स्वयं व अधीनस्थ अधिकारियों द्वारा संबलन हेतु विद्यालय के भ्रमण के दौरान विद्यार्थी कोष/विकास कोष के साथ आय-व्यय का भी अवलोकन करें। जिन विद्यालयों में इन कोषों में राशि की उपलब्धता के बावजूद कतिपय सुविधाओं का अभाव पाए जाने को गंभीरता से लेते हुए संबंधित संस्थाप्रधान के विरुद्ध नियमानुसार अनुशासनात्मक कार्यवाही प्रक्रिया प्रारंभ की जाए। इसे सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करें।

• संलग्न : यथोक्त। नोटः- प्रसंगानुसार सूमसंख्यक परिपत्रों का भी अध्ययन करें।

• **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.**, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

5. विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्ति हेतु सत्र 2022-23 के लिए शालादर्पण पोर्टल पर छात्रवृत्ति आवेदन अग्रेषित करने के संबंध में निर्देश।

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांकः शिविरा-माध्य/छाप्रोप/ए/शालादर्पण/2022-23/85 दिनांकः 17.11.2022 • समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक/प्रारंभिक-मुख्यालय • विषय : विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्ति हेतु सत्र 2022-23 के लिए शालादर्पण पोर्टल पर छात्रवृत्ति आवेदन अग्रेषित करने के संबंध में निर्देश।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत सत्र 2022-23 में विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्ति योजनाओं (पूर्व व उत्तर मैट्रिक) हेतु प्रस्ताव शाला दर्पण पोर्टल के स्टेट स्कूल स्कॉलरशिप मॉड्यूल के माध्यम से संस्थाप्रधान द्वारा ऑनलाइन अग्रेषित किए जाने के निर्देश प्रदान किए गए थे जिसकी अंतिम तिथि निम्नानुसार संशोधित की जाती है-

क्र.सं.	विवरण	अंतिम तिथि
(अ)	संस्थाप्रधान द्वारा शालादर्पण पोर्टल पर वांछित सूचनाएँ ऑनलाइन अपडेट पश्चात सबमिट/लॉक करने की अंतिम तिथि	30.11.2022
	Auto Approved प्रस्तावों की जाँच करने की अंतिम तिथि	05.12.2022
(ब)	जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मु.) द्वारा शालादर्पण पोर्टल पर ऑनलाइन अपडेट पश्चात अनुमोदित/सत्यापित करने की अंतिम तिथि	10.12.2022
	जि.शि.अ. माध्यमिक (मुख्यालय) द्वारा Auto Process हुए प्रस्तावों की जाँच करने की अंतिम तिथि	15.12.2022

- यदि आवेदकों को स्कूल से लॉक होने के बाद दी गई समयावधि में जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक मुख्यालय द्वारा अनुमोदित/सत्यापित नहीं किया जाता है, तो इन आवेदकों को सिस्टम द्वारा दिनांक 10.12.2022 के पश्चात स्वतः अनुमोदित किया जाएगा। जिसकी समस्त जिम्मेदारी आपकी रहेगी।
- जिला शिक्षा अधिकारी (माध्य.) मुख्यालय द्वारा Auto Process हुए प्रस्तावों में से 25% प्रस्ताव को पुनः Random आधार पर बिल बनाने/भुगतान प्रक्रिया से पूर्व जाँच की जाएगी। Auto Process के प्रस्तावों की पुनः जाँच हेतु अंतिम तिथि उपरांत 05 दिवस का समय दिया जाएगा।

उपरोक्त के संबंध में श्रीमान अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय द्वारा स्पष्ट निर्देश प्रदान किए गए है कि कोई भी पात्र विद्यार्थी योजना के लाभ से वंचित ना रहे। यदि कोई भी पात्र विद्यार्थी योजना के लाभ से वंचित रहता है तो संबंधित संस्थाप्रधान व संबंधित अधिकारी का उत्तरदायित्व निर्धारित किया जाएगा।

• **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.**, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर।

6. राजस्थान राज्य कर्मचारी सामान्य प्रावधायी निधि नियम, 2021 के नियम 14 के संबंध में स्पष्टीकरण बाबत।

• राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग, राजस्थान सरकार • क्रमांकः एफ. 1(8)/रि.टा.बे./पीएफ/लूज/2002/2482 दिनांकः 16.11.2022 • संयुक्त शासन सचिव, वित्त (बीमा) विभाग, शासन सचिवालय, जयपुर। • विषय : राजस्थान राज्य कर्मचारी सामान्य प्रावधायी निधि नियम, 2021 के नियम 14 के संबंध में स्पष्टीकरण बाबत।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत अनुरोध है कि जीपीएफ नियम 2021 के नियम 14 के अनुसार एक अभिदाता को वित्तीय वर्ष के प्रारंभ पर अपने खाते में जमा राशि का निम्नानुसार आहरण करने का प्रावधान किया गया है-

(अ) बिना कारण बताए आहरण की स्थिति में:-

क्र.सं.	आहरण प्रतिशत	सेवा अवधि
1.	10 प्रतिशत	5 वर्ष से 15 वर्ष तक सेवा पर
2.	30 प्रतिशत	15 वर्ष से अधिक किन्तु 25 वर्ष से कम सेवा पर
3.	40 प्रतिशत	25 वर्ष से अधिक किन्तु 30 वर्ष से कम सेवा पर

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

4.	50 प्रतिशत	30 वर्ष से अधिक सेवा पर (अधिकतम)
5.	90 प्रतिशत	अभिदाता की अधिवार्षिकी सेवानिवृत्ति से 60 माह अथवा उससे कम होने पर

(ब) कारण उल्लेखित करने की स्थिति में आहरणः

क्र. सं.	आहरण प्रतिशत	कारण
1.	50 प्रतिशत	1. अभिदाता स्वयं या उसके संतान की उच्च शिक्षा हेतु।
		2. वाहन क्रय।
		3. स्थाई उपभोग की वस्तुओं का क्रय।
		4. अभिदाता, उसके परिवार के सदस्यों या उस पर आश्रित माता-पिता की बीमारी पर व्यय।
		5. अन्य कारण जो राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर आदेशित किए जाए।
		नोट- आहरण की सीमा हेतु वास्तविक व्यय अथवा जमा का 50 प्रतिशत जो भी कम हो तक की सीमा में ही आहरण किया जा सकेगा।
2.	75 प्रतिशत	1. भवन निर्माण, भूखण्ड क्रय, आवास क्रय, फ्लेट क्रय निर्मित या अधिग्रहित भवन या आवास पुनर्निमाण, विस्तार, परिवर्धन, भूखण्ड पर भवन निर्माण
		2. अभिदाता की स्वयं या उसके पुत्रों/पुत्रियों की सगाई/विवाह हेतु।
		3. अन्य कारण जो राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर आदेशित किए जाए।

उपर्युक्त नियमों के क्रियान्वयन में विभागीय पोर्टल पर व्यवस्था की हुई है कि अभिदाता को वित्तीय वर्ष के प्रारंभ पर अपने जीपीएफ खाते में से जमा राशि के अधिकतम 75 प्रतिशत एवं सेवावधि 60 माह से कम रहने पर 90 प्रतिशत तक आहरण स्वीकृत किया जा सकेगा। उक्त सीमा तक राशि का आहरण एकमुश्त या एक से अधिक बार भी अभिदाता कर सकता है।

विभाग द्वारा नियम 14 की उपर्युक्त व्याख्या के विपरीत कतिपय अंशदाताओं द्वारा यह मांग की जा रही है कि वर्ष के प्रारंभ में उपलब्ध राशि के विरुद्ध अभिदाता चाहे जितनी बार आवेदन करे उसे हर बार 75 या 90 प्रतिशत तक आहरण स्वीकृत किया जाना चाहिए। यदि ऐसा किया जाता है तो कोई भी अभिदाता एक वर्ष में ही विगत वर्ष तक की जमा राशि आहरित कर सकता है।

राजस्थान राज्य कर्मचारी सामान्य प्रावधायी निधि नियम, 2021 के नियम 20 में नियमों के निर्वचन के संबंध में यदि कोई संदेह उत्पन्न होता है तो संबंधित नियम के निर्वचन हेतु प्रकरण राज्य सरकार के वित्त विभाग को निर्णय हेतु भिजवाए जाने का प्रावधान निहित है।

यह भी उल्लेखनीय है कि यदि वित्तीय वर्ष के प्रारंभिक शेष पर अधिकतम आहरण की सीमा नहीं रखी जाती है तो अभिदाता द्वारा बार-बार आहरण किया जाएगा जिससे एक ओर तो अभिदाता के जीपीएफ खाते में अत्यंत न्यून राशि अवशेष रह जाएगी एवं बार-बार आहरण लिए जाने से अनेक भुगतान डेबिट प्राप्त होने से रिकॉर्ड संधारण में कठिनाई उत्पन्न होगी, जो विभाग एवं अभिदाता के हित में नहीं होगी।

● **(रामपाल परसोया)** अतिरिक्त निदेशक, राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग, राजस्थान सरकार।

7. राज्य सरकार की आदर्श एवं उत्कृष्ट विद्यालय योजनान्तर्गत चयनित विद्यालयों में उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं के निरीक्षण बाबत।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-मा/माध्य/म.गां.अनु./मॉनिटरिंग/61070/2018-19/77 दिनांक 07.11.2022 ● समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं पदेन बी.आर.सी.एफ., समग्र शिक्षा, समस्त पदेन पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी (पीईईओ)। ● विषय : राज्य सरकार की आदर्श एवं उत्कृष्ट विद्यालय योजनान्तर्गत चयनित विद्यालयों में उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं के निरीक्षण बाबत। ● प्रसंगः निजी सचिव, अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय की बैठक कार्यवाही विवरण क्रमांकः रास्कूलशिप/ जय/मॉनिटरिंग/समीक्षा बैठक/2022 दिनांक 16.09.2022 के क्रम में।

उपर्युक्त विषय एवं प्रसंगान्तर्गत लेख है कि राज्य सरकार की आदर्श एवं उत्कृष्ट विद्यालय योजनान्तर्गत चयनित विद्यालयों में उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं का निरीक्षण माह नवम्बर, 2022 में करना सुनिश्चित करें। उक्त विद्यालयों का निरीक्षण अग्रांकित दिशा-निर्देशों की पालना सुनिश्चित करते हुए किया जाना है-

1. आदर्श विद्यालयों का निरीक्षण मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी के द्वारा स्वयं किया जाना है तथा वे अपने ब्लॉक के कम से कम पाँच आदर्श विद्यालयों का निरीक्षण आवश्यक रूप से करेंगे।
2. उत्कृष्ट विद्यालयों का निरीक्षण सम्बन्धित पदेन पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारियों (पीईईओ) के द्वारा स्वयं किया जाना है।
3. शिक्षा अधिकारी संबंधित विद्यालयों का निरीक्षण करते हुए अपनी निरीक्षण रिपोर्ट उसी दिवस को निम्नांकित ऑनलाइन फीडिंग लिंक (गूगल फॉर्म लिंक) के माध्यम से अपलोड करना सुनिश्चित करेंगे।

आदर्श विद्यालय निरीक्षण लिंक : https://tinyurl.com/yjdsa6f8

उत्कृष्ठ विद्यालय निरीक्षण लिंक : https://tinyurl.com/322wuvdt

इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करें।

● संलग्न : उपर्युक्तानुसार

● **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.**, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

आदर्श विद्यालय निरीक्षण प्रपत्र

A. निरीक्षणकर्ता का विवरण

(निरीक्षणकर्ता अधिकारी अपना नाम, शालादर्पण आई.डी., पद एवं मोबाइल नम्बर अंकित करे।)

1. नाम अधिकारी...
2. शालदर्पण आई.डी. (स्टाफ विंडो की स्टाफ आई.डी.)
   ....

3. पद.....
4. मोबाइल नम्बर.....

B विद्यालय का विवरण

विद्यालय के एन.आई.सी. कोड तथा आधारभूत सुविधाओं का विवरण अंकित करें। (आधारभूत सुविधाओं से संबंधित उत्तर हाँ/नहीं में दें।)

5. एन.आई.सी. (NIC CODE) कोड.....
6. क्या विद्यालय में पर्याप्त कक्षा-कक्ष उपलब्ध है? (पर्याप्त कक्षा-कक्ष प्रति 40 विद्यार्थियों पर एक कक्षा-कक्ष की उपलब्धता अथवा विद्यार्थियों को बैठाने हेतु आवश्यक कक्षा-कक्ष उपलब्ध)
   Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं
7. क्या विद्यालय में छात्र-छात्राओं हेतु पृथक-पृथक क्रियाशील शौचालय उपलब्ध है? (क्रियाशील का अर्थ-बिना टूटी सीट, नियमित सफाई, पानी की निकासी की कार्यशील व्यवस्था, पानी की सुविधा, बंद करने लायक दरवाजा, ताले में बंद नहीं इत्यादि)
   Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं
8. क्या विद्यालय में विद्युत कनेक्शन उपलब्ध एवं क्रियाशील है? (क्रियाशील - विद्यालय परिसर के समस्त कक्षा-कक्षों में पंखे, बल्ब, ट्यूबलाइट इत्यादि उपयोग की स्थिति में है)
   Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं
9. क्या विद्यालय में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है?
   Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं
10. क्या विद्यालय में स्वच्छ एवं शुद्ध पीने योग्य पानी की व्यवस्था है?
    Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं
11. क्या विद्यालय में उपयुक्त खेल मैदान है?
    Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं
12. क्या विद्यालय में क्रियाशील आई.सी.टी. लेब उपलब्ध है?
    Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं
13. क्या विद्यालय में समुचित चारदीवारी है?
    Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं
14. क्या विद्यालय में रंग-रोगन करवाया गया है?
    Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं

उत्कृष्ट विद्यालय निरीक्षण प्रपत्र

A. निरीक्षणकर्ता का विवरण

(निरीक्षणकर्ता अधिकारी अपना नाम, शालादर्पण आई.डी., पद एवं मोबाइल नम्बर अंकित करे।)

1. नाम अधिकारी.....
2. शालदर्पण आई.डी. (स्टाफ विंडो की स्टाफ आई.डी.)
   .....
3. पद.....
4. मोबाइल नम्बर.....

B विद्यालय का विवरण

विद्यालय के एन.आई.सी. कोड तथा आधारभूत सुविधाओं का विवरण अंकित करें। (आधारभूत सुविधाओं से संबंधित उत्तर हाँ/नहीं में दें।)

5. एन.आई.सी. (NIC CODE) कोड.....
6. क्या विद्यालय में पर्याप्त कक्षा-कक्ष उपलब्ध है? (पर्याप्त कक्षा-कक्ष प्रति 40 विद्यार्थियों पर एक कक्षा-कक्ष की उपलब्धता अथवा विद्यार्थियों को बैठाने हेतु आवश्यक कक्षा-कक्ष उपलब्ध)
   Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं
7. क्या विद्यालय में छात्र-छात्राओं हेतु पृथक-पृथक क्रियाशील शौचालय उपलब्ध है? (क्रियाशील का अर्थ-बिना टूटी सीट, नियमित सफाई, पानी की निकासी की कार्यशील व्यवस्था, पानी की सुविधा, बंद करने लायक दरवाजा, ताले में बंद नहीं इत्यादि)
   Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं
8. क्या विद्यालय में विद्युत कनेक्शन उपलब्ध एवं क्रियाशील है? (क्रियाशील - विद्यालय परिसर के समस्त कक्षा-कक्षों में पंखे, बल्ब, ट्यूबलाइट इत्यादि उपयोग की स्थिति में है)
   Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं
9. क्या विद्यालय में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है?
   Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं
10. क्या विद्यालय में स्वच्छ एवं शुद्ध पीने योग्य पानी की व्यवस्था है?
    Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं
11. क्या विद्यालय में उपयुक्त खेल मैदान है?
    Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं
12. क्या विद्यालय में आई.सी.टी. लेब उपलब्ध है?
    Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं
13. क्या विद्यालय में समुचित चारदीवारी है?
    Mark Only one oavl. ❒ हाँ ❒ नहीं

8. SMC/SDMC बैंक खातों को सत्यापित कर शाला दर्पण पोर्टल पर सूचना प्रतिमाह अपडेट करने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/मा-स/SDMC/2423/2015-22/447 दिनांक 18.11.2022 ●समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा। ●विषय : SMC/SDMC बैंक खातों को सत्यापित कर शाला दर्पण पोर्टल पर सूचना प्रतिमाह अपडेट करने के संबंध में। ● प्रसंगः इस कार्यालय का पूर्व पत्रांकः शिविरा-मा/माध्यमिक/शालादर्पण/60306(3)/2017-18/301 दिनांक : 18.11.2021 एवं 457/02.12.2021 के क्रम में।

प्रासंगिक पत्रों दिनांकः 18.11.2021 एवं 02.12.2021 द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर प्रारंभ किए गए फण्ड मैनेजमेंट मॉड्यूल (Fund

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

Management Module) में बैंक खातों का सत्यापन करने एवं बैंक खातों की प्रविष्टियों के प्रमाणीकरण एवं समय-समय पर सूचना अपडेशन हेतु निर्देश मय यूजर मैन्यूअल जारी किए गए है। उक्त मॉड्यूल पर अब तक अनेक विद्यालयों द्वारा विवरण दर्ज नहीं किया गया है अथवा उनका सत्यापन नहीं करवाया गया है।

पूर्व निर्देशानुसार शाला दर्पण पोर्टल पर Fund Management Module के माध्यम से विद्यालय में संचालित खातों का विवरण दर्ज कर द्वितीय सत्यापन हेतु संबंधित पीईईओ/सीबीईओ कार्यालय के सम्बन्धित कार्मिक एवं अधिकारी के द्वारा विद्यालयों के खातों की पुष्टि की जानी है। विद्यालयों के खाते की पुष्टि किस स्तर पर लंबित है, उसे फंड मैनेजमेंट टैब में 'विद्यालय बैंक खाता विवरण' की स्थिति में देखा जा सकता है। अतः तदनुसार लंबित का निस्तारण करवाया जाना सुनिश्चित करे एवं दिनांक 30.11.2022 तक समस्त खातों को सत्यापित करते हुए निम्नानुसार कार्यवाही करवाना सुनिश्चित करेंगे।

उक्त मॉड्यूल में विद्यालय के समस्त बैंक खातों में 01 अप्रेल, 2022 का ऑपनिंग बैलेंस अंकित करते हुए संलग्न यूजर मैन्युअल के अनुसार प्रत्येक माह के लिए गत माह के प्रारंभ में उपलब्ध राशि, माह में व्यय एवं माह के अंत में शेष राशि की प्रविष्टि का कार्य माह की 05 तारीख तक नियमित रूप से करवाया जाना है, जिन विद्यालयों ने पूर्व में उक्त मॉड्यूल में प्रविष्टियाँ दिनांक : 01 अप्रेल, 2021 के आधार पर कर दी थी, वर्तमान में उसे अनलॉक कर दिया गया है। अतः उक्तानुसार आवश्यक संशोधन कर प्रविष्टि करना सुनिश्चित करावें।

आपको निर्देशित किया जाता है कि अपने अधीनस्थ समस्त विद्यालयों एवं कार्यालयों से इसकी प्रतिमाह पालना सुनिश्चित करावें। इसमें किसी प्रकार की शिथिलता नहीं बरती जावें।

- संलग्नः यूजर मैन्यूअल।

• **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.**, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

9. 2022-23 के लिए हितकारी निधि वार्षिक अंशदान बाबत।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/मा./हि.नि./28203/2022-23 दिनांक 21.11.2022 ● निदेशक प्रारंभिक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर; निदेशक, समग्र शिक्षा, स्कूल शिक्षा विभाग, शिक्षा संकुल, जयपुर; समस्त संयुक्त निदेशक, शिक्षा विभाग; समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी; समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) (माध्यमिक/प्रारंभिक); समस्त डाइट प्राचार्य; समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी; समस्त विशिष्ट संस्थाएँ; उप-पंजीयक कार्यालय ● विषय : 2022-23 के लिए हितकारी निधि वार्षिक अंशदान बाबत।

राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.21(7) शिक्षा-2/हितकारी निधि/2017 दिनांक 15.06.2018 के द्वारा अनुमोदन उपरांत हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान वर्ष 2022-23 का शिक्षा विभाग के समस्त राजपत्रित एवं अराजपत्रित संवर्ग (प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा) के कार्मिकों के वेतन विपत्र माह दिसम्बर, 2022 देय जनवरी, 2023 पूर्व निर्धारित दर से कटौती कर भिजवाया जाना है, वेतन से कटौती बाबत दिशा निर्देश इस कार्यालय के पत्र दिनांक 10.11.2022 द्वारा जरिए मेल प्रेषित किए जा चुके हैं, अतः समस्त आहरण वितरण अधिकारी अपने अधीनस्थ समस्त कार्मिकों के वेतन से कटौती की जानी सुनिश्चित करें।

राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित वार्षिक अंशदान की दरें:-

1. समस्त राजपत्रित अधिकारी (स्कूल व्याख्याता सहित) — रुपये 500/- प्रतिवर्ष
2. समस्त अराजपत्रित कार्मिक (अध्यापक एवं सहायक कर्मचारी सहित) — रुपये 250/- प्रतिवर्ष

हितकारी निधि कल्याणकारी योजनाएँ

इस कल्याणकारी योजनान्तर्गत 2018-19 से नियमित अंशदाता को ही लाभ प्राप्त हो सकेगा।

1. सेवा में रहते कार्मिक के निधन पर उसके आश्रितों द्वारा आवेदन करने पर आर्थिक सहायता। 1,50,000/-
2. शिक्षा विभाग के कार्मिकों के 500 बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर सहायता। (आवेदन आमंत्रित करने पर) 10,000/-
3. एक मुश्त छात्रवृत्ति योजनान्तर्गत शिक्षा कर्मियों के पुत्र/पुत्री के राजकीय विद्यालय में अध्ययन करते हुए 70 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त करने पर छात्रवृति। (राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा आयोजित Xth के) 950 एवं 50 विशिष्ट उपाध्याय, संस्कृत के छात्र/छात्राओं को) (आवेदन आमंत्रित करने पर) 11,000/-
4. बालिका उपहार योजनान्तर्गत (सेवाकाल में एक बार) पुत्री के विवाह पर प्रति वर्ष 1000 प्रकरणों में। 11,000/-
5. मंत्रालयिक एवं च.श्रे.कर्म. को भारत भ्रमण सुविधा के तहत राज्य/राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित होने पर अधिकतम सहायता। 12,000/-
6. बालिका शिक्षा हेतु ऋण। 50,000/-

हितकारी निधि की सफलता के लिए आपके अधीनस्थ कार्यालयों/विद्यालयों में इस पत्र की प्रतिलिपि मय आपके निर्देशों के भिजवाए, ताकि सफल परिणाम प्राप्त हो सके। अंशदान की कटौती होने के पश्चात निर्देशानुसार ECS Cash Book एवं कटौती शिड्यूल की प्रति अध्यक्ष, हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम से भिजवाई जानी है, कटौती शिड्यूल में कार्मिक के I.D. संख्या का आवश्यक रूप से उल्लेख करें, क्योंकि यही I.D. कार्मिक का खाता संख्या है।

अतः समस्त आहरण वितरण अधिकारी, हितकारी निधि अंशदान माह दिसम्बर, 2022 देय वेतन जनवरी, 2023 का निर्देशानुसार वेतन से कटौती कर भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।

• **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.**, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

Rajasthan Education Department

10. हितकारी निधि के अन्तर्गत माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र आमंत्रण : अंतिम तिथि 28.12.2022

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/हिनि/28129/2022-23 दिनांक 21.11.2022 ● समस्त संयुक्त निदेशक, समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा), समस्त प्राचार्य डाइट, समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ। ● विषय : हितकारी निधि के अन्तर्गत माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र आमंत्रण : अंतिम तिथि 28.12.2022

हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा/प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के अंतर्गत शिक्षा विभाग में राजकीय सेवा में कार्यरत समस्त वर्ग के शिक्षा अधिकारियों/व्याख्याता (स्कूल शिक्षा)/अध्यापकों/ मंत्रालयिक /सहायक कर्मचारियों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनार्थ वित्तीय सहायता दिए जाने बाबत संलग्न प्रारूप-पत्र में प्रार्थना पत्र आमंत्रित किए जाते हैं। प्रार्थी द्वारा प्रार्थना-पत्र भरते समय एवं संबंधित अधिकारी द्वारा अग्रेषित करते समय निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखकर अग्रेषित किए जावें:-

1. यह योजना राजस्थान राज्य के शिक्षा विभाग माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा में कार्यरत समस्त वर्ग के कार्मिकों के बच्चों के लिए ही लागू होगी।
2. व्यावसायिक शिक्षा : इंजीनियरिंग, मेडिकल एवं मैनेजमेंट, बी.एड., सी.ए., एस.टी.सी., नर्सिंग, फार्मेसी पाठ्यक्रम में अध्ययनरत को ही वित्तीय सहायता देय होगी। निर्धारित पाठ्यक्रमों का विवरण निम्नानुसार है-

(अ) इंजीनियरिंग में स्नातक पाठ्यक्रम (चार वर्ष)-(आठ सेमेस्टर) : डिसिपलिन ऑफ सिविल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रोनिक्स एवं टेली-कम्यूनिकेशन, कम्प्यूटर साइन्स एण्ड इंजीनियरिंग, आटोमोबाइल, आर्केटैक्चर, टेक्सटाईल, माइनिंग, रबर टैक्नोलॉजी, केमिकल इंजीनियरिंग, इन्स्ट्रुमेन्टेशन एण्ड कंट्रोल, प्रिंटिंग, केमिकल टेक्नोलॉजी, मेटेलर्जीकल इंजीनियरिंग, एयरोनोटिकल इंजीनियरिंग, प्रोडेक्शन टेक्नोलॉजी, शिप बिल्डिंग एण्ड फेब्रिकेशन टेक्नोलॉजी, नेवल आर्किटैक्चर, पैट्रोलियम इंजीनियरिंग।

(ब) मेडिकल (एलोपेथी), होम्योपेथी, आयुर्वेदिक फार्मेसी ऑफ मेडिसन्स एवं पशु आयुर्विज्ञान।

(स) उपर्युक्त पैरा (अ, ब) में उल्लेखित डिग्री (4 वर्ष), डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की अवधि तीन वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।

(द) डिप्लोमा पाठ्यक्रम, बी-फार्मा की अवधि दो वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।

(य) स्नातक पाठ्यक्रम के पश्चात मैनेजमेंट पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।

(र) बी.एड. तथा एस.टी.सी. पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष की मान्य है।

3. प्रार्थना-पत्र की सभी प्रविष्टियाँ स्वयं कर्मचारी/संस्थाप्रधान द्वारा भरी जानी चाहिए।
4. भुगतान किया गया वास्तविक शुल्क प्रार्थना-पत्र के कॉलम संख्या 12 में स्पष्ट रूप से अंकित करें। प्रार्थना-पत्र के साथ शुल्क की मूल रसीदें संलग्न करें। फोटोस्टेट प्रतियाँ स्वीकार्य नहीं होगी। समेकित भुगतान की रसीद यदि प्रस्तुत की जाती है तो उसका मदवार विवरण प्रस्तुत करने पर ही प्रार्थना-पत्र विचारणीय होगा।
5. सत्र 2022-23 में छात्र जिस महाविद्यालय में अध्ययनरत है, उस महाविद्यालय के प्रधानाचार्य का प्रमाण-पत्र संलग्न प्रारूप में संलग्न करें।
6. सहायता राशि मात्र ट्यूशन, पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला (लेबोरेटरी) शुल्क के भुगतान पर ही देय है। अतः अन्य मदों पर किए गए भुगतान एवं एक मुश्त में दर्शायी गई राशि पर सहायता देय नहीं होगी।
7. सहायता राशि एक शैक्षणिक सत्र तक ही सीमित है। राज्य कर्मचारी के बच्चों को वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र छात्र के शैक्षणिक सत्र 2022-23 में अध्ययनरत के लिए ही स्वीकार्य होंगे।
8. व्यावसायिक शिक्षा में सहायता हेतु परिवार के एक ही बच्चे के लिए प्रार्थना-पत्र स्वीकार्य होगा।
9. यह सहायता राशि वर्ष 2022-23 के लिए ही मान्य होगी, जिन्होंने सत्र 2022-23 में प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया हो उन्हें प्राथमिकता से सहायता दी जाएगी।
10. प्रार्थना पत्र निर्धारित सीमा तक प्राप्त नहीं होने की सूरत में शेष प्रार्थना पत्रों पर विचार किया जा सकेगा।
11. प्रार्थना-पत्रों के आधार पर पात्रता की जाँचोपरांत एवं हितकारी निधि कोष में राशि उपलब्ध होने पर सहायता देय होगी। प्रार्थना-पत्र प्रेषित कर दिए जाने से यह तात्पर्य नहीं है कि आपको सहायता मिल जाएगी। अतः अनावश्यक पत्र व्यवहार नहीं किया जावे।
12. राज्य कर्मचारी, हितकारी निधि का नियमित अंशदाता वर्ष 2018-19 से होना चाहिए। यदि अंशदान जमा करवाया हुआ है तो कटौती शिड्यूल एवं ई.सी.एस. की प्रति वर्ष 2018-19 एवं 2019-20, 2020-21, 2021-22 की संलग्न करें।
13. सहायता राशि पाठ्यक्रम हेतु रुपये 10,000/- निर्धारित है।
14. अपूर्ण प्रार्थना-पत्र, शुल्क की मूल रसीदें नहीं होने एवं देरी से प्राप्त होने वाले प्रार्थना-पत्र पर कोई विचार नहीं किया जाएगा। अतः ऐसी स्थिति में एवं निरस्त हुए प्रार्थना-पत्रों के बारे में कोई सूचना भी नहीं दी जाएगी। सहायता राशि 500 कार्मिकों के प्रार्थना पत्रों पर दी जानी है जिसे वरीयता के आधार पर प्रदान की जाएगी।
15. प्रार्थना पत्र के साथ वर्ष 2018-19, 2019-20, 2020-21,

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

2021-22 की ई.सी.एस. एवं शिड्यूल की प्रति संलग्न की जानी है तथा जिन कार्मिकों का वेतन पी.डी. हैड से आहरण होता है उन्हें CBEO (आहरण एवं वितरण अधिकारी) से ECS एवं शिड्यूल की प्रति प्राप्त कर संलग्न करनी होगी, इसके अभाव में प्रार्थना पत्र पर विचार नहीं किया जाएगा।

कृपया उक्त विषयक सूचना अपने अधीनस्थ विद्यालयों/कार्यालयों में प्रसारित एवं प्रचारित करावें ताकि अधिकाधिक कर्मचारीगण इसका लाभ उठा सके। अतः निर्देशित किया जाता है कि अधीनस्थ संस्था प्रधानों को पाबंद करावे की प्रार्थना पत्र सीधे नहीं भेजे, प्रार्थना पत्रों को अपनी अनुशंसा सहित दिनांक 28.12.2022 तक अधोहस्ताक्षरकर्ता को पद नाम से भिजवाने की व्यवस्था करें। अंतिम तिथि के पश्चात प्राप्त होने वाले प्रार्थना-पत्रों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा। अतः अग्रेषण अधिकारी अंतिम तिथि के पश्चात अनावश्यक प्रार्थना-पत्र अग्रेषित न करें। विज्ञप्ति जारी होने से पूर्व में प्रेषित प्रार्थना पत्रों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा तथा उक्त अवधि से पूर्व आवेदन करने वालों को पुनः आदेश के अनुसरण में आवेदन करना होगा।

- संलग्न : निर्धारित प्रार्थना-पत्र ।
- **(योगेश चन्द्र शर्मा)** उप निदेशक प्रशासन एवं सचिव हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

हितकारी निधि

कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

हितकारी निधि से राज्य कर्मचारियों, राजपत्रित शिक्षा अधिकारी/व्याख्याता (स्कूल शिक्षा)/शिक्षक/मंत्रालयिक/सहायक कर्मचारी एवं समस्त वर्ग के राज्य कर्मचारियों (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर सहायता हेतु प्रार्थना-पत्र

1. कर्मचारी का नाम.....
2. पद एवं पदस्थापन स्थान.....
3. कर्मचारी का स्थायी पता.....
4. टेलीफोन नम्बर/मोबाइल नम्बर.....
5. कार्मिक का बैंक खाता विवरण :
   1. कार्मिक का बैंक खाता संख्या (पासबुक की प्रति) या निरस्त चैक .....
6. अध्ययनरत छात्र/छात्रा का नाम.....
7. छात्र/छात्रा से संबंध.....
8. छात्र/छात्रा के व्यावसायिक शिक्षा का नाम (✓ करें) मेडिकल/इंजीनियरिंग/मैनेजमेंट/बी.एड./एस.टी.सी./नर्सिंग/सी.ए..... .....
9. पाठ्यक्रम की अवधि.....
10. महाविद्यालय में प्रवेश तिथि.....
11. महाविद्यालय का नाम एवं पता जहाँ छात्र/छात्रा अध्ययनरत है..... (✓ करें) (संस्था राजकीय/अराजकीय/निजी/मान्यता प्राप्त)
12. व्यावसायिक विषय के लिए भुगतान की गई राशि की मूल रसीदें संलग्न करें:-

    संलग्न कुल रसीद संख्या.....राशि.....
13. छात्र/छात्रा जिस महाविद्यालय में अध्ययनरत है उस संस्था से प्राप्त प्रमाण पत्र संलग्न है: (हाँ/नहीं)
14. हितकारी निधि का कार्मिक आई.डी.सं. (अंशदान कटौती शिड्यूल/ई.सी.एस. वर्ष 2018-19, 2019-20, 2020-21, 2021-22 संलग्न करें। 2018-19 से नियमित अंशदाता होना चाहिए।)

मैं प्रमाणित करता हूँ/करती हूँ कि मेरी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण बिल्कुल सही है। इन बिन्दुओं में कोई असत्यता पायी जाती है तो हितकारी निधि, शिक्षा विभाग, बीकानेर मेरे विरुद्ध जो भी उचित समझे कार्यवाही कर सकेगा वह मुझे स्वीकार्य होगी।

कर्मचारी के हस्ताक्षर
(पद एवं कार्यरत स्थान)

प्रार्थना पत्र जिला शिक्षा अधिकारी एवं संस्थाप्रधान द्वारा अग्रेषित करवाया जाना आवश्यक है।

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती.....पद एवं पदस्थापन स्थान.....जो मेरे अधीन कार्यरत है। इनके पुत्र/पुत्री.....जो (महाविद्यालय) का नाम..... में अध्ययनरत है एवं मेडिकल/इंजीनियरिंग/बीएड/एस.टी.सी./नर्सिंग सत्र.....में प्रवेश लिया है को सहायता हेतु इनका प्रार्थना-पत्र अध्यक्ष हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को अनुशंषा सहित अग्रेषित किया जाता है।

जिला शिक्षा अधिकारी — संस्थाप्रधान के हस्ताक्षर
हस्ताक्षर मय सील — (मोहर)

अध्ययनरत महाविद्यालय का प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/सुश्री..... पुत्र/पुत्री/श्रीमती.....जो (महाविद्यालय का नाम)..... में अध्ययनरत है। इनके पुत्र/पुत्री इस महाविद्यालय का नियमित छात्र/छात्रा है। महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्रा विषयक विवरण निम्नानुसार है:-

पाठ्यक्रम का नाम	पाठ्यक्रम की अवधि	प्रवेश तिथि	वर्तमान में किस वर्ष में अध्ययनरत है	उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण	विशेष विवरण

संस्थाप्रधान के हस्ताक्षर
मय मोहर

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

माह : दिसम्बर, 2022	**विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम**	प्रसारण समय : दोपहर 12.35 से 12.55 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	आलेखनकर्ता का नाम
01.12.22	गुरुवार	जयपुर		विश्व एड्स दिवस	गैर पाठ्यक्रम		
02.12.22	शुक्रवार	बीकानेर	5	पर्यावरण अध्ययन	23	हमारी विरासत	नवनीत कुमार गुलाटी
03.12.22	शनिवार	जयपुर		No Bag Day	गैर पाठ्यक्रम		
05.12.22	सोमवार	जयपुर	11	हिन्दी साहित्य	गद्य	खानाबदोश	महेश कुमार शर्मा
06.12.22	मंगलवार	जोधपुर	8	विज्ञान	11	बल और दाब	अनिल धींगड़ा
07.12.22	बुधवार	कोटा (जयपुर)	12	अंग्रेजी	4	On the face of it	मंजुषा यादव
22.12.22	गुरुवार	जयपुर			गैर पाठ्यक्रम		
23.12.22	शुक्रवार	जयपुर			गैर पाठ्यक्रम		
24.12.22	शनिवार	जयपुर		No Bag Day	गैर पाठ्यक्रम		

● कार्यदिवस-21 ● कुल प्रसारण दिवस-09 ● अवकाश-10 ● पाठ्यक्रम आधारित-04 ● गैर पाठ्यक्रम आधारित-05

शिविरा पञ्चाङ्ग

दिसम्बर-2022					
रवि		4	11	18	25
सोम		5	12	19	26
मंगल		6	13	20	27
बुध		7	14	21	28
गुरु	1	8	15	22	29
शुक्र	2	9	16	23	30
शनि	3	10	17	24	31

दिसम्बर 2022 ● कार्य दिवस-21, रविवार-04, अवकाश-07, उत्सव-04 ● 01 दिसम्बर : विश्व एकता दिवस (उत्सव), विश्व एड्स दिवस(उत्सव)। **03 दिसम्बर** : विश्व विशेष योग्यजन दिवस (समग्र शिक्षा)। **05-06 दिसम्बर** : मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता हेतु जिला स्तर पर चयन। **10 दिसम्बर** : मानव अधिकार दिवस (उत्सव)। **08-20 दिसम्बर** : अर्द्ध वार्षिक परीक्षा का आयोजन। **16 से 17 दिसम्बर** : मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर चयन व दल गठन। **18-21 दिसम्बर** : मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन। **24 दिसम्बर** : सामुदायिक बाल सभा का आयोजन-विद्यालय परिसर में। **25 दिसम्बर** : क्रिसमस डे (अवकाश)। **25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर** : (05 जनवरी तक जारी) शीतकालीन अवकाश (विभाग के समस्त आहरण-वितरण अधिकारियों द्वारा राज्य कर्मचारियों के हितकारी निधि के वार्षिक अंशदान हेतु माह दिसम्बर के वेतन से निर्धारित दर पर कटौती की कार्यवाही सुनिश्चित करना)। **26 से 27 दिसम्बर** : राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता हेतु पूर्व प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन। **27 से 30 दिसम्बर** : मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता का राज्य स्तर पर आयोजन। **29 दिसम्बर** : गुरू गोविन्द सिंह जयन्ती (अवकाश-उत्सव)। **30 से 31 दिसम्बर** : राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता। **दिसम्बर-2022** : मा.शि.बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, उन्नयन एवं कौशल शिविर का आयोजन। **नोट** : जिन विद्यालयों में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई संचालित है, उन विद्यालयों में सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन शीतकालीन अवकाश के दौरान ही किया जाए। ● माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व उन्नयन एवं कौशल शिविर का आयोजन। ● प्रत्येक मंगलवार-IFA नीली गोली (कक्षा 6-12), IFA गुलाबी गोली (कक्षा 1-5) (समग्र शिक्षा) ● व्यावसायिक शिक्षा में कक्षा-11 व 12 में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु ऑन जॉब ट्रेनिंग शीतकालीन अवकाश में (समग्र शिक्षा) ● प्रत्येक शनिवार-विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन-अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी। सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAY यानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें।

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उदयपुर
प्रभाग-4, शैक्षणिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान, अजमेर

December - 2022

Monthly telecast schedules for 12 TV channels (One Class, One Platform) of PM eVidya

S.No.	Class	Link for Monthly schedule	QR Code	S.No.	Class	Link for Monthly schedule	QR Code
1.	Class I	https://bit.ly/3up8kOF		7	Class VII	https://bit.ly/3ilog9a	
2	Class II	https://bit.ly/3GQ00yE		8	Class VIII	https://bit.ly/3u6NraA	
3	Class III	https://bit.ly/3OHDLgg		9	Class IX	https://bit.ly/3iloPII	
4	Class IV	https://bit.ly/3VuE0gQ		10	Class X	https://bit.ly/3ASl2ce	
5	Class V	https://bit.ly/3VfqrSS		11	Class XI	https://bit.ly/3OKZtAc	
6	Class VI	https://bit.ly/3ih4wfl		12	Class XII	https://bit.ly/3ubdLjK	

समन्वित शाला दर्पण

❒ पूनमचंद जाखड़

1. शालादर्पण से पूर्व का समय– आप सभी को वह दिन अच्छे से याद है, जब हम सभी गाँव के छोटे से विद्यालय में पढ़ने जाते थे। यह वह समय था जिस समय इंटरनेट का नामोनिशान तक नहीं था सारे कार्य ऑफलाइन संपादित करने होते थे। अभिभावक विद्यार्थी की प्रगति को जानने के लिए विद्यालय पर ज्यादा निर्भर रहते थे साथ ही समस्त विभागों से जुड़े सभी कार्य ऑफलाइन होते थे जिससे समय व श्रम दोनों ज्यादा व्यय होते थे।

2. शालादर्पण व शालादर्शन:– इन्हीं बातों को मद्देनजर रखते हुए एवं समय अनुसार हो रहे परिवर्तन की कड़ी में हमारे शैक्षिक संस्थान भी बदलाव से अछूते नहीं रह पाए वह भी सूचना-प्रौद्योगिकी के नए दौर में ऑनलाइन मोड पर आ गए हैं सब कुछ मॉडर्न होता जा रहा है। तकनीकी और प्रौद्योगिकी के युग में सूचनाओं के आदान-प्रदान, अद्यतन, संग्रहण एवं विभाग व विद्यालयों के मध्य सुगम एवं दोष रहित सम्प्रेषण तथा नवीन जानकारियों से अंतिम कड़ी तक सूचना का संप्रेषण तीव्र गति से होता रहे इसी अवधारणा को ध्यान में रखते हुए शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार ने अपने कदम आगे बढ़ाएँ और प्रारंभिक शिक्षा के लिए शाला दर्शन एवं माध्यमिक शिक्षा के लिए शाला दर्पण नाम से दो ऑनलाइन पोर्टल 1 जुलाई 2015 को तत्कालीन माननीय शिक्षा राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार राजस्थान सरकार श्री वासुदेव देवनानी एवं माननीय प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा श्री नरेश पाल गंगवार के कर कमलों से शुरू किए गए। अधिकारिक रूप से ये पॉर्टल 12 फरवरी 2016 को अस्तित्व में आए।

3. शालादर्शन को शालादर्पण के साथ समन्वित किया जाना– दो अलग-अलग ऑनलाइन पॉर्टलों का उपयोग करने में शिक्षकों एवं शिक्षा विभाग के अधिकारियों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार द्वारा इन दोनों वेबसाइटों को मिलाकर कुछ समय पहले ही

शाला दर्शन को शाला दर्पण में मर्ज किया गया है।

4. शालादर्पण की उपयोगिता:– विभाग एवं शिक्षकों के लिए- शाला दर्पण एक ऑनलाइन इंटीग्रेटेड स्कूल मैनेजमेंट सिस्टम है। जिसने शिक्षा विभाग को सफलता के नए आयामों तक पहुँचाया है। ऑनलाइन पॉर्टल शिक्षा विभाग की शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि रही है इसने अल्प समय में ही शिक्षा के परिदृश्य को बदलने में अपनी महती भूमिका का निर्वहन किया है। इसने हमें विद्यालय, कर्मचारी, विद्यार्थी एवं राज्य सरकार की कल्याणकारी विभागीय योजनाओं से संबंधित संपूर्ण डाटा का संग्रह एवं विश्लेषण करने का एक मंच प्रदान किया है। इसके माध्यम से शिक्षा विभाग ने अपने विभिन्न कार्यक्रमों जैसे - नई शिक्षक भर्ती, पदस्थापन्न, डीपीसी, काउंसलिंग, स्टाफिंग पैटर्न, स्थानांतरण, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण इत्यादि को सुव्यवस्थित रूप से सम्पन्न करने में महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त की है। विद्यालयों में उपलब्धता के गैप, अनुपस्थित एवं बंक मारने जैसे कार्यों को चिह्नित कर दूर करने का प्रयास भी शाला दर्पण से किया जा रहा है। शाला दर्पण जिसे अब समन्वित शाला दर्पण कहा जाता है इस पॉर्टल के माध्यम से राजकीय विद्यालयों की दिन-प्रतिदिन की त्रुटि रहित, अद्यतन सूचनाओं का संकलन, विश्लेषण एवं निष्कर्ष प्राप्त कर सकते हैं। शाला दर्पण प्रोग्राम में ऐसी बहुत सी जानकारियां है जो न केवल छात्र, अभिभावक बल्कि अध्यापक के लिए एवं उन सभी के लिए है जो शिक्षा विभाग की कार्यप्रणाली की जानकारी प्राप्त करना चाहता है।

जैसे- विद्यार्थी का संपूर्ण डाटा जिसमें विद्यार्थी की उपस्थिति, माता पिता का नाम, पता, प्राप्तांक, प्रवेशांक, निशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण, स्वास्थ्य सम्बंधित जानकारियाँ, छात्रवृत्तियां, राजश्री योजना, ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना, मुख्यमंत्री हमारी बेटी योजना, उपचारात्मक शिक्षण योजना, लैपटॉप वितरण योजना एवं साइकिल वितरण योजना के साथ-साथ स्वास्थ्य की कुछ महत्त्वपूर्ण योजनाएँ जैसे- साप्ताहिक आयरन फोलिक एसिड सप्लीमेंट योजना, हाइजीन से सम्बंधित सेनेटरी नैपकिन वितरण योजना एवं डिवर्मिंग कार्यक्रम के सफल संचालन के साथ-साथ अक्षय पेटिका, ज्ञान संकल्प पोर्टल, गरिमा पेटिका, बालिका उत्पीड़न एवं यौनाचार निस्तारण समिति जैसी योजनाएं आसानी से हमारे विद्यालयों में लागू कर पाए हैं। इसके साथ ही शिक्षकों के लिए कार्मिक व्यक्तिगत विवरण, एसीपी पेंडेंसी रिपोर्ट, स्थायीकरण, स्टाफ डेली उपस्थिति, ऑनलाइन कार्यग्रहण व कार्यमुक्ति, अवकाश स्वीकृति, शिक्षक दिवस पुरस्कार जैसे आवेदन एवं कार्य ऑनलाइन ही किए जा रहे हैं।

विद्यालयों के बुनियादी ढांचे से संबंधित सूचनाएँ जैसे- पेयजल सुविधा, शौचालय-मूत्रालय सुविधा, विद्युत की उपलब्धता, कक्षा कक्ष, कंप्यूटर लैब, खेल मैदान, चार दीवारी की उपलब्धता इत्यादि सूचनाओं को एकत्र करके आधारभूत सुविधाओं को विकसित करने एवं विद्यालयों में अतिरिक्त बजट मांग पाने में सक्षम है।

5. अभिभावकों एवं जनसाधारण को विद्यालयों से संबंधित कार्य:– जनसाधारण को सभी आवश्यक जानकारियाँ उपलब्ध कराने के लिए नागरिक केंद्रित मोबाइल एप भी विकसित किया गया है जिसे गूगल प्ले स्टोर से शाला दर्पण वर्ड से सर्च कर एंड्रॉयड मोबाइल से डाउनलोड किया जा सकता है।

6. विद्यालय के प्रभावी प्रबंधन एवं

Rajasthan Education Department

बेहतर निष्पादन के लिए :– विद्यालय में संचालित विभिन्न गतिविधियों जैसे– टीसी जारी करना, परीक्षा परिणाम तैयार करना, बोर्ड परीक्षाओं के फॉर्म भरना, सह शैक्षिक गतिविधियों जैसे– बाल सभाओं के रिकॉर्ड आदि शाला दर्पण के माध्यम से होने से व्यर्थ लगने वाले समय एवं परिश्रम को कम करके कार्मिकों की कार्य क्षमता एवं गुणवत्ता को भी बढ़ाता है तथा मानसिक तनाव से भी मुक्ति प्रदान करता है।

7. समन्वित शालादर्पण पॉर्टल के विद्यालय लॉगिन पर उपलब्ध मॉड्यूल एवं प्रोग्राम:– वर्तमान में शालादर्पण के विद्यालय लॉगिन पर 13 मोडयूलों के अंतर्गत 153 प्रोग्राम संचालित है जैसे– बोर्ड परीक्षा–4, डैशबोर्ड–2, डाउनलोड–5, हेल्प डेस्क–1, रिपोर्ट्स–13, परिणाम–21, RKSMBK एप–8, योजनाएँ–24, विद्यालय–35, मुस्कान 3.0–1, कार्मिक–10, विद्यार्थी–22, विविध–7 इत्यादि।

8. समन्वित शालादर्पण पॉर्टल की राज्य स्तरीय टीम:– इस समन्वित शाला दर्पण पॉर्टल को चलाने एवं विद्यालय व कार्मिकों की सहायता के लिए दिन–रात कार्य करने वाली एक उच्च प्रशिक्षित योग्य आईटी विशेषज्ञों की एक उत्साही टीम 'समन्वित शाला दर्पण' प्रकोष्ठ जयपुर तथा बीकानेर में कार्यरत है।

यह टीम समय–समय पर विभिन्न प्रकार के नए मॉडयूलों को विकसित करने के साथ–साथ वर्तमान में चल रहे मॉड्यूलों को समयानुसार अपडेट करने के लिए भी हर समय तत्पर रहती है।

9. शालादर्पण के अन्य प्लेटफॉर्म:– इसके अलावा यूट्यूब चैनल 'शाला दर्पण जयपुर राजस्थान', फेसबुक पेज 'शाला दर्पण' पर जुड़े सदस्यों की समस्याओं को समझा कर के समाधान में भी सहायता करते हैं।

10. शालादर्पण समस्या समाधान:– समन्वित शाला दर्पण के विभिन्न मॉड्यूलों में एंट्री करने में मदद करने एवं लॉगिन से संबंधित किसी भी समस्या के समाधान के लिए एक हेल्प डेस्क टीम की स्थापना की गई है जो संपर्क नंबर – 0141–270 0872 पर उपलब्ध है।

इसके अलावा विद्यालय/ऑफिस लॉगिन पर हेल्प मॉड्यूल के माध्यम से विभिन्न प्रकार की समस्याओं को दर्ज करके समाधान प्राप्त किया जा सकता है।

सभी संस्था प्रधान महोदय 'समन्वित शाला दर्पण' से संबंधित किसी भी समस्या को विभागीय कार्यालय जयपुर अथवा बीकानेर भेजते समय पत्र में निम्नलिखित का उल्लेख अवश्य करें:–

विद्यालय के शाला दर्पण एनआईसी (NIC-SD-ID) कोड, यू–डाइस प्लस (U-DISE+) कोड, आईएफएमएस (OFFICE ID) कोड, तीनों कोड अवश्य लिखें। विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु एक से अधिक कोड की आवश्यकता रहती है।

कार्मिक से संबंधित समस्या होने पर कार्मिक की एंप्लोई आईडी व एनआईसी आईडी अवश्य लिखें।

प्रत्येक पत्र में प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य एवं शाला दर्पण प्रभारी का मोबाइल नंबर लिखना अत्यंत आवश्यक है ताकि आवश्यकता होने पर बात की जा सके।

इन जानकारियों के उपलब्ध होने से समस्याओं का शीघ्र समाधान करना संभव होता है।

पत्र व्यवहार हेतु मेल आईडी rmsaccrgmail.com उपलब्ध है।

11. शाला दर्पण–पोर्टल सम्बंधित सुझाव:–

1. विद्यार्थी उपस्थिति में प्रत्येक कक्षा की अलग–अलग सेव न होकर के सभी कक्षाओं में एक साथ भर कर एक बार में ही सेव हो।
2. वरिष्ठता सूची टैब प्रारंभ स्टाफ विंडो पर किया जाए।
3. जो जनाधार सेव हो गए है स्टूडेंट डाटा डाउनलोड एक्सेल शीट और पीडीएफ में सेव होने चाहिए।
4. रिपोर्ट में न्यू एडमिशन की डिटेल डाउनलोड भी होनी चाहिए।
5. स्टाफ लॉगिन से कर्मचारी अपनी उपस्थिति देख सके ऐसा ऑप्शन प्रारम्भ किया जाए।
6. रिपोर्ट्स में स्टुडेंट एज वार रिपोर्ट निकालने हेतु टैब प्रारंभ किया जाए।
7. कक्षावार मासिक उपस्थिति मॉड्यूल कक्षा अध्यापक के स्टाफ लॉगइन पर उपलब्ध होना चाहिए।
8. शाला दर्पण पर भरे हुए हर डाटा का प्रिंट ऑप्शन होना चाहिए।
9. सबसे महत्त्वपूर्ण बात ये है कि शाला दर्पण मे जो भी नए टैब जोड़े जाए उनको लाइव करने से पहले अच्छे से टेस्टिंग की जाए। क्योंकि टैब तो जोड़ दिया जाता हैं और अधिकारी महोदय के आदेश आ जाते हैं। जल्दी मॉड्यूल पूरा करने के लिए, पर इधर शाला दर्पण प्रभारी रात दिन मॉड्यूल पूरा करने की कोशिश करते रहते हैं और तकनीकी समस्या के कारण कार्य पूरा नही हो पाता है।
10. योग्यता अभिवृद्धि के आवेदन भी शाला दर्पण के स्टाफ विंडो से ही लिए जाए।
11. आधार–जनाधार ऑथेंटिक नहीं हो पाने की दशा में भी नंबर तो सेव रहने चाहिए।
12. पीईईओ लॉगिन से कार्यालय से संबंधित समस्त सूचनाएं समेकित रूप से प्राप्त हो जानी चाहिए। जैसे–समेकित नामांकन, समेकित परिणाम, समेकित सीडब्ल्यूएसएन बच्चे आदि।
13. किसी भी तरह की जो प्रोब्लम हेल्प डेस्क पर एंट्री की जाती है उनका समाधान जल्दी किया जाना चाहिए।
14. नए आधार जनाधार बैंक अकाउंट खोलने के लिए आधार जनाधार बैंक पोर्टल को शाला दर्पण से जोड़ कर सीधा स्टूडेंट का डाटा फेच करके ही प्रोसेस हो ताकि सारे डॉक्यूमेंट अपने आप स्कूल रिकॉर्ड के अनुसार same to same बन जाये स्टूडेंट भी लाभ से वंचित नही होगा।
15. शाला दर्पण पर उपलब्ध टैब जिनका कार्य पूर्ण हो चुका है उन मॉड्यूलों को वहाँ से हटाया जाए।

उपर्युक्त कमियों के बावजूद भी हम 'समन्वित शाला दर्पण' के माध्यम से कागज के उपयोग को कम करने एवं सूचना प्रौद्योगिकी का सदुपयोग करके ऑनलाइन कार्य को बढ़ावा देकर हम शिक्षा विभाग राजस्थान को एक सशक्त विभाग बनाने की ओर निरंतर अग्रसर है।

अध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय जाटा बस्ती मन्दिरवाला,
धनाऊ, बाड़मेर (राज.) **मो: 9462016455**

Rajasthan Education Department

नोबेल पुरस्कार विजेता भारतीय

❒ सुभाष जोशी

नोबेल पुरस्कार दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों में से एक है। इस पुरस्कार का नाम स्वीडिश व्यवसायी और आविष्कारक परोपकारी अल्फ्रेड नोबेल के नाम पर रखा गया है। यह पुरस्कार पिछले वर्ष के दौरान 'मानव जाति के लिए सबसे कल्याणकारी काम करने वालों को दिया जाता है' तथा अल्फ्रेड नोबेल द्वारा इस उद्देश्य के लिए वसीयत द्वारा किए गए फंड से प्रतिवर्ष पाँच क्षेत्रों (भौतिक, रसायन, चिकित्सा, शान्ति और साहित्य) में साहित्य सन् 1901 से पुरस्कार आरंभ किए गए थे लेकिन नोबेल समिति द्वारा सन् 1969 में इसमें छठा पुरस्कार अर्थशास्त्र के रूप में और जोड़ा गया।

नोबेल पुरस्कार समारोह की शुरूआत वर्ष 1901 से लगातार 120 वर्षों तक आज भी अनवरत है, इसे दुनिया का सबसे प्रतिष्ठित सम्मान माना जाता रहा है। इसके विजेताओं में 10 भारतीयों को भी अब तक यह पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव मिला है।

क्र.सं.	प्राप्तकर्ता	संबंधित क्षेत्र	वर्ष
1.	रवीन्द्रनाथ टैगोर	साहित्य	1913
2.	चन्द्रशेखर वेंकटरमन	भौतिक विज्ञान	1930
3.	डॉ. हरगोविंद खुराना	चिकित्सा	1968
4.	मदर टेरेसा	शान्ति	1979
5.	सुब्रह्मण्यम चन्द्रशेखर	भौतिक विज्ञान	1983
6.	अमर्त्य सेन	अर्थशास्त्र	1998
7.	वी.एस. नायपॉल	साहित्य	2001
8.	वेंकटरमन रामकृष्णन	रसायन विज्ञान	2009
9.	कैलाश सत्यार्थी	शान्ति	2014
10.	अभिजीत बनर्जी	अर्थशास्त्र	2019

वर्ष 2019 तक विभिन्न क्षेत्रों में भारतीयों ने इस पुरस्कार को प्राप्त कर भारत को गौरवान्वित किया है जिसका सफर नोबेल पुरस्कार प्रारंभ के 13 वें वर्ष में यानि 1913 में साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले रवीन्द्र नाथ टैगोर की यात्रा से प्रारंभ हुआ।

1. रवीन्द्र नाथ टैगोर: रवीन्द्रनाथ टैगोर को 1913 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई, 1861 को हुआ था। वे एक महान कवि, गीतकार, संगीतकार, नाटककार, निबंधकार और चित्रकार थे। रवीन्द्रनाथ टैगोर को गुरुदेव के नाम से भी जाना जाता है। साहित्य के क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के लिए उन्हें यह पुरस्कार दिया गया। रवीन्द्रनाथ टैगोर पहले भारतीय है जिन्हें 1913 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें उनकी पुस्तक 'गीतांजलि' की रचना के लिए वर्ष 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया। इसी के साथ रवीन्द्रनाथ टैगोर नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले भारतीय बने।

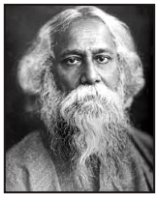

2. चन्द्रशेखर वेंकटरमन : डॉ. चन्द्रशेखर वेंकटरमन भौतिक शास्त्र के लिए नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले भारतीय तथा किसी भी श्रेणी में नोबेल पुरस्कार पाने वाले दूसरे भारतीय है। उन्हें 1930 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ. सी.वी.रमन का जन्म तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली के निकट तिरुवाइक्कावल में 7 नवम्बर, 1888 को हुआ था। उन्होंने प्रकाश पर गहन अध्ययन किया जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने रमन प्रभाव की खोज की। डॉ. सी.वी. रमन के इसी खोज के लिए वर्ष 1930 में उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

3. डॉ. हरगोविन्द खुराना : डॉ. हरगोविन्द खुराना को चिकित्सा के क्षेत्र में अनुसंधान एवं उनके असाधारण योगदान के लिए वर्ष 1968 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ. हरगोविन्द खुराना का जन्म पंजाब प्रान्त के रायपुर (वर्तमान पाकिस्तान) में 9 जनवरी, 1922 को हुआ था। 1960 में वे विस्कॉसिन विश्वविद्यालय के प्राध्यापक बने। डॉ. हरगोविन्द खुराना ने चिकित्सा के क्षेत्र में आनुवांशिक कोड की व्याख्या की और प्रोटीन संश्लेषण में आनुवांशिक कोड की भूमिका का पता लगाया। इसी खोज के लिए उन्हें वर्ष 1968 में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया।

4. मदर टेरेसा : मदर टेरेसा को वर्ष 1979 में शांति के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त, 1910 को अल्बानिया में हुआ था 1928 में वह मात्र 18 वर्ष की आयु में ही आयरलैंड की संस्था 'सिस्टर्स ऑफ लोरेटों' में शामिल हो गयी और इस संस्था की मिशनरी बनकर वर्ष 1929 में वह कोलकाता आ गई। उन्होंने बेसहारा और बेघर लोगों की सेवा के लिए 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' नाम की संस्था बनाई तथा कुष्ठ रोगियों, नशीले पदार्थों की लत के शिकार बने लोगों के लिए 'निर्मल हृदय' नाम की संस्था बनाई। समाज कल्याण के क्षेत्र में उनके इसी असाधारण योगदान के लिए उन्हें 1979 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मदर टेरेसा भारत के साथ-साथ एशिया की पहली महिला है जिन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

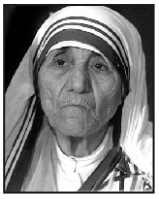

5. डॉ. सुब्रह्मण्यम चन्द्रशेखर: डॉ. सुब्रह्मण्यम चन्द्रशेखर को वर्ष 1983 में भौतिक शास्त्र के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ . सुब्रह्मण्यम एक भौतिक शास्त्री थे। उनका जन्म 19 अक्टूबर, 1910 को वर्तमान पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के लाहौर में हुआ था। उनकी शिक्षा चेन्नई के प्रेसिडेंसी कॉलेज में हुई। कॉलेज की पढ़ाई के बाद वे अमेरिका चले गए जहाँ उन्होंने खगोल विज्ञान, भौतिक शास्त्र तथा सौरमण्डल से सम्बन्धित विषयों पर अनेक पुस्तकें भी लिखी। वे डॉ. सी. वी. रमन के भतीजे थे। भौतिक शास्त्र के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया।

6. अमर्त्य सेन : प्रोफेसर अमर्त्य सेन

Rajshri Education Department

को अर्थशास्त्र के लिए वर्ष 1998 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अमर्त्य सेन अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले एशियाई व्यक्ति थे। अमर्त्य सेन का जन्म 3 नवम्बर 1933 को कोलकाता के शान्ति निकेतन में हुआ था। वे एक विद्वान अर्थशास्त्री थे जिन्होंने लोक कल्याणकारी अर्थशास्त्र की अवधारणा का प्रतिपादन किया। लोक कल्याण और आर्थिक विकास के लिए उन्होंने अनेक पुस्तकें भी लिखी। अर्थशास्त्र के क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

7. वी. एस. नायपॉल : भारतीय मूल के प्रसिद्ध ब्रिटिश लेखक वी. एस. नायपॉल को वर्ष 2001 में साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वी. एस. नायपॉल का जन्म 17 अगस्त, 1932 को त्रिनिनाद में हुआ था।

8. वेंकटरमन रामकृष्णन् : भारतीय मूल के अमेरिकी वैज्ञानिक वेंकटरमण रामकृष्णन को वर्ष 2009 में रसायन विज्ञान के क्षेत्र में योगदान के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वेंकटरमन रामकृष्णन का जन्म वर्ष 1952 में तमिलनाडू के चिदम्बरम जिले में हुआ था। एक प्रसिद्ध रसायन शास्त्री हैं राइबोसोम की संरचना और उसकी कार्यप्रणाली पर अध्ययन के लिए वर्ष 2009 में अमेरिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक थॉमस ए . स्टेट्ज, इजरायल के ई . योनथ और वेंकटरमन रामकृष्णन को संयुक्त रूप से इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

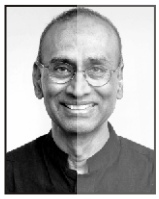

9. कैलाश सत्यार्थी : कैलाश सत्यार्थी को वर्ष 2014 में पाकिस्तान में लड़कियों के हक के लिए लड़ने वाले मलाला यूसुफजई के साथ संयुक्त रूप से 2014 के नोबेल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कैलाश सत्यार्थी का जन्म 11 जनवरी, 1954 को मध्यप्रदेश के विदिशा में हुआ। कैलाश सत्यार्थी एक भारतीय समाज सुधारक है जिन्होंने भारत में बाल श्रम के खिलाफ आवाज उठाई और बच्चों के उचित विकास और शिक्षा के लिए अनेक अभियान चलाए। उनके इसी कार्य के लिए उन्हें 2014 में शान्ति के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

10. अभिजीत बनर्जी : भारतीय मूल के अर्थशास्त्री अभिजीत बनर्जी को वर्ष 2019 में अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अभिजीत बनर्जी का जन्म 21 फरवरी, 1961 को कोलकाता में हुआ था। ये एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री है जिन्होंने विश्व में गरीबी कम करने की दिशा में असाधारण प्रयास किए। उनकी इसी कार्य के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भौतिकी, रसायन विज्ञान, चिकित्सा, साहित्य और अर्थशास्त्र के पुरस्कारों की औपचारिक प्रस्तुतियाँ स्टॉकहोम में होती है, वहीं नोबेल पुरस्कारों में सबसे प्रतिष्ठित माने जाने वाले शान्ति के क्षेत्र में दिया जाने वाला पुरस्कार अलफ्रेड नोबेल की मृत्यु की वर्षगांठ 10 दिसम्बर को ओस्लो में होती है। 10 दिसम्बर, 1896 को अलफ्रेड नोबेल का निधन हो गया था, इसलिए प्रतिवर्ष 10 दिसम्बर को ही नोबेल पुरस्कार दिए जाते हैं।

नोबेल पुरस्कार समारोह प्रतिवर्ष होते हैं। प्रत्येक पुरस्कार विजेता को एक स्वर्ण पदक, एक डिप्लोमा और एक मौद्रिक पुरस्कार प्राप्त होता है। पुरस्कार तीन से अधिक व्यक्तियों में साझा नहीं किया जा सकता और ना ही मरणोपरांत किसी भी व्यक्ति को ये पुरस्कार प्रदान किया जाता है। 29 जून, 1900 में नोबेल फाउंण्डेशन प्रारम्भ होकर 1901 में पुरस्कार प्रारम्भ किए गए जिसमें पुरस्कार की राशि नोबेल की वसीयत के अनुसार प्रतिवर्ष प्राप्त ब्याज की राशि में से ये पुरस्कार स्वीडन के राजा के हाथों प्रदान किए जाते हैं।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय सादुल उच्च माध्यमिक विद्यालय बीकानेर (राज.)

जीवन दर्शन

एक बार एक लेखक अपनी नई रचना के लिए समुद्र के किनारे बहुत दिनों से प्रतिदिन घूम रहा था कि उसको कोई नई विषय वस्तु मिल जाए जिसे वो प्रेरणा के तौर पर हमेशा याद रखे ! एक पूनम की रात को बहुत बड़ा ज्वार भाटा आया वह अपने साथ लाखों की तादाद में मछलियों को बहाकर समुद्र से बाहर लाया और जब ज्वार उतरा तो लाखों मछलियाँ तट पर मिट्टी में दबकर रह गयी !

अगली सुबह एक 10 वर्षीय बालक वहाँ पहुँचा और उसने यह दृश्य देखा! उसने नानी दादी व शिक्षक से सुना व पढ़ा था कि– मछली जल की रानी हैं जीवन उसका पानी है, हाथ लगाओ डर जाएगी बाहर निकालो मर जाएगी!*

वह जानता था की मछली का जीवन पानी है, नही तो वह तड़प कर मर जाएगी!! उसने बिना रुके एक एक मछली को उठाना प्रारम्भ किया और समुद्र के जल में फेकना प्रारम्भ किया! वह बहुत खुश था! उसी समय वह लेखक भी वहाँ पर आता है, उसने जब उस बच्चे को उन लाखों मछलियों में से एक एक को समुद्र में कब तक फेंकते रहोगे के बारे में पूछा ओर कहा की तुम कब तक यह करते रहोगे और इससे क्या फर्क पड़ेगा!!

बच्चे का जवाब था की मेरे काम से कितना फर्क पड़ेगा यह तो मैं नही जानता परन्तु जो मछली समुद्र में चली गयी उसके जीवन मे अवश्यमेव फर्क पड़ेगा वह अपना जीवन फिर से शुरू कर लेगी! इसलिए हम जितना भी अच्छा व परोपकार कर सके बिना किसी पुरस्कार के ईश्वर का आदेश समझकर कर ले!

परोपकाराय पुण्याय इदम् शरीरं

लेखक का तीसरा नेत्र खुल गया उसको अपनी नयी रचना की वस्तु मिल गयी थी!

आयुष शर्मा, कक्षा 11
हरिलीला खुबानी हरजानी, वैशाली नगर अजमेर
मो: 9660408232

Rajasthan Education Department

शिक्षक की कलम से...

सफलता की कहानी : शिक्षक की जुबानी

❒ दुर्गाराम मुवाल

राजस्थान के दक्षिण में सुदूर आदिवासी अंचल में विकट भौगोलिक क्षेत्र में स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय पारगियापाडा, तहसील-झाड़ोल, उदयपुर में मार्च 2008 में जब पहली बार शिक्षक के पद पर कार्य ग्रहण करने गया तो ऑफिस वालों ने बताया कि पूरे दिन में 3-4 बसें ही चलती है जो बस जाती है वो ही वापस आती है उसके अलावा यातायात का कोई साधन नहीं है। विद्यालय गया तो वहाँ के हालात दयनीय थे, मुख्य द्वार ही नहीं था, दीवार टूटी हुई, खिड़की दरवाजे भी टूटे हुए, गाँव में विद्यालय के भवन के अलावा कोई भी पक्का निर्माण नही था। इसलिए रहने के लिए विद्यालय से 6 किमी दूर बाघपुरा कस्बे में मकान किराए पर लिया, वहाँ से विद्यालय आने के लिए बस का 2 घंटे इंतजार करना पड़ता था तो मैंने 6 किमी दौड़ लगाकर आना-जाना शुरू किया ताकि समय की बचत हो और वहाँ की जनता से जुड़ाव हो सके। विद्यालय आए दिन रात्रि में शराब पीने वालो का अड्डा बन जाता था, लोग रात्रि में अपने पशु विद्यालय में घुसा देते थे। सभी चुनौतियों का सामना करना पहली प्राथमिकता हो गई। गाँव वालों को इकट्ठा करके समझाया व इन सबको बंद करवाया।

राजस्व गाँव होने के बावजूद विद्यालय में नामांकन बहुत कम था, नामांकन बढ़ाने एवं शिक्षा से जोड़ने हेतु घर-घर जाकर गाँव में लोगों से संपर्क करता, यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ ऐसी थी कि ज्यादातर लोगों का बाहरी लोगों से सामना बहुत कम हो पाता था। संपूर्ण आदिवासी क्षेत्र होने से यहाँ लोग जंगलों में रहने के अपने सेफ जोन को छोड़कर बाहर की दुनिया से कम मिल पाते थे। इस कारण लोग मेरे से घबराते थे क्योंकि मेरा मूल निवास स्थान डेगाना, नागौर यहाँ से लगभग 500 किमी. है। लोग समझते थे मैं किसी अन्य देश का हूँ, यहाँ की भाषा भी मेरे समझ में नहीं आती थी और मेरी भाषा स्थानीय लोग समझ नहीं पाते थे। यहाँ तक कि हिन्दी भी नहीं समझ पाते थे। जब मैं गाँव में संपर्क करता तो एक द्विभाषीय मेरे साथ रखता ताकि वो मेरी भाषा गाँव वालों को, गाँव वालों की भाषा मेरे को समझा सके। धीरे-धीरे लोगों से जुड़ाव होता गया। पहले मुझे सभी लोग एक जैसे ही लगते थे, मैं कई बार रात्रि में भी गाँव में जाता और लोगों से मिलता जिसका परिणाम यह हुआ कि नामांकन में अप्रत्याशित वृद्धि हुई व जनता का जुड़ाव विद्यालय से हुआ, इतना होने के बाद भी नामांकन कम प्रतीत हुआ तो इसका कारण जाना तो पता चला कि यहाँ के छोटे लड़के-लड़कियों को बाल मजदूरी हेतु अन्य राज्यों में भेज दिया जाता है या ले जाया जाता है। यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ ऐसी है कि यहाँ के लोगों के लिए जीवन-यापन की वस्तुओं को जुटा पाना भी अपने आप में चुनौतियों से कम नहीं है, कई परिवार तो ऐसे भी थे जिनको एक समय का भोजन मिलने के बाद दूसरे समय का भोजन मिलेगा या नहीं यह भी पता नहीं होता था।

ऐसी परिस्थितियों के कारण यहाँ शिक्षा प्राथमिक न होकर द्वितीयक स्थान पर थी, यहाँ के लोगों के पास गुजर-बसर करने के लिए भी पर्याप्त खेती की जमीन नहीं है या जो भी जमीन है वो पथरीली है उसमें मुश्किल से साल भर का खाने योग्य अनाज पैदा हो पाता है, शिक्षा एवं जागरूकता के अभाव में परिवार बड़ा होने से ऐसी परिस्थितियाँ और बड़ी लगने लगती है। इन परिस्थितियों के कारण यहाँ सामान्य बेरोजगारी के अलावा स्वैच्छिक एवं प्रच्छन्न बेरोजगारी ज्यादा देखने को मिलती है। इस क्षेत्र में कोई उद्योग या कारखानों जैसे उपक्रम नहीं होने से नजदीक के बड़े शहर में प्रतिदिन रोजगार के लिए जाना पड़ता है। जहाँ भी हमेशा रोजगार नहीं मिल पाता है। मजदूरी का कुछ हिस्सा किराए में खर्च हो जाता है। लोग स्थायी रोजगार के लिए पलायन करना भी चाहते हैं तो परिवार की देखभाल की जिम्मेदारी के कारण नहीं कर पाते हैं इसलिए यह अपने बच्चों को बाल मजदूरी हेतु भेज देते है जहाँ बच्चों के साथ क्या यातनाएँ होती है। उनकी जानकारी अभिभावकों को नहीं होती है और यहाँ से नन्हें-मुन्ने बच्चों का शिक्षा के ब्लैक बोर्ड की जगह सामना होता है जिंदगी के काले अंधकारमय अध्यायों का जहाँ उनका जीवन बचपन से सीधा अधेड़ उम्र में चला जाता है और बच्चों की जिंदगी में यह अभिशाप उनकी सारी इच्छाएँ खत्म कर देता है तथा देश का भविष्य यहीं दफन हो जाता है। ये बच्चें अपने साथ घटित होने वाली घटनाएँ बताएँ भी तो किसे बताएँ क्योंकि इनको भेजने वाले भी अपने और ले जाने वाले भी अपने लोग होते है। अब इन बच्चों को लगता है कि कोई चमत्कार ही इन्हें इस नर्क से बाहर निकाल सकता है।

ऐसी घटनाओं से मुझे रूबरू होने का अवसर विद्यालय ज्वाइनिंग के एक माह बाद ही मिल गया। एक दिन गाँव में विद्यालय के सामने वाले घर की लड़की एक वर्ष बाद गाँव में आती है तो गाँव में कौतूहल का माहौल बन जाता है क्योंकि उस 12-13 साल की बालिका की शारीरिक संरचना अधेड़ उम्र की महिला जैसी हो जाती है, जब मैं उस बालिका से मिलने उसके घर गया तो बालिका मुझे देखकर सहम गई, मैंने उसके लिए सहानुभूति दर्शायी व विश्वास में लिया तब जाकर उसने अपने साथ घटित घटनाओं को बताना शुरू किया जहाँ वो बीच में रोने लग जाती, कभी डर जाती लेकिन मैंने उसे अब सुरक्षा करने का पूरा वादा दिलाया तब जाकर उसने सारी घटनाओं का जिक्र किया जो घटना से ज्यादा यातनाएँ थी। मैं उसके साथ घटित घटनाओं को सुनकर इतना आहत हुआ कि 4-5 दिन तक न ढंग से खाना खा पाया न ढंग से सो पाया, बस दिमाग में उस बालिका के साथ घटित यातनाएँ घूमती रही, मैं इन घटनाओं को रोकने के तरीके सोच रहा था। तभी उन्हीं दिनों गाँव के कुछ लोग मेरे पास आए। उनके दो बच्चे लीला एवं वेलाराम जो मेरे विद्यालय में प्राइमरी कक्षा में पढ़ रहे थे को रात्रि में दलाल या मेट जबरदस्ती उठाकर मजदूरी हेतु लेकर चले गए, जब यह लोग पुलिस चौकी रिपोर्ट दर्ज करवाने गए तो मेट का नाम पता नहीं होने एवं किस पर शक है के बारे में नहीं बताने से रिपोर्ट दर्ज नहीं हो पाई। अब यह लोग मेरे से सहायता मांग रहे थे, मैंने पूरा घटनाक्रम समझा और

Rajasthan Education Department

भावुक होकर बोल दिया कि मैं आपके बच्चों को 2-3 दिन में घर ले आऊँगा, यह सुनकर लोग वहाँ से चले गए, मेरे लिए यह एक बड़ा टास्क हो गया कि जिस कार्य के बारे में मैं जानता नहीं उसको करना था, अगले दिन रविवार की छुट्टी होने से मैं सुबह जल्दी ही इस टास्क को पूरा करने के लिए निकल गया, इस तरह के कार्यों में लिप्त लोगों से मिलने की कोशिश की लेकिन कोई भी नहीं मिला। गाँव में किसी व्यक्ति को इस तरह के लोगों की जानकारी थी उससे वो जानकारी गुप्त रूप से प्राप्त की, किसी एक दलाल/मेट के मोबाइल नम्बर मिले जिससे संपर्क किया तो उसने थोड़ी सी बात करके फोन काट दिया, वापस फोन रिसिव नहीं किया तो अलग नम्बर से फोन लगाकर थोड़ा लहजा बदलकर बात की तो उसने बताया कि बच्चों को मैं नहीं ले गया, उसने किसी दलाल के नम्बर दिए। इस तरह से यह शृंखला चौथे नम्बर के दलाल के पास जाकर रूकी। वहाँ से बच्चे बरामद करके घरवालों को 2 दिन में सौंप दिए तो यह खबर गाँव में आग की तरह फैल गई कि जो काम महीनों तक नहीं हो पाता है वो काम सर ने दो दिन में ही कर दिया, इस प्रकार मेरे पर लोगों का विश्वास बढ़ता गया। मैं विद्यालय समय के बाद गाँव की अन्य समस्याओं पर काम करता गया, जैस राशन वितरण की समस्या, सरकारी योजनाओं का लाभ, विद्यालय में प्रवेश, आपसी झगड़ों की समझाइश आदि। बाल मजदूरी के समय बच्चों के साथ जो यातनाएँ होती है उनको सुनकर या देखकर हर कोई इंसान अंदर तक सिहर उठता है जिन बच्चों को बाल मजदूरी के लिए ले जाया जाता है उनसे 15-18 घण्टे तक काम करवाया जाता है जिसकी एवज में प्रतिदिन की मजदूरी मिलती है मात्र 200 रुपए। जिनमें 40-50 रुपए तो दलाल का प्रतिदिन का कमीशन कट जाता है, बाकि पैसों से बच्चे के दो समय का भोजन होता है शेष बचता है 50 रुपया, यानि कि एक बच्चे की पूरी महीने की मजदूरी बनी लगभग 1500-2000 रुपए, वो भी तब मिलेगी जब पूरे महीने काम करोगे, अगर बीच में भाग गया तो वो पैसा भी नहीं मिलता, बच्चे 4-5 महीने से पहले घर भी नहीं जा पाते थे, बीमार होने पर जबरदस्ती घर भेज दिया जाता था। बिना इलाज करवाए, काम की आनाकानी करने पर ठेकेदार द्वारा मारपीट की जाती है। लड़के-लड़कियों को एक ही कमरे में रखा जाता है, लड़के-लड़कियां दोनों शारीरिक शोषण का शिकार बन जाते है, बच्चों को अपंग करके भीख मंगवाने के मामले में सामने आए, कई बार लड़कियों को बेच दिया जाता है या वेश्यावृत्ति धंधे में धकेल दिया जाता है। इतनी यातनाओं के बाद अगर बच्चा वापस घर आ भी जाता है तो वो समाज की मुख्यधारा में बड़ी मुश्किल से समायोजित हो पाता है। इन सभी यातनाओं को सुनकर व देखकर मैंने यह निश्चय किया कि इन नन्हें-मुन्नों के लिए वास्तविकता के धरातल पर कोई भी काम नहीं करता है। किसी को तो इस नारकीय जीवन के अभिशाप को रोकना होगा तो क्यों न मैं खुद ही शुरूआत कर दूँ, तब से मैंने बाल मजदूरी एवं बाल तस्करी रोकना अपना एक प्रमुख मिशन बना लिया है, जिसके लिए मैंने अपना एक मुखबिर तंत्र विकसित किया जो मुझे इस तरह की सूचना उपलब्ध करवाता है मेरा मुखबिर तंत्र हमेशा गुप्त रहता है क्योंकि बाल मजदूरी एवं बाल तस्करी करने वाला एक बड़ा माफिया है जिसकी काफी लम्बी शृंखला और पहुँच है, इस तरह के ज्यादातर कार्य रात्रि में होते है, इस कारण कई रातों में जागकर इन कार्यों को करता आया हूँ, मैंने यह कार्य 2020 तक लगभग 12 वर्षों तक किसी को भी नहीं बताए, लोग सोचते थे कि मैं यह सूचना आगे पहुँचाता हूँ जहाँ से प्रशासन यह कार्य करता है, 2020 में देश के मुख्य समाचार पत्रों में मेरे कार्यों का प्रकाशन किसी स्टींग के द्वारा प्रकाशित हुआ तब जनता व प्रशासन को पता चला। इन कार्यों के तहत हमने वर्ष 2022 के अप्रैल महीने तक लगभग 400 से ज्यादा स्कूली लड़के-लड़कियों को बाल मजदूरी व बाल तस्करी से आजाद करवाया है, 2020 से पहले हमारे पास इस तरह के कोई आँकड़े लिखे हुए नहीं थे, शिक्षा विभाग के उदयपुर संभाग के तत्कालीन संयुक्त निदेशक श्री शिवजी गौड़ ने मुझे आँकड़े जुटाने का बोला तब हमारी टीम को लगभग 2 महीने लगे यह नामजद आँकड़े इकट्ठा करने में, जिसमें मैंने रात्रि में कई गाड़ियों को अकेले ही पीछा करके रूकवाकर बच्चों को मुक्त करवाया है, अभी तक मैंने गुजरात, महाराष्ट्र, आंधप्रदेश एवं राजस्थान के कई जिलों से बच्चों को मुक्त करवाकर वापस शिक्षा से जोड़ा है। बाल मजदूरी एवं बाल तस्करी से मुक्त करवाए गए बच्चों की अगर पुलिस रिपोर्ट दर्ज नहीं होती है तो उन्हें पुनर्वास केन्द्रों पर भी नहीं भेज सकता है। हमारे द्वारा किए जाने वाले रेस्क्यू में जो बच्चे मुक्त करवाए जाते है उनकी पुनर्वास की व्यवस्था मैंने स्वयं अपने स्तर से करना शुरू किया है। हर रेस्क्यू में हमें नई-नई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। यह कार्य लगभग मध्य रात्रि के समय होते है। मैंने यह कार्य 12 वर्षों तक अकेले ही किए है। कई बार रात्रि में गिरोह ने मुझे जान से मारने के इरादे से घेरा भी है, जानलेवा हमले भी हुए है, आए दिन जान से मारने या यह क्षेत्र छोड़कर चले जाने की धमकियाँ भी मिलती है। लेकिन जब मासूम बच्चों का जीवन खतरे में होता है तो इन हमलों व धमकियों को मैं नजरअंदाज करके दुगुनी मेहनत से काम करता हूँ। धीरे-धीरे इस तरह के कार्य का क्षेत्र इतना विस्तारित हो गया है कि आसपास के ब्लॉक से भी मुझे इस तरह की घटनाएँ रोकने के फोन या मैसेज आते है और मैं इनको रोकने की पूरी कोशिश करता हूँ। अब हमारी एक बड़ी टीम भी बनने लगी है जो इस कार्य में पूरी मदद करती है। मैंने मेरे मोबाइल नम्बर को 24x7 चालू रहने वाली हैल्पलाइन बनाया है जहाँ किसी भी तरह का फोन या मैसेज आते ही तुरंत हर संभव सहायता उपलब्ध करवाता हूँ, इस कार्य में पुलिस व प्रशासन का पूरा सहयोग मिलता है, हर रेस्क्यू में होने वाली अलग-अलग घटनाओं में से एक घटना को विस्तार से बताना चाहता हूँ। 2014-15 के लगभग गर्मी की छुट्टियों में कोई दलाल 4 बच्चों को होटल में अच्छा खाना व काम दिलवाने का लालच देकर आंधप्रदेश ले गया, बच्चों को भी नहीं बताया कि उन्हें किस स्थान पर ले जाया जा रहा है, वहाँ बच्चों को कैमिकल फैक्ट्री में काम पर रखा गया तथा रहने व भोजन की व्यवस्था भी फैक्ट्री में ही की गई, केमिकल की बदबू इतनी घातक रूप से फैली हुई थी कि बच्चों को साक्षात मौत नजर आ रही थी। लेकिन 2 महीने का एडवांस एग्रीमेंट होने से बच्चे वापस घर भी नहीं जा सकते थे। बच्चों ने सोच लिया कि यहाँ से मरने के बाद ही निकल पाएंगे। बच्चों ने किसी स्थानीय मजदूर के फोन से मुझे फोन करके बोला

Rajasthan Education Department

कि सर हमें बचा लो नहीं तो दो दिन बाद हमारी लाश ही मिलेगी और फोन काट दिया, जगह का नाम भी नहीं बताया, मैंने मेरी स्थानीय टीम से संपर्क किया तो टीम को इस बात की जानकारी नहीं थी, अगले दिन बच्चों का वापस फोन आया लेकिन उनको आंध्रा केमिकल फैक्ट्री के अलावा कोई भी जगह का नाम नहीं पता, केमिकल फैक्ट्री का भी नाम नहीं पता, क्योंकि वहाँ की भाषा बच्चों को पढ़नी नहीं आती थी, हमारे पास बड़ा टास्क था। हमने व टीम ने सभी जगह से खबरें लाने व दलाल का पता करने की मुहिम शुरू की, दो दिन बाद उन बच्चों को अनेक परिस्थितियों का सामना करते हुए वहाँ से मुक्त करवाया।

शिक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता के अभाव में बालिका शिक्षा प्राथमिक स्तर के बाद रूक जाती है, हमारी टीम ने प्रयास कर ऐसी बालिकाओं को ढूँढ़ने का प्रयास किया जो अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाती है और ड्रॉप आउट हो जाती है या अनामांकित है, इस तरह के प्रयास वर्षभर चलते रहते हैं। अभी तक लगभग 300 से ज्यादा ऐसी बालिकाओं को ढूँढ़कर वापस शिक्षा एवं उच्च शिक्षा से जोड़ा है जिनकी शिक्षा का खर्च मैं स्वयं वहन करता हूँ। अब कई बालिकाएँ शिक्षा पाकर नौकरी भी कर रही है। बालिकाओं को शारीरिक व मानसिक मजबूती प्रदान करने हेतु प्रतिदिन आत्मरक्षा एवं योगा का प्रशिक्षण देता हूँ।

इन सभी परिस्थितियों का सामना करने का मेरा एक मकसद होता है कि कोई भी लड़का-लड़की शिक्षा से वंचित ना रहे, हमारी मेहनत और बच्चों की मेहनत का आज यह नतीजा निकल रहा है कि हमारा परीक्षा परिणाम हमेशा शत-प्रतिशत रहता है।

शिक्षा में नवाचार किया, जिससे प्राइमरी कक्षा के बच्चों के बस्ते का भार कम करने के लिए उनके लिए 3 इन वन नोट बुक एवं बुक्स बनाई ताकि बच्चा कक्षा कार्य की नोटबुक विद्यालय में रखे एवं गृहकार्य की नोट बुक ही घर पर लेकर जाए, क्योंकि मेरे विद्यालय के आसपास का संपूर्ण क्षेत्र पहाड़ी है जहाँ से छोटे बच्चों का आना-जाना भी परेशानी भरा होता है, वहाँ बस्ते का वजन उनके लिए और परेशानी पैदा करता है।

शिक्षण कार्य सुचारू रूप से चलता रहे इसके लिए कुछ भौतिक रूकावटों को दूर करना जरूरी था जिसके लिए हमने विद्यालय में पीने के लिए स्वच्छ पेयजल हेतु बोरिंग बनवाकर पनघट लगवाया, सभी बच्चों को स्वेटर व जूते मौजे वितरण करवाए। जिनमें भामाशाहों का सहयोग लिया जाता है एवं उनसे स्टेशनरी वितरण करवाई जाती है।

कोरोना महामारी की गाइडलाइन लागू करवाना एवं कोरोना टीकाकरण करवाना जनजाति क्षेत्र में एक बहुत बड़ा टास्क था, जिसको टीम के सहयोग से लागू करवाया एवं हमारी मादडी ग्राम पंचायत भारत की पहली जनजाति पंचायत बनी जहाँ सबसे पहले 100% सर्वाधिक टीकाकरण हुआ मात्र 15 दिन में, टीकाकरण में हमारी टीम को लड़ाई-झगड़ों, मारने जैसी धमकियों का कई दफा सामना करना पड़ा।

उपर्युक्त सभी कार्य करने के लिए समुदाय में सामाजिक भागीदारी में हमारा शामिल होना जरूरी है तभी जनता अपने ऊपर विश्वास करती है। विद्यालय समय के अलावा मैं सामाजिक कार्यों को करने के लिए हमेशा तत्पर रहता हूँ, जैसे-सरकारी योजनाओं का लाभ, विद्यालय विकास, सामाजिक एवं आपसी समस्याओं में समझाइश, राशन वितरण की निगरानी आदि।

पर्यावरण संरक्षण के लिए टीम बनाकर प्रतिवर्ष सैंकड़ों की संख्या में पौधारोपण कर उनका संरक्षण करना, जंगल काटने वालों को सुबह जल्दी जंगलों में टीम के साथ जाकर रोकना। पिछड़ा क्षेत्र होने से युवाओं को उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पाता है जिसके लिए विशेषज्ञों द्वारा उचित मार्गदर्शन दिलवाना, आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को पार्ट टाइम जॉब दिलवाना ताकि वो पढ़ाई चालू रख सके। निःशुल्क गाइडेंस एवं काउंसलिंग देता हूँ।

अपने क्षेत्र में हमेशा अच्छा कार्य करते रहने के लिए मैं अपने शैक्षिक स्तर में एवं कार्यों से संबंधित पाठ्यक्रम में प्रवेश लेकर अध्ययन करता रहता हूँ। संपूर्ण जनजाति क्षेत्र में जागरूकता कह दीजिए या लोगों में डर की भावना व्याप्त होने से लोग किसी दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की मदद करने से डरते हैं क्योंकि मदद करते समय अगर घायल व्यक्ति मर जाता है तो मृतक के परिजन सहायता करने वाले पर आरोप लगाते हैं कि आपके कारण यह मरा है, इस तरह की घटनाओं के घटित हुए स्थान पर मैं स्वयं जाकर घायल व्यक्ति की मदद कर उसको अस्पताल पहुँचाता हूँ जिससे अब लोगों में जागरूकता आने लगी है।

स्थानीय खेलों को बढ़ावा देता हूँ ताकि बच्चे परिवेश के खेलों में अच्छा प्रदर्शन कर सके। विद्यालयी लड़के-लड़कियों के साथ घटित होने वाली आपराधिक घटनाओं को रोकने एवं जागरूकता लाने के लिए विद्यालय के शिक्षण समय के बाद पुलिस मित्र का कार्य भी देखता हूँ, परिणाम यह हुआ है कि इस तरह की घटनाओं पर कुछ अंकुश लगा है।

जेंडर समानता के बारे में जागरूक करता हूँ, ताकि लड़के-लड़कियों में सम्मान का भाव पैदा हो, बालिकाओं के साथ होने वाली घटनाओं को रोकने के लिए हमारी टीम हमेशा तत्पर रहती है, आज बालिकाओं में इतना विश्वास हो गया है कि वो अपने साथ होने वाली हर घटना का मेरे से आसानी से जिक्र कर पाती है।

लड़के-लड़कियों दोनों को शिक्षण के अलावा सामाजिक कार्यों में प्रबंधन करने एवं जीवन में आने वाली मुसीबतों से आसानी से सामना करना जैसे प्रबंधन सिखाता हूँ। लोगों मे रक्तदान के प्रति जागरूकता कैम्प का आयोजन, मैं अभी तक 51 बार रक्तदान कर चुका हूँ। प्रतिवर्ष बच्चों को शैक्षिक भ्रमण के लिए ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण करवाना। प्रतिवर्ष विश्व योग दिवस पर विशाल योग शिविर का टीम के द्वारा प्रबंधन करना एवं सैंकड़ों की संख्या में लोगों एवं बच्चों को योगा सिखाना। कुपोषण मिटाने के लिए लोगों को जागरूक करना, आँगनबाड़ी केन्द्रों पर जाकर बच्चों की माताओं को बिना किसी अतिरिक्त खर्च के घर में या खेत में उपलब्ध चीजों से कुपोषण दूर कर पोषण प्राप्त करने की जानकारी देना। अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर की वार्ताओं में भाग लेकर अपने सुझाव प्रशासन को उपलब्ध करवाना ताकि कुछ नवाचार हो सके।

वार्ड नं. 7, गोरेड़ी करणा, डेगाना, नागौर (राज.)
मो: 9414844945

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

Language Communication at the End of a Lesson

❒ Dr. Ram Gopal Sharma

Language is a vehicle for learning. It is through language that learners access the content of the lesson and communicate their ideas. So, as a teacher, it is our responsibility to make sure that language isn't a barrier to learning. One way to achieve this is for teachers to become more communicative before the learners while teaching in the class. We should notice the possible challenges that language presents to learning. It might be the first time a student has come across certain vocabulary or structures in the language. A teacher who is 'language aware' understands why students face these difficulties and what they can do to support students. Here are some expressions that can be used at the end of a lesson.

A. General expression

- That's all for today.
- That'll do for today's lesson.
- We'll stop now.
- We've finished for today.
- I don't think there is anything else in this lesson.
- I don't think you've had this word before.
- We will practice that one more time next week.
- Today's lesson was a hard work so we will do something a little easier in the next class.
- It's been mainly grammar today, so next class we will do more..
- I was pleasantly surprised how easily you all found that.
- I'll think of something more difficult for next class.
- Oh yes! You are right, there is a holiday.
- In that I'll see you on Monday
- Please apologize to your next teacher for me making you late.
- We have finished the lesson/course/book, so next class we will take revision.
- I'm on holiday next week, so there will be cover teacher/ replacement teacher.
- I think we have no more problems with passive voice/fractions.
- Next class we will move on to next chapter.
- We have run out of time. So we will continue it in next class.
- You have done really well today.
- It's break time.
- Let's go through what we have studied today.
- We didn't have time for the role plays/free speaking activity/to go through the homework, so we'll do that in next class.
- Don't you feel more confident after taking test?
- Did you have fun today?
- What was your favourite part in today's lesson.
- Do you want to play/take another quiz next time?
- Do you need any more practice of…..?
- We will do rest part in next class.
- You, want to get home to watch the big match/IPL/……

B. Not time to stop

- It isn't time to finish yet.
- The buzzer/bell hasn't gone yet.
- There are still two minutes to go.
- We still have a couple of minutes left.
- There's another five minutes yet.
- This lesson isn't supposed to finish until five past.
- Your watch must be fast.

C. Some time left

- We have five minutes left.
- We seem to have finished a few minutes early.
- My watch must be slow.
- We have an extra five minutes.
- It seems we have two or three minutes in hand/to spare.
- There isn't any point (in) starting a new exercise.
- There's no point (in) beginning anything else this time.
- Sit quietly until the bell goes.
- Carry on with the exercise for the rest of the lesson.

D. Time to Stop

- It's ten to ten. We'll have to stop now.
- It's almost time to stop
- I'm afraid it's time to finish now.
- I make it almost time. We'll have to stop here.
- Is that the bell I hear?
- The other class is waiting to get in, so we'd better make a move.
- We'll have to finish there.
- There's the buzzer/bell, so we must stop working now.
- That's the buzzer/bell. It's time to stop.
- All right! That's all for today, thank you.
- Right! You can put your things

Rajasthan Education Department

away and go.
- That will do for today. You can go now.

E. Wait a minute
- Hang on a moment.
- Just hold on a minute.
- Stay where you are for a moment.
- Just a moment, please.
- One more thing before you go.
- Don't go rushing off. 1 have something to tell/say to you.
- Back to your places!
- We'll finish this next time.
- I don't think we've got time to finish this now.
- We'll do/read/look at the rest of this chapter on Thursday.
- We'll finish off this exercise in the next lesson.
- We've run out of time, but we'll go on with this exercise next time.
- We'll continue (with) this chapter next Monday.
- We'll continue working on this chapter next time.

F. Some additional phrases
- Please re-read this chapter for Friday's lesson.
- Revise what we did today and then try exercise 4.
- Go through this section again on your own at home.
- This was your homework from last time.
- You were supposed to do this exercise for homework.
- Which question are you on?
- How far have you gone?
- Where are you up to?
- When I say 'goodbye everyone', you have to say 'good bye teacher'
- When I say 'you can go now', you have to say 'thank you, teacher'
- Let's practice a couple of times, goodbye every one.
- Please don't make any noise in the corridor as others are taking test/classes.
- Line up next to the door.
- Get into a queue.
- Wrap up warm, It's cold out there!
- I didn't notice your new shoes because you were sitting down.

G. Setting homework
- This is your homework.
- This chapter/lesson/page/exercise is your homework.
- This is your homework for tonight/today/next time.
- For your homework, would you do exercise 10 on page 23?
- Prepare the last two chapters for Monday.
- Prepare as far as/down to/up to page 175.
- Your homework for tonight is to prepare chapter 17.
- I'm not going to set (you) any homework this time.
- Finish this off at home.
- Finish off the exercise at home.
- Do the rest of the exercise as your homework for tonight.
- You will have to/must read the last paragraph at home.
- Complete this exercise at home.
- I'm going to give you one more chance to do the homework from the last chapter, so anyone who's already done can enjoy their free time.
- I think we all need some more practice, so for homework solve……..
- If anyone needs extra practice, I suggest doing exercise…..
- As you have a holiday, I am going to give you a bit more homework today than usual.
- I told you about your homework earlier and it is……
- This homework is long/difficult, so I'll give you till some time next week to finish it.
- Finish the question you're (working) on at the moment, and do the rest at home.

H. Announcement of test
- There will be a test on Wednesday.
- I shall give you a test on these lessons/chapters sometime next week.
- Learn the vocabulary because I shall be giving you a test on it in the next lesson.
- You can expect a test on this in the near future.
- Please revise lessons 9 and 10. There will be a test on them sometime/very soon.
- You did well in test.
- You failed this test.
- You, Mukul, passed the test with flying colours.
- After this test I must say, 'You are back on track now'

I. Reminder for home work
- Don't forget about your homework!
- Remember your homework.
- Please pick up a copy of the exercise as you leave.
- Remember to take a sheet as you leave.
- Collect a copy of your homework from my desk.
- Note down what you have to do before the next lesson.
- Prepare the next chapter before Tuesday.
- There is no homework today.

Chief Block Education Officer
Bajju Khalsa (Bikaner)
Mob : 9460305331

Rajasthan Education Department

A Saga Of Success

❒ **Vijay Laxmi Yadav**

Our journey started in the academic year 2019-2020 when Government of Rajasthan took a marvellous initiative by launching Mahatma Gandhi government English Medium School at each district headquarter under the flagship scheme of government–A boon to the economically weaker section of society who wish to educate their children in English medium schools but cannot afford the high fees charged by private English medium schools.

Initially we faced many challenges like infrastructure-insufficient classrooms, no boundary walls, insufficient furniture etc but with the rigorous efforts we got the boundary wall constructed (Cost approx.–25 lakhs) .Since school was from I to XII with all three faculties (Art, Science, Commerce) it was difficult to run the school in single shift so after due permission from higher authorities the school was run in double shift.

With the consent of parents, we decided a uniform for students and also dress code for teachers. We divided students in 5 houses Green (Prithvi), Red (Agni), Blue (Jal), Yellow (Vayu), Purple (Aakash) Uniform gave a wonderful look to them. We have ID for students as well as for staff. In the first year, students won many prizes - One of the student of class 10th got first position in Judo at district level and was selected for State. Avika of class 8 got first position at district level in spell wizard. In 2019 -20 science fair students got 1st, 2nd and 3rd position out of 8 who participated and in Scientia organised by Bhagwant University the three positions I, II and III captured by our students.

In Feb 2020 we had our first annual function cum alumni meet- "Fusion 2019-20." Performance of students was fabulous and was highly appreciated by one and all. Before the end of the session corona attacked but the Unprecedented covid-19 did not let our spirits dampen. We made class wise groups and through optimum use of technology via e-learning which included PPT videos, modified lesson plans, YouTube webinars etc,a concerted effort was made. Students were thoughtfully guided to follow a routine and see that it is adhered to.

In 2021-22 pre primary classes nursery, LKG and HKG started and we all gave them a warm welcome. Our endeavour to facilitate the academic process reached new dimensions. In the first batch of class 10th board of MGGS English medium session 2021-22 Yash Choudhary scored highest percentage 97.17%. 100 out of 100 in Sanskrit Science and Maths. We had our second annual function "Euphoria 2021-22".

Our Morning assembly includes prayer, pledge, news, thought of the day, moral lessons and GK questions in English. Even our efforts to develop English communication skills of students proved successful when director Mr Gaurav Agarwal sir visited our school and interacted with the students and highly appreciated them. Sir said and also wrote in our visitor's book that it is the best Govt. School he has ever visited.

The Current session started with joy and celebration. At district level Science fair Exhibition our school snatched 14 prizes out of 15. Rajyavardhan of class XII will represent in JUDO at State Level. Devraj Gurjar won silver medal in district boxing Tournament.

Slowly and gradually, we are heading towards our go all of perfection. In the present scenario students from private English medium schools of Ajmer wish to get admission in our school. We extend our profound thanks to Rajasthan Government for opening MGGS school even at panchayat and Block level.

Principal
MGGS Vaishali Nagar, Ajmer (Raj.)

Rajasthan Education Department

केबीसी से शिक्षक तक और शिक्षक से हॉट सीट तक

❒ शोभा कँवर

शीर्षक पढ़ कर आप सभी लोगो को उत्सुकता हो रही होगी कि ये क्या माजरा है? पर हाँ ये बिल्कुल सत्य है। अगर किसी चीज को शिद्दत से चाहो तो पूरी क़ायनात आपको उससे मिलाने में जुट जाती है और मंजिल खुद आपको ढूँढ़ते हुए कहती है, बता मेरा मुन्तज़िर कहाँ है?

जी हाँ मैं शोभा कँवर इसका जीता-जागता उदाहरण हूँ। मैं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बरुन्धन में एक शिक्षक के रूप में कार्यरत हूँ। पिछले कुछ दिनों से शिक्षक जगत में चर्चा का विषय हूँ, कारण है कौन बनेगा करोड़पति में मेरा हॉट सीट तक पहुँचना।

जी बिल्कुल ठीक पहचाना आप सभी ने। मैं वही शोभा कँवर हूँ जो कोटा व बून्दी से पिछले 22 सालों में पहली महिला प्रतियोगी है, जो इस मुकाम पर पहुँची और साथ में राजस्थान की पहली अध्यापिका भी।

ये सफर इतना आसान भी नही था। पिछले 22 वर्षो के अथक प्रयास व धैर्य का ही परिणाम है। वर्ष 2000 में जब केबीसी शुरू हुआ था तभी से मैं लगातार प्रयास कर रही थी। कॉल हर बार आता, तीन ऑडिशन भी दिए पर; इसी केबीसी को देखते-देखते ही बिना किसी तैयारी के मैंने 2007 में आर.पी.एस.सी. परीक्षा पास करके शादी के सोलह साल बाद शिक्षक की नौकरी हासिल की। 15 वर्ष बाद 2022 में आखिर मेरी मेहनत रंग लाई और मैं कौन बनेगा करोड़पति की हॉट सीट पर अमिताभ बच्चन जो इस सदी के महानायक हैं, उनके सामने बैठी।

अब आप कहेंगे इसमें क्या बड़ी बात है? पिछले 22 सालों से सैंकड़ों लोग वहाँ तक पहुँचे हैं, जी बिल्कुल सही है पर 22 साल के केबीसी के इतिहास में पहली बार अमिताभ जी ने किसी शिक्षक से प्रभावित होकर 11,00,000 का चेक उसे दिया हो। उन्होंने कहा कि मैं आपके बेटियों के लिए किए जा रहे कार्यो से बहुत प्रभावित हूँ और आपकी कुछ मदद करना चाहता हूँ। मेरी उस मदद से कोई एक लड़की भी पढ़-लिख कर अपनी मंजिल पाती है तो मुझे खुशी होगी।

2007 में मेरी जॉब लगी तभी से मैं प्रतिवर्ष एक बालिका को गोद लेती हूँ और उसकी पढ़ाई का खर्च वहन करती हूँ। अपनी तीन महीने की पहली सैलरी से मैंने विद्यालय में झूला लगवा कर डोनेशन की शुरुआत की थी।

अभी तक 60 से 70 बालिकाओं की मैंने पढ़ाई के लिए मदद की है। उनमें से कई बालिकाएँ अब अपने पैरों पर खड़ी है तो कुछ उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर है। ऐसा नही है कि मैं सिर्फ बालिकाओं की ही मदद करती हूँ। कोई भी बालक या बालिका मुझसे मदद की गुहार करता है तो मैं उसकी हर संभव मदद का प्रयास करती हूँ। इसके लिए मुझे महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा गरिमा बालिका संरक्षण पुरस्कार भी मिला है 2020 में। 25000 रुपये का चेक भी श्रीमती ममता भूपेश जी के द्वारा प्रदान किया गया। इस राशि को भी मैंने बच्चों के लिए ही डोनेट किया।

वैसे बून्दी जिले में मेरी पहचान एक नवाचारी शिक्षिका के रूप में है। साथ ही मेरे द्वारा बनाए गए टी.एल.एम. बून्दी डाइट में प्रदर्शित हैं। मेरा विद्यालय भारत का एकमात्र ऐसा विद्यालय है जहाँ के बच्चे अमेरिका के कैलिफोर्निया स्थित एक स्कूल के बच्चों के पेन फ्रेंड हैं। पिछले 8 सालों से ये पत्र व्यवहार निरन्तर जारी है। इस बार 24 बच्चे पेन फ्रेंड हैं और ये आपस में अपने आचार-विचार, संस्कृति व पढ़ाई की बातें भी साझा करते हैं।

मेरा विद्यालय के भौतिक विकास व पर्यावरण या फिर नामांकन या सह शैक्षिक गतिविधियों में भी पूर्ण योगदान रहा है। पिछले 7 सालों से सर्वाधिक नामांकन मेरे द्वारा ही। प्रतिवर्ष औसतन 50 बच्चों का। पिछले 15 वर्षो से कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों के लिए स्कूल यूनीफॉर्म, स्वेटर, शैक्षणिक सामग्री व अन्य मदद भी।

2015 से वर्तमान विद्यालय में भामाशाहों की मदद से टीन शेड, 45×75 का प्रार्थना सभा मंच, वाटर कूलर, झूला, टीवी, नल, कार्पेट, फर्नीचर, वेलबिंग दीवार, खिलौना बैंक, आँगन बाड़ी में भी, लेपटॉप, फिसलपट्टी, कमरों की साजसज्जा और अन्य कई कार्य करवाए जा चुके हैं।

विद्यालय में प्लांटेशन में भी योगदान रहा है। अभी तक मेरे द्वारा लगाए गए लगभग 50 पौधे जीवित अवस्था मे हैं। ये सभी पौधे मैंने स्वंय के खर्च से लगवाएँ हैं।

खेल-खेल में शिक्षण व बच्चों को विभिन्न प्रतियोगिताओं की तैयारी में भी थोड़ी मदद कर देती हूँ। वर्तमान में एन.एम.एम.एस. परीक्षा के लिए भी कक्षाएँ मेरे सहयोग से संचालित हो रही है। पिछले तीन सालों से ये निरन्तर होता आ रहा है।

विद्यालय के कब-बुलबुल की गतिविधियों का संचालन स्काउट गाइड में भी थोड़ा सा योगदान है। राज्य स्तर पर बालिका शिक्षा सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में भी कुछ योगदान हो ही जाता है।

कोविड के दौरान बच्चों की शिक्षा व वैक्सिनेशन के लिए भी प्रयासरत रही। साथ ही वेक्सिनेशन ट्रायल के लिए प्रधानमंत्री जी को पत्र लिखने वालों में भी शामिल थी।

बस ये तो मेरा छोटा सा योगदान मेरे विद्यालय व बच्चों के लिए। पर अभी तो बहुत कुछ करना बाकी है। कवि रवींद्रनाथ ठाकुर की ये पंक्तियाँ हमेशा ही मुझे सम्बल देती है- एटला चालो, एटला चालो, एटला चालो रे।

मैं सभी विद्यार्थियों और पाठकों को ये संदेश देना चाहती हूँ हमारी शिविरा के माध्यम से कि- 'लहरों से डर कर नौका पार नही होती, कोशिश करने वालों की हार नही होती।' इसलिए कोशिश करते रहो, एक दिन मंजिल अवश्य मिलेगी।

अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बरुन्धन,
ब्लॉक-तालेड़ा, जिला-बून्दी, (राज.)
मो: 9928407856

Rajasthan Education Department

बालशिविरा

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपनी सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

मैं कुछ बनना चाहती हूँ, कुछ करना चाहती हूँ

संसार की जंजीरों को तोड़,
खुले आसमान में उड़ना चाहती हूँ
मैं कुछ बनना चाहती हूँ।

सुबह, शाम, दिन, रात, बस
ख्यालों की दुनिया से उबरना चाहती हूँ
मैं कुछ करना चाहती हूँ।

जो मुझ पर विश्वास करते हैं,
उनका भरोसा कायम रखना चाहती हूँ,
मैं कुछ बनना चाहती हूँ।

गहरे समुद्र से लेकर ऊँचे आसमान,
तक का सफर तय करना चाहती हूँ,
मैं कुछ करना चाहती हूँ।

हर बेटी का सपना अपने पिता से जुड़ा है,
इस सपने को पूरा करना चाहती हूँ,
मैं कुछ बनना चाहती हूँ।

पूरे जोश और उमंग के साथ,
आगे बढ़ना चाहती हूँ,
मैं कुछ करना चाहती हूँ।

शुभा गर्ग, कक्षा–IX B,महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर

शिक्षक

अक्षर-अक्षर हमें सिखाते,
शब्द का ज्ञान हमें कराते,
मीठे-बोल बोलना हमें सिखाते,
गुरु-जन हमारे सबसे प्यारे।

हाथ पकड़ हमें चलना सिखाते,
हर प्रश्न का उत्तर देना सिखाते,
हर मुश्किल का हल देते है,
गुरु-जन हमारे सबसे प्यारे।

अंधकार जब भी छा जाता,
गुरु-जन हमें उससे निकालते
साथ हमेशा रहते वे लो,
गुरु-जन हमारे सबसे प्यारे।

पढ़ना-लिखना हमें सिखाते,
हर एक चीज का ज्ञान कराते,
दुनिया की हर चीज सिखाते
गुरु-जन हमारे सबसे प्यारे।

गुनीशा शर्मा, कक्षा–VII B,
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय,
कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर

Rajshala Education Department
सत्यमेव जयते

मेरा लक्ष्य

जमाने की पाबंदिया तोड़,
उड़ना है,
दूसरों के लिए नहीं,
खुद के लिए आगे बढ़ना है।
हर कीमत देने को तैयार हूँ,
सपनों के लिए लड़ने को तैयार हूँ,
वक्त की कीमत पहचान रही हूँ,
डर से मैं क्यों हार रही हूँ?

अब और नहीं मुझे डरना है,
दूसरों के लिए नहीं,
खुद के लिए आगे बढ़ना है।
किस्मत के भरोसे नहीं चल सकती,
मेहनत ही मेरी चाबी है,
लक्ष्य को पाना ही,
मेरी असली कामयाबी है।
कामयाबी के लिए वक्त को अपना

साथी बनाना है,
लक्ष्य की राह पर चलते जाना है,
दुनिया को मुट्ठी में नहीं करना,
खुद मुट्ठी से बाहर आना है।
दूसरों के लिए नहीं,
खुद के लिए आगे बढ़ता है।

यशस्वी गुरबानी, कक्षा–IX B,
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय,
कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर

स्वच्छता

स्वच्छता में योगदान निभाना है,
सबको यही बतलाना है।
घर-घर जाकर बताना है,
सबको यह सिखलाना है।
गाँधी का यह सपना है,
हम सबका यह अपना है।

स्वच्छ भारत अपनाना है,
सबसे यही करवाना है।
कचरे को उठाना है,
गंदगी को हटाना है।
बीमारी को दूर भगाना है,
स्वच्छता अभियान चलाना है।

पेड़-पौधों को लगाना है,
पर्यावरण को बचाना है।
शुद्ध वायु का आनन्द उठाना है
अच्छा स्वास्थ्य अपनाना है।

भावना जाँगिड़ कक्षा–VIII B,
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय
कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर

Rajasthan Education Department

पुस्तक समीक्षा

प्रवाह

लेखक : देवेन्द्र पण्ड्या; **प्रकाशक**: करणी क्रियेशन, बीकानेर; **पृष्ठ** : 160; **मूल्य**: ₹ 290

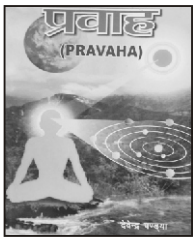

'कवि एवं निबन्धकार के रूप में श्री देवेंद्र पण्ड्या का नाम सुपरिचित है। राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर के सहयोग से प्रकाशित उनकी पुस्तक 'प्रवाह' भाव, ज्ञान एवं आध्यात्म की त्रिवेणी है जो चिन्तन की भाव धरा पर प्रवाहित हो रही है। जीवन में होने वाले अनुभवों को अपने दृष्टिकोण से छोटे छोटे निबन्धों का रूप देकर आलोच्य पुस्तक प्रवाह को तीन भागों में बांटा गया है–सर्ग प्रथम में भावप्रवण, द्वितीय सर्ग में शिक्षा से सम्बन्धित तथा तृतीय सर्ग में आध्यात्मिक विषयों से सम्बन्धित अनुभव जन्य एवं विविधता लिए हुए 36 निबन्धों का सुन्दर संग्रह है। लेखक के दैनंदिन जीवन के अनुभूत विचारों की सुगठित शृंखला के रूप में पुस्तक हमारे सामने आती है।

प्रथम सर्ग के भावप्रवण निबन्धों में प्रस्तुति नामक निबन्ध के प्रारंभ में ही लेखक लिखते हैं ''मानव अथवा प्राणी मात्र का अस्तित्व बोध ही जीवन है तथा यह जीवन रूपी रचना उस महान रचनाकार की ही प्रस्तुति है।'' कहकर परम सत्ता के परम वैभव का वर्णन किया है।

'परिवर्तन' नामक निबन्ध में प्रकृति के साथ साथ जीवन में भी बहुविध परिवर्तन होते रहते हैं, परिवर्तन प्रकृति का नियम है, Change is the law of nature परिवर्तन समय की मांग भी है किन्तु उससे भी अधिक आवश्यकता है सकारात्मक दिशा निर्देशन की, सही वातावरण निर्माण की।

'बोलना' नामक निबन्ध में संभाषण के महत्त्व को बताते हुए लेखक कहते हैं कि तोल मोलकर बोलना ही वांछनीय है क्योंकि ''बातन हाथी पाइए बातन हाथी पाँव।''

'संतुलन' नामक लेख में सम्पूर्ण सृष्टि के संतुलन से सामंजस्य का महत्त्व बताते हुए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संतुलन का महत्त्व प्रतिपादित किया है। 'सूरत और सीरत' निबंध में सृष्टि की अनुपम कृति मनुष्य की आकृति एवं कृति की विभिन्नता में भी प्रकृति की सूरत और सीरत के रूप में समझाया है। मनुष्य की सूरत एवं सीरत के बारे में लेखक बता रहे हैं कि मनुष्य की सुंदरता दृश्यगत लक्षण है वहीं सीरत आंतरिक गुण धर्म है जो दृश्यगत न होकर अनुभूति जन्य है। संस्कार नामक निबंध में लेखक का मानना है कि संस्कार संस्कृति के निर्माणक तथा पोषक है। बालक के व्यक्तित्व के समुचित विकास हेतु अच्छे संस्कार अपेक्षित है। पुस्तक का नाम जिस लेख पर रखा गया है उस लेख में प्रवाह को क्रिया और प्रक्रिया दोनों बताते हुए लेखक लिखते हैं कि प्रवाह सदैव वंदनीय तथा वांछनीय होता है, क्योंकि स्थिरता तो निष्क्रियता, परितृप्ति एवं संतृप्ति की जो कई प्रकार की गंदगियों को जन्म देती है। प्रवाह ही परिवर्तन का मूल है प्रवाह आनंद का जनक है। प्रवाह ही जीवन की सरसता है तथा प्रवाह ही जीवन का लक्ष्य है।

प्रसंगानुसार हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत की कहावतों, लोकोक्तियों, दोहों एवं श्लोकों का बहुत सुन्दर प्रयोग किया है। बुढ़ापा नामक निबन्ध में बानगी देखिए–Man lives in deeds not in years.

कनिष्ठ बनाम वरिष्ठ निबन्ध में श्रीमद्भगवद्गीता का श्लोक द्रष्टव्य है–

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्देवेतरो जनः।
सः यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।

सुख दुख के अवश्यंभावी परिवर्तन को संस्कृत की सूक्ति से इस प्रकार समझाया गया है ''चक्रैव परिवर्तन्ते दुखानि सुखानि च।''

द्वितीय सर्ग जिसमें शिक्षा से सम्बन्धित दो निबंध हैं। ''ठहराव निश्चय कैसे?'' निबंध में प्रारंभिक शिक्षा में नामांकन के अनुरूप ठहराव नहीं रहने की समस्या की तरफ ध्यान आकृष्ट करवाते हुए लिखते हैं कि विद्यालय में शिक्षक ही विद्यार्थी के ठहराव का नियामक है अतः शिक्षण को उद्देश्य परक बनाने हेतु यह आवश्यक हो जाता है कि हम शिक्षण से जुड़े आवश्यक मनोवैज्ञानिक पक्षों को ध्यान में रखें। लेखक स्वयं शिक्षक रहे हैं, इसलिए उन्होंने विद्यालयी शिक्षा में आने वाली समस्याओं को निकट से देखा और समझा है।

'स्वाध्याय' नामक निबंध में स्वाध्याय को लेखक ने समस्त प्रकार के अभीष्ट लक्ष्य की सिद्धि हेतु आवश्यक ऊर्जा का अभीष्ट स्रोत बताया है।

तृतीय सर्ग में आध्यात्मिक निबन्धों की शृंखला में 'तकदीर और तदबीर' नामक निबंध में लेखक का विचार है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने भाग्य का शिल्पी है। साथ ही दूसरी तरफ हमें यह भी स्वीकारना पड़ेगा कि व्यक्ति पुरुषार्थ करता है परन्तु सफलता तो भाग्याधीन ही हैं। समुद्र मंथन में विष्णु को लक्ष्मी मिली तो शिव को विष मिला। अस्तु प्रारब्ध ईश्वरीय उपहार है तो भाग्य भी साहसी का पक्ष लेता है।

इसी सर्ग में 'आनंद' नामक निबन्ध में आनंद को आत्मतत्व से सम्बन्धित बताते हुए लेखक लिखते हैं कि आध्यात्मिक चिंतन धारा में आनंद को आत्मा व परमात्मा से जोड़कर देखा गया है। इसी क्रम में उपनिषदों के अनुसार यह आत्मा अथवा परमात्मा के तीन अनिवार्य गुणों (सत् चित् आनंद) में से एक है।

'मार्ग' नामक निबन्ध में सम्पूर्ण मानव जीवन का नियमन प्रकृति की चक्रीय व्यवस्था के अनुरूप मानते हुए लेखक लिखते हैं कि आवश्यकता है जीवन के शाश्वत आनंद को प्राप्त करने हेतु तथा उस पूर्ण व शाश्वत दुनिया का हिस्सा बनने हेतु समुचित मार्ग का चयन करते हुए संकल्पित मन से प्रयाण करने की ताकि बिन्दु रूपी जीवात्मा सिन्धु रूपी परमात्मा में विलीन हो सके।

प्रार्थना की मधुर गुंजन प्राणों में नयी संवेदना का संचार करती है, ऐसी संवेदना जिससे स्पन्दित होकर व्यक्ति दूरियाँ भूलाकर दूसरों से ही नहीं स्वयं के भी निकट आता है। ऐसा 'प्रार्थना' नामक निबन्ध में लिखा है।

इस प्रकार विषय वैविध्य, सरल सहज प्रवाहमय भाषा, स्थान स्थान पर प्रसंगानुकूल हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी एवं उर्दू के शब्दों एवं सूक्तियों के प्रयोग से निश्चित रूप से यह निबंध संग्रह पाठकों का कण्ठ हार बनेगा..... अस्तु।

समीक्षकः **पुरुषोत्तम देव पाण्डिया**
सेवानिवृत्त व्याख्याता (हिन्दी)
पाण्डिया भवन, पिलानी रोड, सादुलपुर, चूरू (राज.)
मो : 9461111531

Rajasthan Education Department

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

66 वीं जिला स्तरीय हॉकी खेल प्रतियोगिता हुई आयोजित

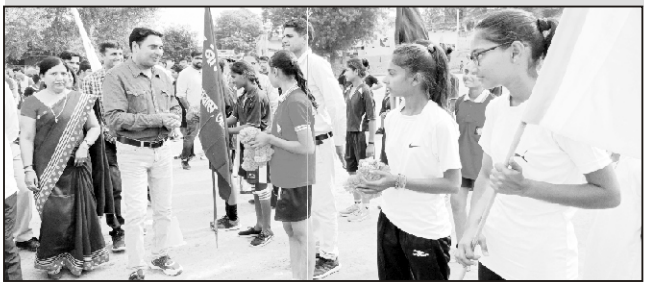

अलवर– शिक्षा विभाग में स्कूल बालक एवं बालिका 17/19 वर्ष हॉकी खेल प्रतियोगिता राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शाहजहांपुर, ब्लॉक नीमराना, जिला अलवर में मुख्य अतिथि माननीय विधायक बहरोड़ श्री बलजीत यादव के सानिध्य में शुरू हुई। संयोजक श्री कमल सिंह यादव ने सभी अतिथियों, खिलाड़ियों का विद्यालय परिवार की तरफ से हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया। खेल प्रतियोगिता में कुल 31 टीमों ने हिस्सा लिया।

शेरपुर के शिक्षकों ने छुट्टी में स्कूल पहुँचकर छात्रों, अभिभावकों के साथ मनाया दीपपर्व

धौलपुर– रोशनी एवं श्रद्धा के पर्व दीपावली की खुशियाँ व उजियारा स्कूलों तक भी पहुँच गया। धौलपुर जनपद में ट्रेन वाले स्कूल के नाम से चर्चित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय शेरपुर के प्रधानाध्यापक राजेश शर्मा ने अभिनव पहल करते हुए दीपावली अवकाश के बावजूद शिक्षकों के साथ स्कूल पहुँचकर विद्यालय खोलकर अभिभावकों एवं छात्रों के साथ दीपावली मनाई तथा एक दूसरे को त्योहार की बधाई देते हुए समाज व देश की खुशहाली एवं समृद्धि की कामना की। इस दौरान शिक्षकों, छात्रों व अभिभावकों ने मिलकर स्कूल परिसर को पूरी तरह घर की तरह सजाया। छात्राओं ने रंगोली बनाई। स्कूल में 101 दीपक जलाए गए तथा पूरे कैम्पस में मोमबत्ती के साथ रंग-बिरंगी लाइट लगाई गई। आबादी से बाहर बने स्कूल परिसर में पहली बार दीपों व लाइटों की रोशनी से जगमग होने पर दूर से ही आकर्षण का केंद्र बन गया। इसके अलावा सभी ने मिलकर पटाखे छोड़कर आतिशबाजी कर त्योहार का आनंद लिया। शुरुआत में स्कूली छात्राओं ने अक्षत कुमकुम से स्वास्तिक व रंगोली बनाकर दीपोत्सव के पर्व में अपनी सहभागिता निभाई। इसके बाद सरस्वती जी, गणेश जी व लक्ष्मी जी की पूजा कर श्रद्धा उल्लास के साथ ज्योति पर्व मना कर खुशियाँ मनाते हुए छात्रों को अच्छे नंबर से पास होने एवं विद्यालय की क्रमोन्नति के

साथ शैक्षिक उन्नयन के साथ समाज में आपसी भाईचारे समृद्धि तथा खुशहाली की कामना की गई। इस दौरान संस्थाप्रधान राजेश शर्मा ने विद्यालय में विद्यार्थियों का दोपहर का भोजन तैयार करने वाली चार कुक कम हैल्पर्स को दीपावली बोनस के रूप में साड़ी व मिठाई प्रदान की। इसके अलावा उन्होंने विद्यालय के शिक्षकों को भी उनके द्वारा उल्लेखनीय शिक्षण कार्य पर उपहार मिष्ठान भेंटकर दीपावली की शुभकामनाएँ दी। संस्थाप्रधान राजेश शर्मा ने बताया कि दीपावली हमारा महत्त्वपूर्ण पर्व होता है। इस शुभ मौके पर जिस प्रकार सभी व्यवसाई लोग अपने अपने प्रतिष्ठानों दुकानों पर पूजा-अर्चना कर दीपोत्सव मनाते हैं। क्योंकि स्कूल हम शिक्षकों का कार्य स्थल है, इसी आय से परिवारों का खर्च चलता है। हमारे घर परिवारों की रोशनी कार्यस्थल की वजह से ही होती है। ऐसे में छुट्टी होने के बावजूद विद्यालय में जाकर शिक्षक, छात्रों व अभिवावकों को बुलाकर दीपावली मनाकर खुशियाँ बांटी गई। इस दौरान अध्यापक सौरभ राजपूत, डॉ.अतर सिंह बघेल, एसएमसी अध्यक्ष खरगजीत, दीनू बघेल, गौरव बघेल, बनबारी, सुभाष, सुनील कुमार, कमलेश, गुड्डी देवी, अभिषेक, प्रज्ञा, भारती, पिंटू, चाइना सहित बड़ी संख्या में अभिभावक व स्कूली छात्र छात्रा मौजूद थे।

महिला सशक्तीकरण के संबंध में जानकारी प्राप्त की

बाड़मेर– पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर के प्रतिनिधि मंडल ने की नूतन पहल। महिला संगठन पाली की अध्यक्ष एवं पूर्व अतिरिक्त निदेशक शिक्षा विभाग नूतन बाला कपिला से मुलाकात कर महिला व बालिका सशक्तीकरण के संबंध में जानकारी प्राप्त की। पूर्व अतिरिक्त निदेशक नूतन बाला कपिला ने कहा कि नूतन पहल महिला संगठन जो विशेषकर महिलाओं एवं बेटियों को शिक्षा के प्रति जागरूक करना तथा स्वास्थ्य एवं सुरक्षा की जानकारी देना, बालिकाओं एवं महिलाओं की व्यक्तित्व एवं

अभिव्यक्ति का विकास करने के लिए सदा कार्य करते हैं इसके अलावा जेंडर समानता एवं सम्मान की भावना को बढ़ावा देना, महिलाओं में कौशल विकास के प्रति जागरूक कर आत्मनिर्भर बनाने का कार्य किया जाता है। इस अवसर पर पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर के जिलाध्यक्ष सालगराम परिहार, कोषाध्यक्ष जीताराम मकवाना, मोहन सिंह सांखला, स्टेट अवॉर्डी व्याख्याता बीजाराम गुगरवाल, बनाराम चौधरी प्रदेशाध्यक्ष शिक्षक संघ सहित बाड़मेर के स्टेट अवॉर्डी शिक्षक दल ने नूतन पहल संगठन के अध्यक्ष को धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर उपाध्यक्ष पुष्पा परिहार, सुधा कौशल सहित अन्य महिला एवं पुरुष उपस्थित रहे।

'अपना विद्यालय अपना विकास योजना' का शुभारंभ किया

सीकर– राउमावि. तिड़ोकी छोटी ब्लॉक नेछवा सीकर में 15 अगस्त 2021 को 'अपना विद्यालय अपना विकास योजना' का शुभारंभ समस्त ग्रामीणों एवं स्टाफ कार्मिकों के सहयोग से किया गया। संस्थाप्रधान श्री श्रवण कुमार ने बताया कि इस योजना में अब तक 5 लाख रुपये विद्यालय को प्राप्त हो चुके हैं, जिनको 'मुख्यमंत्री जन सहभागिता विद्यालय विकास योजना' में लेकर कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थियों का फर्नीचर क्रय, विद्यालय भवन रंग–रोगन, आईसीटी लैब, इन्वर्टर एवं बैटरी क्रय, चारदीवारी निर्माण, पेड़–पौधों हेतु ड्रिप सिंचाई पद्धति, वॉल पेंटिंग, साज–सज्जा एवं शिक्षण अधिगम सामग्री आदि सुविधाएँ प्राप्त की जा चुकी है। प्रधानाचार्य श्री श्रवण कुमार ने इस योजना में सहयोग देने वाले समस्त भामाशाह श्री राम सिंह शेखावत 31000 रुपये, विद्यालय स्टाफ द्वारा 31000 रुपये, श्री दुर्गाराम जी कस्वां 21000 रुपये, देवीसहाय जी कस्वां 11000 रुपये, सुरजा राम जी कस्वां 11000 रुपये, हरदेवा राम जी कस्वां 11000 रुपये, पूर्ण मल जी बिजारणियां 11000 रुपये, मदनलाल जी डूडी 11000 रुपये एवं अन्य समस्त ग्रामवासी जिन्होंने इस योजना में सहयोग दिया को बहुत–बहुत धन्यवाद एवं शुभकामनाएँ दी। इस योजना को सुचारू एवं नियमित रूप से संचालन हेतु भी निवेदन किया गया। संस्थाप्रधान की कलम से 'हो मन में कुछ जुनून कार्य का, तो बुलंदिया दूर नहीं। देखना है परिणाम उन उम्मीदों का, तो जनचेतना एवं सहयोग आसमां नहीं।'

भामाशाह ने विद्यार्थियों को बैग वितरित किए

जयपुर– बाबूलाल टेलर राष्ट्रपति पुरस्कृत शिक्षक की प्रेरणा से भामाशाह श्रीमती मुन्नी देवी देवी शर्मा पत्नी स्वर्गीय श्री महेश चंद्र शर्मा व इनके पुत्र श्री रजनीश कुमार शर्मा निवासी डूँगरी खुर्द जयपुर ने स्थानीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 1 से 11 तक के सभी छात्र छात्राओं को 125 बैग वितरित किए। बैग वितरण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुल्तान जी बुनकर सरपंच ग्राम पंचायत डोला का बास, विशिष्ट अतिथि श्री बाबूलाल जी मीणा पूर्व सरपंच, अध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार मीणा, श्री जीवत राम फौजी एवं बाबूलाल टेलर प्रेरक राष्ट्रपति पुरस्कृत शिक्षक, पूर्व सरपंच श्री हरिनारायण यादव, पीईईओ श्रीमती सीमा मीणा, श्री बजरंग लाल मीणा, श्री कमल पारीक, प्रधानाचार्य श्रीमती दुर्गावती मीणा, श्री सुल्तान सिंह जाट एवं समस्त स्टाफ के सदस्य श्री भंवर लाल नायक, श्री राजेन्द्र बलानी, श्री मुकेश कुमार गुरुवा, श्रीमती नेहा शर्मा, श्रीमती सुनीता कुमारी, श्री मोहन लाल गढ़वाल, श्रीमती तजीम खानम, श्रीमती सावित्री मीणा, श्री नरोत्तम जी मीणा, श्री बनवारी लाल बुनकर, श्रीमती मंजू देवी जाट, श्रीमती भंवरी देवी कुमावत व अभिभावक मौजूद रहे।

विद्यालय में बाल दिवस उत्साह के साथ मनाया गया

चित्तौड़गढ़–प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरु, बच्चों के प्रिय चाचा नेहरु के जन्म दिन को बाल दिवस के रूप में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय ठिकरिया में मनाया गया। अध्यापक श्री संजय कुमार जैन ने बताया कि बाल दिवस के तहत विद्यालय में बच्चों ने विभिन्न खाने–पीने की सामग्री व शैक्षिक खेल गतिविधियों की स्टाल लगाई जिसमें बच्चों ने अच्छा उत्साह दिखाया। मेले में पॉलीथिन की थैलियों व प्लास्टिक डिस्पोजल का उपयोग नही किया गया। बाल दिवस के ही तहत साहित्यिक, खेलकूद व सांस्कृतिक प्रतियोगिता का भी आयोजन कर उसमे प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे बालक बालिकाओं को सम्मानित किया गया। प्रधानाध्यापक श्री राजकुमार खटीक ने फीता काटकर मेले का विधिवत उद्घाटन किया तथा बच्चों द्वारा लगाई गई स्टॉल का विधिवत अवलोकन कर बच्चों की प्रतिभा की सराहना की। अध्यापिका श्रीमती चिलगानी जगदीश्वरी, सुश्री पूजा रानी व अध्यापिका प्रियंका बाई ने मेले की व्यवस्था व संचालन कार्य किया। अध्यापक श्री प्यार चंद जी व देवेंद्र कुमावत ने साहित्यिक प्रतियोगिता का नेतृत्व किया। अध्यापक संजय कुमार जैन ने बाल दिवस व बाल मेले के विषय में जानकारी दी। अंत में प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय रहे बच्चों को पारितोषिक दिया गया।

नवनिर्मित विद्यालय भवन में विधिवत शिक्षण प्रारंभ

राजसमंद: मंदिर मण्डल नाथद्वारा 5 करोड़ की लागत से निर्मित विद्यालय श्री गोवर्धन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) बड़ा बाजार, नाथद्वारा भवन में विधिवत शिक्षण कार्य 5 नवम्बर 2022 से प्रारंभ किया गया। गौरतलब है कि पूर्व में दिनांक 10 अक्टूबर 2022 को विद्यालय भवन का लोकार्पण तिलकायत महाराज श्री विशाल बाबा, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी, शिक्षा मंत्री श्री बी.डी. कल्ला, सहकारिता मंत्री श्री उदयलाल आंजना तथा कृषि मंत्री श्री लालचंद कटारिया की उपस्थिति में संपन्न हुआ। तीन मंजिला भवन मय फर्नीचर में अध्यापन कार्य प्रारंभ होने से अभिभावकों, विद्यार्थियों तथा सभी स्टाफ सदस्यों ने तिलकायत महाराज श्री तथा मु.नि.अ. मंदिर मण्डल नाथद्वारा श्री जितेन्द्र कुमार ओझा का आभार व्यक्त किया।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

ज्ञान संकल्प पोर्टल

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हरदयालपुरा, पिपराली, सीकर

❒ डॉ. अनिता आर्य

सीकर जिले के पिपराली ब्लॉक का राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, हरदयालपुरा का नवीन भवन शिक्षा जगत में ही नहीं अपितु सामाजिक परिवेश में भी अपनी अलग पहचान रखता है क्योंकि फर्श से शिखर तक पहुँचाने का यह गुरुत्तर कार्य भामाशाहों द्वारा किया गया और विद्यालय के इस दो मंजिला नवीन भवन के कलेवर को मूर्त रूप देने में भामाशाहों का सराहनीय योगदान रहा है। 1930 से संचालित यह विद्यालय एक छोटे से पुराने भवन में चल रहा था, उच्च माध्यमिक होने के बाद विद्यालय परिवार भौतिक संसाधनों के अभाव में स्टाफ और विद्यार्थी कई तरह की परेशानियों का सामना कर रहे थे, अत: तत्कालीन विद्यालय प्रधानाचार्य श्री बिरजू सिंह बाटड़ ने पूरी लगन और निष्ठा के साथ स्टाफ के साथ मिलकर ग्रामवासियों एवं भामाशाहों से सम्पर्क किया।

बस एक आह्वान की ही आवश्यकता थी और कारवां जुड़ता गया। हरदयालपुरा गाँव के हर घर से दानवीर आगे आए और ज्ञान संकल्प पोर्टल व गाँव के लगभग 120 घरों से आर्थिक सहायता दी गयी। गाँव के गणमान्य नागरिकों के सहयोग से, जज्बे से दो मंजिला विद्यालय भवन की नींव 25 अगस्त 2018 को स्थानीय विधायक श्री राजेन्द्र जी पारीक के कर-कमलों से रखी गई। इस भव्य कार्यक्रम में गाँव के हर नागरिक बूढ़े, बच्चे, जवान और स्त्री सभी ने भाग लिया।

1. भामाशाहों ने बदली तस्वीर- विद्यालय के संस्थाप्रधान व स्टाफ के अनवरत भामाशाहों से सम्पर्क के कारण मात्र 8 कमरों में संचालित विद्यालय 2020 में 16 कमरें मय बरामदें के साथ दो मंजिला इमारत के रूप में भव्य रूप ले चुका है जो कि एक सुविधा सम्पन्न निजी विद्यालय से भी अलग एवं विशिष्ट छवि रखता है। गाँव के प्रति समर्पित एवं जागरूक नागरिक माननीय स्व. श्री सोहन जी बीरख एवं श्री सूरजन जी मंगावा, श्री अर्जुन जी ढाका ने पूरे जोश और नि:स्वार्थ भाव से प्रधानाचार्य के साथ

मिलकर इस शिक्षा के मन्दिर को बनाने के लिए ग्रामवासियों से सम्पर्क किया। परिणाम ये हुआ कि ज्ञान संकल्प पोर्टल और जनसहयोग से रुपये एकत्र कर मुख्यमंत्री जनसहभागिता से यह स्तुत्य कार्य आरम्भ करवाया।

2. विभिन्न भौतिक सुविधाओं से सम्पन्न परिवेश:- भामाशाह परिवार द्वारा बनवाए गए इस भवन में हर तरह की सुख-सुविधा एवं संसाधन है जो कि एक आदर्श विद्यालय में होने चाहिए। प्रथम मंजिल पर 8 कमरे बने हुए हैं जिसमें एक स्टाफ रूम शेष 7 कक्षा-कक्ष के रूप में अवस्थित है। हर कक्ष में लाइट, पंखे, ग्रीन बोर्ड, मानचित्र, दीवार घड़ी, टेबल-कुर्सी आदि सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। प्रथम तल पर भी 8 कमरे हैं जिनमें प्राथमिक कक्षाओं के संचालन के साथ-साथ कार्यालय, कम्प्यूटर लैब, प्रधानाचार्य कक्ष, लहर कक्ष एवं स्टोर कक्ष संचालित है। परिसर में छात्र-छात्राओं के लिए पृथक-पृथक शौचालय, विशाल खेल मैदान, पेयजल हेतु ट्यूबवेल, निर्धारित स्थान पर कचरा पात्र, विद्यालय पोर्च तथा पंचायत द्वारा चारदीवारी का निर्माण करवाकर विद्यालय भवन को ओर भी सुदृढ़ बना दिया गया है।

3. सहशैक्षिक गतिविधियाँ – विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अध्ययन अध्यापन के कार्य के साथ-साथ विद्यालय में सत्र पर्यन्त नियमित रूप से सहशैक्षिक गतिविधियों का आयोजन भी किया जाता है जिसमें खेलकूद प्रतियोगिता, नृत्य, गायन, निबन्ध, पोस्टर, मॉडल, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आदि का भी आयोजन किया जाता है। पीईईओ. स्तर पर होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में भी छात्र-छात्राओं द्वारा भाग लिया जाता है जिससे विद्यार्थियों की प्रतिभा में निखार आता है एवं उनमें आत्मबल को भी बढ़ावा मिलता है। हमारे विद्यालय की छात्र संसद द्वारा समय-समय पर विज्ञान, लोक क्षेत्र एवं लोक कला से जुड़े कार्यक्रम किए जाते हैं जो स्टाफ एवं विद्यार्थियों का सराहनीय कदम है।

4. पर्यावरण संरक्षण :- हरियाली किसी भी परिसर की सुंदरता में चार चाँद लगाने का काम करती है तो इस दृष्टि से भी यह विद्यालय पर्यावरण संरक्षण का अनूठा उदाहरण है। भामाशाहों की प्रेरणा से वन विभाग के सहयोग से नवीन परिसर में लगभग 300 पौधें लगाए गए जिनमें आयुर्वेदिक औषधीय, फलदार एवं फुलवारी आदि कई किस्म लगाई गई हैं। बड़ी संख्या में पौधों की वजह से यह विद्यालय किसी हरित वाटिका से कम नहीं है। हर विद्यार्थी द्वारा एक-एक पौधा गोद लेकर उसकी सार संभाल की जाती है। विद्यालय भवन के सामने

Rajasthan Education Department

लगी दूब हरे कालीन के रूप में विद्यालय की सुन्दरता को ओर तृप्त कर रही है। पेड़ पौधों से युक्त हरियालीमय वातावरण परिवेश में एक तरह का आनन्द भरता है जिससे विद्यार्थी भी सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण रहते हैं।

5. खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन :– स्वस्थ शरीर स्वस्थ मस्तिष्क को जन्म देता है इस उक्ति को आत्मसात करते हुए विद्यालय में समय-समय पर खेल-कूद गतिविधियों का आयोजन संकाय सदस्यों द्वारा करवाया जाता है। विद्यालय की टीम जिला स्तर एवं ब्लॉक स्तर पर भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करती रही है। सत्र 2022-23 में ग्रामीण ओलम्पिक में भी कबड्डी एवं खो-खो में छात्र-छात्राओं का शानदार प्रदर्शन रहा है। समय-समय पर विभिन्न खेलों के जानकार कोच द्वारा मैदान पर विद्यार्थियों को खेल के नियमों की जानकारी भी दी जाती है।

6. संक्षिप्त भामाशाह परिचय :– जैसा की पूर्व में बताया जा चुका है कि इस यज्ञ में हर घर से आहुति दी गई और हर व्यक्ति ने सामर्थ्य अनुसार अपना योगदान दिया। भामाशाह कोई छोटा-बड़ा नहीं होता उसका भाव सबके लिए अनुकरणीय रहता है। इसी कड़ी में गाँव के वयोवृद्ध श्री बालूराम गोरा एवं श्री सूरजन जी मंगावा द्वारा व्यक्तिगत रूप से एक-एक कमरा मय बरामदा बनवाया गया। साथ ही इस विद्या मन्दिर में एक कमरे की कमी महसूस की गई और संकाय सदस्यों से आह्वान किया गया तो सहर्ष उन्होंने सहमति जताई और तीसरा कमरा मय बरामदा संकाय सदस्यों के सहयोग से तैयार हुआ। इस प्रकार सभी के सहयोग से एक विशाल विद्यालय भवन तैयार हुआ और शिक्षा जगत के मानचित्र में ये निश्चय ही अपनी अमिट छाप रखता है।

7. संस्थाप्रधान की कलम से – जब मैंने (डॉ. अनिता आर्य) इस संस्था में 18 अगस्त, 2021 को कार्यग्रहण किया तब तक विद्यालय पुराने भवन में ही संचालित हो रहा था। दो वर्ष से कोरोना महामारी के कारण विकास के कार्य धीमे पड़ रहे थे। विद्यार्थी घर से ही ऑनलाइन अध्ययन कर रहे थे, किन्तु नवीन सत्र आरम्भ हो चुका था और विद्यार्थियों को विद्यालय में आने के आदेश के बाद मैंने सर्वप्रथम सितम्बर 2021 के प्रथम सप्ताह में नवीन भवन में विद्यालय संचालित किया एवं संस्था की तत्कालीन परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं को महसूस करते हुए व्यापक योजना के साथ विद्यालय भवन में अत्याधुनिक सुख-सुविधाओं को जुटाने हेतु भामाशाहों से सम्पर्क कर विद्यालय के भौतिक स्वरूप को ओर सुदृढ़ बनाने का अनवरत प्रयास जारी रखा। भामाशाहों के सहयोग से 2021-22 में मुख्यमंत्री जनसहभागिता द्वारा प्राथमिक कक्षाओं हेतु फर्नीचर एवं विद्यालय भवन चार-दीवारी की रैलिंग का कार्य आरम्भ हो चुका है। आगे भी इस भवन को ओर विकसित, सुदृढ़ और नवीनीकरण से युक्त करने के लिए मैं मेरी टीम के साथ भरसक प्रयास करती रहूँगी। क्योंकि ये कर्मस्थली है जो कार्मिकों को व्यापक प्रयास, योजना और सकारात्मक सोच के कारण ही समाज के सामने एक उदाहरण बन पाएगी।

मेरे विद्यालय को विशिष्ट एवं अनुपम रूप देने के लिए मैं पुनः भामाशाह परिवारों, ग्रामवासियों, स्टाफ एवं विद्यार्थियों को साधुवाद देती हूँ कि उन सबके प्रयास से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हरदयालपुरा अपने आप में एक अनुठा विद्यालय है एवं पूरे प्रान्त में एक अद्भुत उदाहरण के रूप में उभरा है।

''जिन्दगी की जुस्तजू में जिन्दगी बन जा
ढूँढ़ मत रोशनी खुद रोशनी बन जा।।''

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हरदयालपुरा,
सीकर (राज.)

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से
राजकीय विद्यालयों को माह-अक्टूबर 2022 में 50 हजार एवं अधिक का सहयोग करने वाले भामाशाह

S. No.	Donar Name	School Name	Block Name	District	Amount
1	RADHA DEVI DEVKINANDAN FATEHPURIA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RAJGARH (215272)	RAJGARH	CHURU	500001
2	PARAMA RAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GAJUSAR (215309)	SARDARSHAHAR	CHURU	300000
3	PRIYANKA PARTANI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KANUTA (215496)	SUJANGARH	CHURU	180000
4	PROZEAL INFRA ENGINEERING PRIVATE LIMITED	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SHRINATH PURAM C (466997)	KOTA	KOTA	111000
5	SULTAN SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KUSUMDESAR (215570)	RATANGARH	CHURU	110000
6	RAJBALA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RAJGARH (215272)	RAJGARH	CHURU	101000
7	SHREE GOPAL KANAKANI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BALDU (213454)	LADNUN	NAGAUR	101000
8	PRITI PARTANI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KANUTA (215496)	SUJANGARH	CHURU	100000

Rajasthan Education Department

9	KAUSHALYA GULERIA	SHREE GANESHIRAM JHANWAR GOVT. GIRLS SENIOR SECONDARY SCHOOL WARD NO. 23 NAYA BASS SUJANGARH (215527)	SUJANGARH	CHURU	80000
10	JAI SINGH CHAHAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL PHOGARI (219808)	MOLASAR	NAGAUR	51000
11	GAYATRI CHAUDHRI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KUSUMDESAR (215570)	RATANGARH	CHURU	50000

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह–अक्टूबर 2022 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	CHURU	73	2020461
2	NAGAUR	19	199950
3	KOTA	28	155622
4	SIKAR	43	143632
5	UDAIPUR	15	140512
6	CHITTAURGARH	22	128800
7	BANSWARA	36	92100
8	JHUNJHUNU	4	80100
9	GANGANAGAR	11	49710
10	DAUSA	3	44900
11	BHILWARA	23	43812
12	HANUMANGARH	349	42115
13	BUNDI	73	37454
14	PALI	10	27251
15	ALWAR	15	27210
16	AJMER	166	25789
17	JAIPUR	7	25701
18	KARAULI	4	14200
19	SIROHI	3	13050
20	BARAN	2	12000
21	BHARATPUR	11	9310
22	JALOR	87	8154
23	JHALAWAR	15	7300
24	SAWAIMADHOPUR	3	5150
25	BARMER	18	3525
26	JODHPUR	5	2900
27	BIKANER	57	2401
28	PRATAPGARH	3	2201
29	RAJSAMAND	13	1921
30	TONK	5	810
31	JAISALMER	3	300
32	DHAULPUR	3	300
33	DUNGARPUR	2	201
	Total	**1131**	**3368842**

विद्यालय विकास के संबंध में

❒ सैयद इनायत अली,

विद्यालय विकास के लिए संस्थाप्रधान एवं शाला के अन्य कार्मिकों के द्वारा विशेष भूमिका का निर्वहन करने पर ही विद्यालय विकास के पथ की ओर अग्रसर होता है। संस्थाप्रधान के द्वारा विभिन्न सहयोगियों से सहयोग प्राप्त करके विद्यालय विकास कर अपनी सम्मानजनक स्थिति में जा सकता है। इसी क्रम में एक उदाहरण रा.उ.मा.वि. लाठी, जैसलमेर में पदस्थापित प्रधानाचार्य श्री सैयद इनायत अली द्वारा विद्यालय के विकास में चहुँमुखी भूमिका निभाकर विद्यालय में विकास कार्य करवाया गया। संस्थाप्रधान के द्वारा स्टाफ मीटिंग आयोजित करके विद्यालय के आवश्यक कार्य का प्रस्ताव तैयार करके कार्य योजना तैयार की गई। तत्पश्चात ग्राम पंचायत के सरपंच, उपसरपंच एवं ग्रामसेवक को प्रेरित करके विद्यालय परिसर में ग्राम पंचायत द्वारा 10 जाजम, 10 कार्यालय कुर्सियाँ प्राप्त करके विद्यालय विकास की गंगा बहने लगी।

ग्राम पंचायत व ग्रामीण भामाशाहों के सहयोग से Luminious का विद्युत Invertor तथा प्रिंटर प्राप्त किया। पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य कर रहे स्थानीय पत्रकार श्री विक्रम दर्जी को सहयोग के लिए प्रेरित किया। चूँकि बच्चें तीव्र गर्मी से परेशान रहते थे। अतः उनके सहयोग से 5 (पाँच) छत पंखे प्राप्त किए गए।

तत्पश्चात श्री सुरेन्द्रसिंह ग्राम विकास अधिकारी लाठी को प्रेरित करके एक बड़ी लोहे की अलमारी विद्यालय हेतु प्राप्त की गई। 12वीं कक्षा के छात्राओं के द्वारा 4 पानी के केम्पर प्राप्त किए। बच्चों की अधिक संख्या होने तथा ठण्डा पानी प्राप्त हो इसके लिए एक ग्रामीण भामाशाह को प्रेरित कर प्याऊ का निर्माण करवाया जिसमें वाटर कूलर मय आर.ओ. श्री विजय कुमार टावरी द्वारा प्याऊ बनाकर बच्चों को शीतल जल प्राप्त हो सका। इसके बाद ग्राम पंचायत के द्वारा 25 छत पंखें प्राप्त किए और ग्रामीण भामाशाह श्री दाऊद खाँ द्वारा विद्यालय के कार्यालय कक्ष में एयर कूलर प्राप्त किया।

MDM योजना के तहत छात्र–छात्रा भोजन करते समय जमीन पर न बैठे इस हेतु ग्राम पंचायत के द्वारा 750 फीट दरी पट्टी ग्राम पंचायत के द्वारा प्राप्त की गई। बच्चों को प्रार्थना तथा अन्य कार्यक्रम में समूह के रूप में बैठने के लिए ग्राम पंचायत के द्वारा 72×40 का टीन शेड ग्राम पंचायत द्वारा बनवाया गया। इसी प्रकार हरित पाठशाला के तहत पुनः ग्राम पंचायत लाठी के सहयोग से पौधे प्राप्त कर पौधारोपण किया गया। विद्यालय में अन्य अंश भी प्राप्त हुआ। जिसका विकास शुल्क में रसीद काटकर इन्द्राज किया गया। ग्राम पंचायत के द्वारा विद्यालय का मुख्य प्रवेश द्वार बनेगा। कार्यालय परिसर के आगे मैदान में Inter Locking का कार्य पूरा हुआ। अन्य कार्य 15.3.2023 से पहले पूरा हो जाएगा। ऐसी आशा है कि ग्राम पंचायत द्वारा लेब के लिए एसी व सीसीटीवी. कैमरे शीघ्र ही मिलेंगे व विकास की गंगा बहती हुई सागर तक पहुँचाएंगे।

प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
लाठी, जैसलमेर (राज.)

शिविरा पत्रिका (मासिक) : दिसम्बर, 2022 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे–97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर–302 004 फोन : 0141–2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक : सुनीता चावला, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

बाल शिविरा : नवम्बर, 2022

पल्लवी, महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय
मेहरो की ढ़ाणी, कुचामन सिटी (नागौर)

दीपिका, महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय
मेहरो की ढ़ाणी, कुचामन सिटी (नागौर)

डिंपल, श्रीमती राधा राउप्रावि. बीजवाड़िया,
तिवंरी (जोधपुर)

मोनिका नायक,
राबाउमावि. नाकरासर (चूरू)

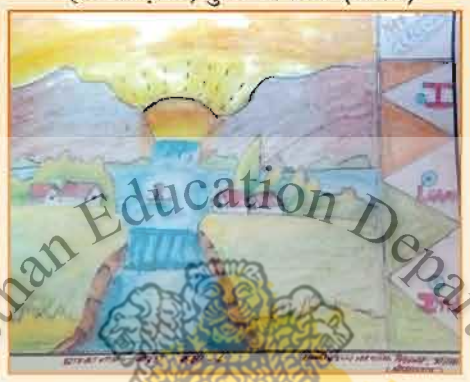

करण,
राउमावि. भागसर (श्रीगंगानगर)

गोविन्द कुमार मेघवाल,
राउमावि. बोरदा (झालावाड़)

आरती कुमारी, रा.उ.मा.वि. बिशनगढ़ (जालोर)

गायत्री कटारिया,
महात्मा गाँधी रा.वि. तिंवरी (जोधपुर)

अमृता,
राउमावि. भागसर (श्रीगंगानगर)

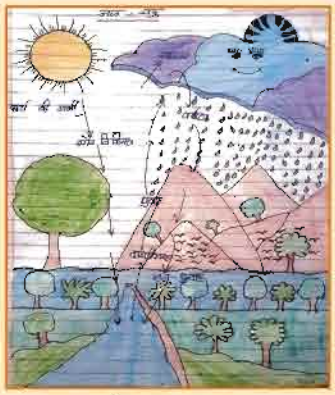

ज्योत्स्ना प्रजापत,
शहीद परवेज काठात राउमावि.
शेखावास (राजसमन्द)

शगुन शर्मा,
शहीद प्रमोद कुमार राउमावि.
हसामपुर (सीकर)

निरमा, राउमावि. बिशनगढ़ (जालोर)

Rajasthan Education Department

चित्र वीथिका : दिसम्बर, 2022

माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला एवं शतरंज संघ की सम्मिलित पहल पर शिक्षा विभाग के तत्वावधान में माह नवम्बर 2022 के तीसरे शनिवार को प्रदेश के राजकीय विद्यालयों में मनाए गए 'चेस डे' की झलकियाँ

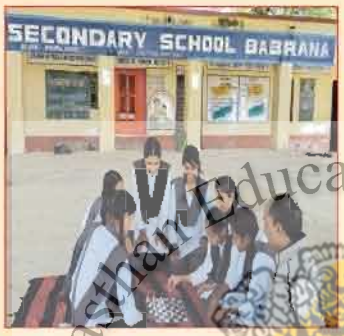

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

66वीं राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता-2022

राज्य स्तरीय सॉफ्ट बॉल प्रतियोगिता 17 व 19 वर्ष छात्र, महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय भींडर (उदयपुर)

राज्य स्तरीय जिमनास्टिक प्रतियोगिता 17 व 19 वर्ष छात्र-छात्रा, राउमावि. रेजीडेंसी, उदयपुर

राज्य स्तरीय रस्सा-कसी प्रतियोगिता 17 व 19 वर्ष छात्र-छात्रा, बाबा छोटू नाथ राउमावि. नोखा (बीकानेर)

राज्य स्तरीय तीरन्दाजी प्रतियोगिता 17 व 19 वर्ष छात्र-छात्रा, राउमावि. प्रतापगढ़

राज्य स्तीय बैडमिंटन, टेबल टेनिस एवं लॉन टेनिस प्रतियोगिता 17 व 19 वर्ष छात्र-छात्रा, झुंझुनूं एकेडमी, विज्डम सिटी, झुंझुनूं

Rajasthan Education Department

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) • दिसम्बर, 2022 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 दिसम्बर, 2022 पृष्ठ 56 • प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

रवीन्द्र रंग मंच बीकानेर में आयोजित राष्ट्रीय स्वयं सेवक राज्य स्तरीय सम्मान समारोह की झलकियां

Rajasthan Education Department

सदी के महानायक अमिताभ बच्चन के साथ KBC कार्यक्रम में बूंदी की अध्यापिका शोभा कंवर